A Daily News Magazine
भोपाल
शनिवार, 07 मार्च, 2026

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित
वर्ष 23, अंक 183, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

क्या ईरान में सत्ता परिवर्तन केवल एक ख्वाब है?

खींवराज जांगिड़

ईरान और यूएस-इज़राइल के बीच लंबे समय से चल रही लड़ाई में मिडिल ईस्ट एक और लड़ाई झेल रहा है। वे 1979 से ही आमने-सामने हैं–शिया क्रांति–लेकिन यह पहली बार है जब यह लड़ाई ईरानी सरकार के दिल पर ही निशाना साधती दिख रही है। यूएस-इज़राइल का मिला-जुला मोर्चा यह इशारा करने से नहीं हिचकिचाया कि सुप्रीम लीडर अयातुल्ला अली खामेनेई भी उनके निशाने से बाहर नहीं हैं। यह एक बहुत बड़ा पॉलिटिकल और स्ट्रेटेजिक रिस्क है, जिसके पूरे इलाके में लंबे समय तक गहरे नतीजे हो सकते हैं। ईरान का न्यूक्लियर प्रोग्राम और उसे कंट्रोल करना दशकों से बहस का मुद्दा रहा है, लेकिन यह पल आर-पार की लड़ाई जैसा लगता है-एक अहम हिसाब-किताब।

क्या यह इज़राइली प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू के ईरान को बेअसर करने के लंबे समय से चले आ रहे जुनून की वजह से है। उन्होंने यूएस प्रेसिडेंट डोनाल्ड ट्रंप को उस 'आखिरी' टकराव की ओर बढ़ने के लिए कैसे मनाया। बड़े अरब देश और तुर्की ईरान की हालत को लेकर ज़्यादातर बेपरवाह क्यों हैं। और क्या तेहरान ने अपनी सोच और गलत अंदाज़े से यह पल खुद पर ला दिया है?

जब 1948 के पहले अरब-इज़राइल युद्ध के दौरान इज़राइल बना था, तो ईरान न तो फ़िलिस्तीनी मकसद में शामिल था और न ही उसने कोई इन्वेस्ट किया था। 1956, 1967 और 1973 में मिस्र, जॉर्डन और सीरिया के इज़राइल से लड़ने के बावजूद तेहरान अलग-थलग रहा।

शांत पार्टनरशिप से गहरी दुश्मनी में यह बड़ा बदलाव इंटरनेशनल रिश्तों की एक मुख्य सच्चाई को दिखाता हैः सोच और सरकार का कैरेक्टर अक्सर भूगोल या ऐतिहासिक निरंतरता से ज़्यादा मायने रखते हैं। पश्चिमी देशों के समर्थक राजा मोहम्मद रज़ा पहलवी के अंदर, जिन्होंने 1953 के यूएस और यूके के सपोर्ट वाले तख्तापलट के बाद सत्ता को मज़बूत किया, ईरान ने तेज़ी से इंडस्ट्रियलाइज़ेशन और शहरी मॉडर्नाइज़ेशन को आगे बढ़ाया। कई यूरोपियन भाषाओं में माहिर, शाह ने खुद को एक मॉडर्न 'साइरस द ग्रेट' के तौर पर सोचा, जो ईरान को एक सेक्युलर और पश्चिमी देशों के साथ जुड़े रास्ते पर ले जा रहा था। उन्हें इज़राइल के साथ एक जैसा मकसद मिला, जो अरब राष्ट्रवाद पर आपसी अविश्वास- खासकर गमाल अब्देल नासिर के पैन-अरबिज़्म - और सोवियत कम्युनिज़्म के डर से एकजुट था। हालांकि फॉर्मल डिप्लोमैटिक रिश्ते नहीं थे, इज़राइल ने कमर्शियल कवर के तहत तेहरान में एक मिशन बनाए रखा, और इंटेलिजेंस सहयोग फला-फूला।

ईरान 1960 और 1970 के दशक में इज़राइल का मुख्य तेल सप्लायर बन गया। ईरान ने ऑपरेशन एज़्रा और नहेमायाह (1951-52) के दौरान 1,20,000 से ज़्यादा इराकी यहूदियों को एयरलिफ्ट करके इज़राइल पहुंचाया और बाद में 1977 में मिसाइल डेवलपमेंट इनिशिएटिव, प्रोजेक्ट फ्लावर पर चुपके से सहयोग किया।

दोनों देशों के रिश्ते इंटेलिजेंस, एनर्जी, व्यापार और टेक्नोलॉजी तक फैले हुए थे, जिन्हें दोनों राजधानियों में प्रैक्टिकल लीडरशिप का सपोर्ट मिला। लेकिन, 1979 की क्रांति के बाद, ईरान ने पाइपलाइन एसेट्स को लेकर इज़राइल पर केस किया, और 2015 में 1.1 बिलियन डॉलर का आर्बिट्रेशन अवॉर्ड जीता, जो अभी तक चुकाया नहीं गया है–यह एक ऐसे रिश्ते का प्रतीक है जो सहयोग से मुकदमेबाजी और दुश्मनी में बदल गया।

1979 की इस्लामिक क्रांति के साथ सब कुछ बदल गया। ईरान के पूर्व सुप्रीम लीडर अयातुल्ला रूहोल्लाह खुमैनी और शिया मौलवियों ने शाह के खिलाफ एक बड़े पैमाने पर विद्रोह पर कब्ज़ा कर लिया और उसमें एक कट्टरपंथी धार्मिक विचारधारा भर दी। यूए। को 'बड़ा शैतान' और इज़राइल को 'छोटा शैतान' कहा गया, और विदेश नीति को सभ्यता के संघर्ष के रूप में बदल दिया गया।

नाराजगी की जड़ें गहरी थींः 1953 का तख्तापलट जिसमें मोहम्मद मोसद्देग को हटा दिया गया था - जिन्होंने एंग्लो-ईरानी तेल कंपनी का राष्ट्रीयकरण किया था - ने ईरानी राजनीतिक याददाश्त पर एक हमेशा रहने वाला निशान छोड़ दिया। अमेरिका-विरोधी, यहूदी-विरोधी और कभी-कभी, यहूदी-विरोधी बयानबाजी राज्य की विचारधारा के आधार बन गए। ईरान ने प्रॉक्सी ताकतों के ज़रिए अपनी क्षेत्रीय विरोध रणनीति को संस्थागत बना दिया। 1982 में इज़राइल के लेबनान पर हमला करने के बाद रिवोल्यूशनरी गार्ड्स द्वारा बनाया गया हिज़्बुल्लाह, तेहरान का सबसे ताकतवर गैर-सरकारी सहयोगी बन गया। कुद्स दिवस की शुरुआत इज़राइल को खत्म करने के लिए सरकार को सांकेतिक रूप से कमिट करने के लिए की गई थी।

2017 में, तेहरान ने एक 'डूम्सडे क्लॉक' पेश किया, जिसमें 2040 तक इज़राइल के कथित तौर पर गायब होने की उलटी गिनती थी, जो अयातुल्ला खामेनेई की बातों से मिलती-जुलती थी। बयानबाजी, प्रतीकवाद और प्रॉक्सी युद्ध एक सुसंगत सिद्धांत में मिल गएः इज़राइल का विनाश सिर्फ़ पॉलिसी नहीं था - यह सिद्धांत था।

लेकिन, आज ईरान घिरा हुआ है। चीन और रूस बयानबाजी का समर्थन करते हैं लेकिन कोई सैन्य ढाल नहीं। पिछले दो सालों में तेहरान के कई क्षेत्रीय प्रॉक्सी कमज़ोर हो गए हैं, और हिज़्बुल्लाह की क्षमता बहुत कम हो गई है। जवाब में, तेहरान थिएटर को और बड़ा करने को तैयार दिखता है - खाड़ी के उन राजघरानों पर दबाव डाल रहा है जो अमेरिकी सेना की मेज़बानी करते हैं या जिनके इज़राइल के साथ संबंध सामान्य हो गए हैं। इसका संदेश साफ़ हैः अगर ईरान को नुकसान होता है, तो पूरे इलाके को दर्द महसूस करना चाहिए।

फिर भी सबसे बड़ा असर गाज़ा, लेबनान या खाड़ी का नहीं - बल्कि खुद ईरान पर हो सकता है। सरकार बाहरी मिलिट्री दबाव और अंदरूनी लेजिटिमेसी के संकट का सामना कर रही है। सालों से चले आ रहे आर्थिक बैन, युवाओं में गुस्सा, महिलाओं के विरोध प्रदर्शन और पीढ़ियों से चली आ रही निराशा ने क्रांतिकारी कहानी को खोखला कर दिया है।

एक कमज़ोर सरकार और सख्ती कर सकती है, असहमति को दबाने के लिए राष्ट्रवाद का सहारा ले सकती है। 1979 की क्रांति रातों-रात खत्म नहीं होगी।

सरकार बदलना एक सपना है, और मुझे नहीं लगता कि ट्रंप या नेतन्याहू ऐसे किसी प्लान के साथ हैं। उन्होंने सुप्रीम लीडर की हत्या करके अभी-अभी नींव हिला दी है। लेकिन यह टकराव यूएस-इज़राइल-ईरान टकराव में एक और चैप्टर से कहीं ज़्यादा है। यह इस्लामिक रिपब्लिक की सोच और राज करने की क्षमता का स्ट्रेस टेस्ट है। अगर तेहरान लापरवाही से आगे बढ़ता है, तो उसे इलाके में आग लगने और देश में फूट पड़ने का खतरा है। उसे खुद को फिर से ठीक करना होगा और अपनी कम होती इमेज के साथ आगे बढ़ना होगा। ईरान एक चौराहे पर है, और कोई नहीं जानता कि इस लड़ाई के बाद क्या होगा।

(दि प्रिंट हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

शरद की सुबह

सब जिनके लिए
झोलियां फैलाए हुए हैं
वो रंग मेरी आंख के
ठुकराए हुए हैं
इक तुम हो कि शोहरत
की हवस ही नहीं जाती
इक हम हैं कि हर शोर
से उकताए हुए हैं
दो चार सवालात में
खुलने के नहीं हम
ये उक़दे तेरे हाथ के
उलझाए हुए हैं
अब किसके लिए
लाए हो ये चांद सितारे
हम ख़्वाब की दुनिया
से निकल आए हुए हैं
हर बात को बेवजह
उदासी पे ना डालो
हम फूल किसी वजह
से कुम्हलाए हुए हैं
कुछ भी तेरी दुनिया में
नया ही नहीं लगता
लगता है कि पहले भी
यहां आए हुए हैं
है देखने वालों के
लिए और ही दुनिया
जो देख नहीं सकते
वो घबराए हुए हैं
सब दिल से यहां
तेरे तरफ़दार नहीं हैं
कुछ सिर्फ़ मिरे
बुग़्ज़ में भी आए हुए हैं

– फ़रीहा नक़वी

इजराइल अमरीका और ईरान में

भीषण हुआ युद्ध

- अमेरिका-इजराइल हमले में ईरान के 3000 घर तबाह, भारी नुकसान

300 मिसाइल लॉन्चर खत्म, 1300 की मौत, बिजली-पानी सप्लाई ठप

तेल अवीव/तेहरान (एजेंसी)। अमेरिका-इजराइल और ईरान जंग का शुक्रवार को सातवां दिन था। ईरान की रेड क्रिसेंट सोसाइटी के मुताबिक, अमेरिका और इजराइल के हमलों से देशभर में 3000 से ज्यादा घरों और करीब 500 दुकानों को नुकसान पहुंचा है। इन हमलों का सबसे ज्यादा असर राजधानी तेहरान में हुआ है। संस्था के मुताबिक 14 अस्पताल और मेडिसिन सेंटर्स भी हमलों में क्षतिग्रस्त हुए हैं। संस्था ने यह भी बताया कि उसके 5 राहतकर्मी इन हमलों में घायल हुए हैं। इस जंग में अब तक ईरान के 1300 से ज्यादा लोग मारे गए हैं। इजराइली मीडिया के मुताबिक, इजराइली हमले में करीब 300 ईरानी मिसाइल लॉन्चर्स तबाह हो गए हैं। युद्ध की वजह से देश के ज्यादा हिस्सों में बिजली और पानी सप्लाई ठप हो गई है।

ईरान के हमले में यूएई-जॉर्डन को भारी नुकसान

मिडिल ईस्ट में टेंशन लगातार बढ़ता जा रहा है। ईरान के हमले से संयुक्त अरब अमीरात और जॉर्डन को भारी नुकसान हुआ है। ईरान ने इन देशों के रडार सिस्टम को तबाह कर दिया है, जो कि अमेरिका के बनाए हुए थे। अरब पेनिनसुला के मिलिट्री बेस से मिली नई सैटेलाइट इमेज से पता चलता है कि ईरान, मिसाइलों और ड्रोन का पता लगाने वाले यूएस–मेड रडार को खत्म करके एयर डिफेंस को कमजोर कर रहा है। सोमवार को ली गई एक सैटेलाइट इमेज से पता चलता है कि ईरान ने यूएस–इजरायली हमलों के शुरुआती दिनों में जॉर्डन में एक अमेरिकन मिसाइल बैटरी के रडार सिस्टम पर हमला किया और उसे तबाह कर दिया।

सीएनएन की रिपोर्ट के मुताबिक, यूनाइटेड अरब अमीरात में दो जगहों पर ऐसे ही रडार सिस्टम वाली बिल्डिंग्स पर भी हमला हुआ, लेकिन अभी तक यह साफ नहीं है कि इक्विपमेंट डैमेज हुआ या नहीं। रडार हाई–एंड मिसाइल इंटरसेप्टर सिस्टम के लिए एक जरूरी एलीमेंट है, जिसका इस्तेमाल बैलिस्टिक मिसाइलों को उनके टारगेट की ओर उड़ते समय एंगेज करने और खत्म करने के लिए किया जाता है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने भारतीय किसान संघ के प्रतिनिधियों के साथ की बैठक

किसानों की समृद्धि के लिए समर्पित भाव से कार्य कर रही है सरकार

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि राज्य सरकार कृषि कल्याण वर्ष 2026 में किसानों की समृद्धि के लिए समर्पित भाव से कार्य कर रही है। किसानों की फसलों का उचित दाम मिले, इसके लिए उड़द खरीदी पर 600 रुपए प्रति क्विंटल बोनस की घोषणा की गई है। प्रदेश के किसान उड़द लगाएं, ताकि उन्हें इस बोनस का भरपूर लाभ मिल सके और अगली फसल की तैयारी भी हो जाए। राज्य सरकार ने गेहूं उत्पादक किसानों को भी गत वर्षों के तरह बोनस की सौगात दी है। इस वर्ष 2026-27 के लिए गेहूं के न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) पर 40 रुपए प्रति क्विंटल बोनस दिया जाएगा। इससे किसानों को 2625 रुपए प्रति क्विंटल गेहूं का भुगतान प्राप्त होगा। राज्य सरकार ने किसानों के हित में अपने संकल्प-पत्र में वर्ष 2028 तक 2700 रुपए प्रति क्विंटल गेहूं खरीदने का संकल्प लिया है। आगामी वर्षों में हम इस लक्ष्य को पूरा कर उससे भी आगे निकलेंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बिजली संबंधी शिकायतों का निराकरण स्थानीय स्तर पर करने की व्यवस्था स्थापित करने के निर्देश दिए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने यह विचार शुक्रवार को भारतीय किसान संघ के प्रतिनिधियों के साथ समत्व भवन (मुख्यमंत्री निवास) में आयोजित बैठक में व्यक्त किए। बैठक में अपर मुख्य सचिव डॉ. राजेश राजौरा, नीरज मंडलोई सहित कृषि, राजस्व, सहकारिता, जल संसाधन, उद्यानिकी तथा अन्य विभागों के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि मध्यप्रदेश, देश का फूड बास्केट है, जहां दलहन, तिलहन और सब्जी उत्पादन अच्छी मात्रा में हो रहा है। हमारे राज्य के किसान आगे बढ़ें और समृद्ध हों, इसके लिए सरकार निरंतर किसान हितैषी निर्णय ले रही है। कुछ स्थानों पर गेहूं खरीदी के लिए पंजीयन में कठिनाई सामने आई है। इसे ध्यान में रखकर गेहूँ उपार्जन पंजीयन की अंतिम तिथि 7 मार्च से बढ़ाकर 10 मार्च की जा रही है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि किसानों को सिंचाई के लिए दिन में बिजली उपलब्ध कराई जाएगी, इससे रात के समय बिजली से सिंचाई के कारण होने वाले संकटों से बचा जा सकेगा। उन्होंने कहा कि भारतीय किसान संघ की ओर से किसानों के हित में प्राप्त सुझावों पर भी राज्य सरकार विचार करेगी।

प्रदेश में बन रहा है इलेक्ट्रिक व्हीकल मैन्युफैक्चरिंग के लिए सशक्त ईको सिस्टम : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि मध्यप्रदेश इलेक्ट्रिक व्हीकल (ईवी) मैन्युफेक्चरिंग के क्षेत्र में तेजी से उभरते केंद्र के रूप में अपनी पहचान बना रहा है। प्रदेश में इलेक्ट्रिक मोबिलिटी को प्रोत्साहित करने के लिए मजबूत औद्योगिक आधार, उन्नत परीक्षण अधोसंरचना, ऊर्जा उपलब्धता और निवेश अनुकूल नीतियों के माध्यम से एक सशक्त ईको सिस्टम विकसित किया जा रहा है। इलेक्ट्रिक व्हीकल पॉलिसी 2025 और इंडस्ट्रियल प्रमोशन पॉलिसी-2025 के माध्यम से ईवी और उससे जुड़े कम्पोनेंट मैन्युफैक्चरिंग को व्यापक प्रोत्साहन दिया जा रहा है, जिससे प्रदेश में उत्पादन, निवेश और रोजगार के नए अवसर तेजी से बढ़ रहे हैं।

रायसीना डायलॉग 2026

आखिरी गोली तक लड़ेंगे : उप-विदेश मंत्री

- ट्रम्प न्यूयॉर्क का मेयर नियुक्त नहीं कर सकते, हमारा लीडर क्या खाक तय करेंगे

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली में चल रहे रायसीना डायलॉग 2026 में शुक्रवार को ईरान के उप विदेश मंत्री सईद खतीबजादेह भी शामिल हुए। उन्होंने कहा- तेहरान के पास अमेरिकी-इजराइली हमले के खिलाफ देश की रक्षा के लिए बहादुरी से लड़ने के अलावा दूसरा कोई विकल्प नहीं है। हमने कसम खाई है कि देश आखिरी गोली और आखिरी सैनिक तक विरोध करेगा। उन्होंने कहा- अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रम्प ईरान में नेतृत्व बदलने की बात करते हैं, जबकि वे अपने ही देश में न्यूयॉर्क के मेयर तक नियुक्त नहीं कर सकते।

- **कुर्द ईरान की पहचान का अहम हिस्सा–** अमेरिका के संभावित जमीनी हमले के सवाल पर उन्होंने कहा कि ईरान किसी भी औपनिवेशिक मिशन को रोकने के लिए तैयार है। अपने देश की राजनीतिक व्यवस्था बदलने की किसी भी कोशिश का विरोध करेगा। उन्होंने कहा कि ईरान के कुर्द समुदाय को अलगाववाद से जोड़कर नहीं देखा जाना चाहिए। ईरान के कुर्द देश की पहचान का अहम हिस्सा हैं, जबकि कुछ अलगाववादी समूहों को बाहरी एजेंसियों का समर्थन मिला है।

चीन और पाकिस्तान के बाद अब बंगाल की खाड़ी में बना नया मोर्चा

भारत के लिए समुद्र में 'ट्रिपल' खतरा, तीन ओर घेर रहा है ड्रैगन

नई दिल्ली/बीजिंग (एजेंसी)। ताइवान पर हमला करने से पहले क्या चीन भारत को कई मोर्चों पर उलझाना चाहता है। ऐसा इसलिए क्योंकि चीन जानता है कि ताइवान पर हमले के वक्त उसके लिए सबसे बड़ा खतरा भारत से होगा। चीन जानता है कि उसके लिए सबसे ज्यादा खतरा पैदा करने की क्षमता अमेरिका की नहीं बल्कि भारत की है। इसलिए वो भारत को हिमालय से लेकर नीचे समंदर तक उलझाना चाहता है। हिमालय में चीन ऐसा पाकिस्तान के साथ कर रहा है जबकि समंदर में वो बांग्लादेश और मालदीव जैसे देशों के साथ कर रहा है। बांग्लादेश ने पाकिस्तान के संबंध फिर से बनाने शुरू कर दिए हैं और चीन इसमें एक भूमिका निभा रहा है। इससे भारत के लिए सिर्फ चीन और पाकिस्तान के मोर्चे पर नहीं, बल्कि तीसरे बांग्लादेश के मोर्चे पर भी उलझने की खतरा बढ़ गया है। ऐसे में सिर्फ हिंद महासागर नहीं बल्कि बंगाल भी खाड़ी भारत के लिए काफी ज्यादा अहम हो गया है।

भारत में रसोई गैस का संकट, इमरजेंसी लागू

- ईरान-इजराइल जंग बढ़ी तो किल्लत होगी, 40 फीसदी सप्लाई रुकी
- सरकार ने सभी तेल कंपनियों को प्रोडक्शन बढ़ाने का आदेश दिया

नई दिल्ली (एजेंसी)। ईरान-इजराइल जंग अगर बढ़ी तो भारत में रसोई गैस की किल्लत भी बढ़ेगी। इस स्थिति को देखते हुए सरकार ने इमरजेंसी पावर का यूज करते हुए देश की सभी ऑयल रिफाइनरी कंपनियों को एलपीजी का उत्पादन बढ़ाने का आदेश दिया है। रॉयटर्स की रिपोर्ट के अनुसार, मिडिल ईस्ट में बढ़ते तनाव और सप्लाई चेन में रुकावट की वजह से गैस की सप्लाई प्रभावित हो सकती है। इसी खतरे को देखते हुए सरकार ने गुरुवार देर रात आदेश जारी किया। इस आदेश में कहा गया है कि अब रिफाइनरी कंपनियां अपने पास मौजूद प्रोपेन और ब्यूटेन का इस्तेमाल सिर्फ रसोई गैस बनाने के लिए करेंगी। यानी इन गैसों का उपयोग किसी और काम में नहीं किया जाएगा। आदेश के मुताबिक, सभी कंपनियों को प्रोपेन और ब्यूटेन

की सप्लाई सरकारी तेल कंपनियों- इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन, हिंदुस्तान पेट्रोलियम और भारत पेट्रोलियम को करनी होगी। इसका मकसद यह सुनिश्चित करना है कि देश के लगभग 33.2 करोड़ एक्टिव एलपीजी कंज्यूमर्स यानी उपभोक्ताओं को बिना किसी रुकावट के गैस सिलेंडर मिलते रहें। सरकार के इस फैसले का सीधा असर प्राइवेट सेक्टर की कंपनियों खासकर रिलायंस इंडस्ट्रीज पर पड़ सकता है। प्रोपेन और ब्यूटेन का डायवर्जन होने से अल्काइलेट्स के प्रोडक्शन में कमी आएगी, जिसका इस्तेमाल पेट्रोल की ग्रेडिंग सुधारने में किया जाता है। पिछले साल रिलायंस ने हर महीने एवरेज चार अल्काइलेट्स कार्गो एक्सपोर्ट किए थे। इसके अलावा सरकार ने रिफाइनर्स को यह भी साफ कर दिया है कि वे फिलहाल पेट्रोकेमिकल प्रोडक्शन के लिए इन गैसों का इस्तेमाल न करें। कंपनियों के मार्जिन पर असर पड़ेगा।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 20 °c

न्यूनतम 18°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ शनिवार, 07 मार्च 2026

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

यूपीएससी 2025 का फाइनल रिजल्ट जारी

● राजस्थान के अनुज अग्निहोत्री टॉपर, 958 कैंडीडेट्स क्वालिफाई

नई दिल्ली (एजेंसी)। यूपीएससी ने सिविल सर्विस एग्जाम 2025 का फाइनल रिजल्ट जारी कर दिया है। राजस्थान के कोटा के अनुज अग्निहोत्री ने ऑल इंडिया टॉप किया है। 958 कैंडीडेट्स अलग-अलग सर्विसेज के लिए क्वालिफाई हुए हैं। जारी रिजल्ट में कुल 180 कैंडीडेट्स आईएएस के लिए चयनित हुए हैं। यूपीएससी सिविल सर्विस 2026 प्रीलिम्स परीक्षा 25 मई 2025 को आयोजित की गई थी। इसके बाद मेन्स एग्जाम 22 अगस्त से 31 अगस्त 2025 तक आयोजित किया गया। चयनित उम्मीदवारों के लिए पर्सनैलिटी टेस्ट या इंटरव्यू, 27 फरवरी 2026 को खत्म हुए थे। भारत सरकार ने कैडर अलॉटमेंट के लिए 2017 से चली आ रही जोन सिस्टम की व्यवस्था को खत्म कर दिया है। इसकी जगह नई कैडर एलोकेशन पॉलिसी 2026 लागू कर दी गई है। अब साइकिल सिस्टम के जरिए कैडर का बंटवारा होगा।

मतांतरण से पहले देना होगा 60 दिन का नोटिस

कैबिनेट ने दी मंजूरी, मतांतरण से पहले सक्षम प्राधिकारी से अनुमति जरूरी

नई दिल्ली (एजेंसी)। महाराष्ट्र कैबिनेट ने गुरुवार को मतांतरण पर रोक लगाने वाले विधेयक महाराष्ट्र धर्म स्वतंत्रता अधिनियम, 2026 के मसौदे को स्वीकृति दे दी। इसमें मतांतरण से पहले किसी सक्षम प्राधिकारी से अनुमति लेना अनिवार्य होगा। साथ ही मतांतरण के इच्छुक व्यक्ति को 60 दिनों का नोटिस देना होगा। महाराष्ट्र के मंत्री नीतेश राणे ने बताया कि इस विधेयक को विधानसभा के वर्तमान बजट सत्र में ही प्रस्तुत किया जाएगा। एक अधिकारी ने बताया कि मतांतरण को 25 दिनों के अंदर सक्षम प्राधिकारी के पास पंजीकृत कराना होगा, नहीं तो इसे रद्द माना जाएगा। विधेयक के मुताबिक, अगर मतांतरण के इच्छुक व्यक्ति का रक्त संबंधी इसके गैरकानूनी होने की शिकायत करता है, तो मानी जाएगी।

तेलंगाना में नई राजनीतिक पार्टी बनाएंगी के कविता

● के चंद्रशेखर राव की बेटी का बड़ा ऐलान, शुरू की तैयारी

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत राष्ट्र समिति की पूर्व सदस्य और के चंद्रशेखर राव की बेटी, के कविता तेलंगाना में एक नई पार्टी बनाने जा रही हैं। के कविता ने यह एलान तब किया, जब दिल्ली की एक कोर्ट ने उन्हें और दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल समेत 23 लोगों को दिल्ली शराब घोटाले के मामले में बरी कर दिया। दिल्ली शराब घोटाले में बरी होने के बाद के कविता तिरुमाला में तिरुपति बालाजी मंदिर गईं। एएनआई से बात करते हुए के कविता ने कहा, मुझे उम्मीद है कि भगवान बालाजी के आशीर्वाद से हम जल्द ही तेलंगाना राज्य में एक पॉलिटिकल पार्टी बनाने जा रहे हैं। के कविता ने आगे कहा, पूरे देश ने देखा है कि कैसे हमारे साथ इस तरह का भेदभाव किया गया है।

बन गई सहमति

रूस से कच्चा तेल खरीद सकेगा भारत

● ईरान जंग के कारण अमेरिका ने 3 अप्रैल तक रियायत दी

फिलहाल संकट टल गया है, पेट्रोल-डीजल महंगा नहीं होगा

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत में पेट्रोल-डीजल के दाम बढ़ने का संकट फिलहाल खत्म हो गया है, क्योंकि भारत को रूस से कच्चा तेल खरीदने की शर्तों के साथ छूट मिल गई है। अमेरिकी ट्रेजरी विभाग ने भारतीय रिफाइनरियों को 30 दिन का स्पेशल लाइसेंस दिया है। ये लाइसेंस 3 अप्रैल तक वैलिड रहेगा। अमेरिकी ट्रेजरी सचिव स्कॉट बेसेंट ने 6 मार्च को बताया कि राष्ट्रपति ट्रम्प के ऊर्जा एजेंडे के तहत यह अस्थायी कदम उठाया गया है। उन्होंने कहा कि भारत अमेरिका का एक महत्वपूर्ण पार्टनर हैं और ग्लोबल मार्केट में तेल की सप्लाई को स्थिर रखने के लिए यह छूट दी गई है। बेसेंट ने कहा कि ईरान ग्लोबल एनर्जी मार्केट को बंधक बनाने की कोशिश कर रहा है। इस दबाव को कम करने के लिए हम भारत को यह 30 दिनों की छूट दे रहे हैं। उन्होंने कहा- हमें ये उम्मीद है कि इसके बाद भारत अमेरिकी तेल की खरीद में तेजी लाएगा। अमेरिका का मानना है इस उपाय से ग्लोबल मार्केट में तेल की कमी नहीं होगी।

● 5 मार्च तक लोड हुए जहाजों का ही तेल खरीद सकेंगे- अमेरिकी ट्रेजरी विभाग के ऑफिस ऑफ फॉरेन एसेट्स कंट्रोल ने तेल खरीद के लिए ये लाइसेंस जारी किया है। इसके तहत 5 मार्च तक जहाजों पर लोड हो चुके रूसी कच्चे तेल की ही डिलीवरी भारत को की जा सकेगी। यानी, जो जहां पहले से समुद्र में है उनसे सप्लाई होगी। मिडिल-ईस्ट में जंग के कारण स्थिति काफी गंभीर हो गई है। ईरान ने स्ट्रेट ऑफ होर्मुज को ब्लॉक कर दिया है, जहां से दुनिया की 20 फीसदी तेल सप्लाई होती है।

बंगाल एसआईआर के खिलाफ धरने पर बैठीं सीएम ममता बनर्जी

कहा-जिन्हे मृत बताया, सामने लाऊंगी

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल में मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) के दौरान जीवित और पात्र लोगों के नामों को भी डिलीट किए जाने के खिलाफ ममता बनर्जी ने मोर्चा खोल दिया है। ममता बनर्जी कोलकाता के बेहद भीड़भाड़ वाले सेंट्रल हिस्से में आने वाले मेट्रो चैनल पर धरने पर बैठी हैं। चुनाव आयोग द्वारा काफी लोगों को मृत घोषित किए जाने को निशान बनाते हुए ममता बनर्जी ने धरने में कहा कि आज 22 वोटरों के परिवार धरने में आ रहे हैं।

ममता बनर्जी कोलकाता में एसआईआर के खिलाफ धरने पर ऐसे वक्त पर बैठी हैं जब राज्य में चुनावों की घोषणा में होने में बस गिनती के दिन बचे हैं। 15 मार्च के आसपास चुनाव कार्यक्रम घोषित होने की उम्मीद की जा रही है। कोलकाता के सेंट्रल हिस्से में ममता बनर्जी नेता विपक्ष के तौर पर अक्सर तब प्रोटेस्ट करती थीं। यह उनका सबसे फेवरेट प्लेस है, यहां पर वह अक्सर अपनी बात रखने के लिए पहुंचती थीं। ममता बनर्जी के इस धरने में पार्टी के काफी नेता मौजूद हैं। उन्होंने एसआईआर के खिलाफ अपने गलों में छोटे-छोटे बैनर लटकाए हैं।

● लंबी है बंगाल की याददाश्त- तृणमूल कांग्रेस चीफ ममता बनर्जी के कोलकाता धरने की तस्वीरों को साझा करते हुए लिखा है कि ममता बनर्जी ने धरना शुरू किया है। टीएमसी ने आरोप लगाया है कि बंगाल के लोगों और उनकी लोकतांत्रिक आवाज छीनने की साजिश की गई है। पार्टी ने आगे लिखा है कि दिल्ली में बैठे मुट्ठी भर सत्ता के नशे में चूर जमींदार शायद यह मानते हों कि वे बंगाल की डेमोक्रेसी को अपनी इच्छाओं के हिसाब से बदल सकते हैं। लेकिन बंगाल की याददाश्त लंबी है और विरोध की परंपरा उससे भी ज्यादा लंबी है। हर कोशिश उस इरादे को और मज़बूत करती है।

16 साल से कम उम्र के बच्चे नहीं चला सकेंगे व्हाट्सएप-इंस्टाग्राम

● कर्नाटक के सीएम सिद्धा ने सोशल मीडिया पर बैन का किया ऐलान

नई दिल्ली (एजेंसी)। कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया ने शुक्रवार को राज्य में मोबाइल इस्तेमाल के बुरे असर पर को कम करने के लिए एक बड़ा ऐलान किया है। मुख्यमंत्री ने 16 साल से कम उम्र के बच्चों के लिए सोशल मीडिया एक्सेस पर बैन लगाने की बात कही है। सीएम सिद्धारमैया ने फाइनेंशियल ईयर 2026-27 के लिए 4.48 लाख करोड़ रुपये का बजट पेश किया। इस बजट में टेक्नोलॉजी से चलने वाली लर्निंग पहलों को रेगुलेटरी उपायों के साथ मिलाकर सुधारों का ऐलान किया गया है, ताकि बच्चों को ऑनलाइन सुरक्षा दी जा सके। सीएम सिद्धारमैया ने विधानसभा में घोषणा की।

पटना में पीएम मोदी की तस्वीर पर पोती कालिख

नीतिश के इस्तीफे की खबरों पर भड़के जदयू कार्यकर्ता

पटना (एजेंसी)। बिहार के मुख्यमंत्री नीतिश कुमार भले ही अपनी इच्छा से राज्यसभा जा रहे हों, मगर कार्यकर्ताओं को यकीन नहीं हो रहा। उनको लगता है कि बीजेपी ने उन्हें राज्यसभा के लिए मजबूर किया। नीतिश कुमार के राज्यसभा जाने और मुख्यमंत्री पद छोड़ने की खबरों ने पटना में भूचाल ला दिया है।

जदयू कार्यालय में लगातार दूसरे दिन कार्यकर्ताओं की भारी भीड़ जमा है, जो अपने नेता को मुख्यमंत्री पद छोड़ने का पुरजोर विरोध कर रहे हैं। गुरुवार को अमित शाह की मौजूदगी में नीतिश कुमार के राज्यसभा के लिए नामांकन दाखिल किया। इसके बाद से ही समर्थकों का गुस्सा सातवें आसमान पर है। पटना जेडीयू ऑफिस में नाराज कार्यकर्ताओं ने पीएम मोदी की फोटो पर कालिख पोत दिया।

हालात को देखते हुए सुरक्षा के कड़े इंतजाम किए गए हैं। पटना के जदयू कार्यालय के बाहर कार्यकर्ताओं का गुस्सा भड़क गया।

दीवार पर बनी एनडीए सरकार की पेंटिंग में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की तस्वीर पर जेडीयू समर्थकों ने कालिख पोत दिया। कार्यकर्ताओं ने खुलेआम नारेबाजी करते हुए कहा कि भाजपा ने नीतिश कुमार को राज्यसभा भेजकर बिहार की जनता के जनादेश का अपमान किया है।

छठी पीढ़ी के फाइटर जेट बनाने की तैयारी में भारत!

बड़ा है प्लान, अभी अमेरिका और चीन के पास भी नहीं

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत छठी पीढ़ी के फाइटर जेट विकसित करने के लिए बहुत बड़ी रणनीतिक योजना पर काम शुरू कर सकता है। इसके तहत यूरोप के फ्यूचर कॉम्बैट एयर सिस्टम प्रोग्राम में शामिल होने की बात है। रिपोर्ट है कि भारत इस कार्यक्रम के तहत फ्रांस और जर्मनी के साथ साझेदारी करने की तैयारी में है। भारत के रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह के स्तर पर हाल ही में छठी पीढ़ी के लड़ाकू विमान पर पहल किए जाने के संकेत मिल चुके हैं। इस दौरान डिफेंस डॉट इन की एक रिपोर्ट के अनुसार रक्षा मंत्रालय ने छठी पीढ़ी के फाइटर जेट बनाने की योजना पर अपनी ओर से पहल शुरू कर दी है। भारतीय वायु सेना को अत्याधुनिक फाइटर जेट की बहुत ज्यादा आवश्यकता है। भारत में पांचवीं पीढ़ी के स्वदेशी स्टील्थ फाइटर जेट एडवांस्ड मीडियम कॉम्बैट एयरक्राफ्ट बनाने पर पहले से ही काम चल रहा है। लेकिन, इसके साथ-साथ छठी पीढ़ी के लड़ाकू विमान बनाने की योजना पर भी चर्चा शुरू की गई है।

इस समय अमेरिका और चीन की ओर से छठी पीढ़ी के लड़ाकू विमान बनाने पर काम चल रहा है। लेकिन, किसी ने भी इसे बना लेने का दावा नहीं किया है। इसी तरह के मिशन पर जर्मनी और फ्रांस भी लगे हैं, लेकिन यूरोप में मौजूदा अस्थिरता की वजह से इसका विकास फंसा हुआ है और यही भारत के लिए अवसर बनकर उभरा है।

छठी पीढ़ी की टेक्नोलॉजी पर भारत की तैयारी

भारत अभी पांचवीं पीढ़ी के स्वदेशी स्टील्थ फाइटर जेट एडवांस्ड मीडियम कॉम्बैट एयरक्राफ्ट के प्रोटोटाइप पर काम कर रहा है। भारत में छठी पीढ़ी के फाइटर जेट बनने की संभावना को लेकर पहली बार डीआरडीओ के एयरोनॉटिकल सिस्टम की डायरेक्टर जनरल के राजलक्ष्मी मेनन ने पिछले साल (सितंबर, 2025) सकारात्मक जानकारी दी थी। राजलक्ष्मी मेनन ने कहा था कि देश छठी पीढ़ी के फाइटर जेट बनाने के महत्वाकांक्षी लक्ष्य हासिल करने को तैयार है। फरवरी, 2025 में रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने डीआरडीओ के वैज्ञानिकों से कहा कि उन्हें छठी पीढ़ी के जेट बनाने पर भी काम शुरू कर देना चाहिए।

फ्रांस-जर्मनी को भारत में दिख रही संभावना

फ्रांस और जर्मनी की योजना के तहत पहले फ्यूचर कॉम्बैट एयर सिस्टम बनाने का टारगेट 2026 की शुरुआत में ही था। लेकिन, दिक्कत ये रही कि फ्रांस को परमाणु क्षमता वाले लड़ाकू विमान की चाहत है, वहीं जर्मनी यूरोपीय माहौल के लिए मॉड्यूलर इंटरसेप्टर चाहता है। ऐसे में यूरोप को भारत में संभावना दिख रही है। भारत ने फ्रांस की कंपनी डसॉल्ट एविएशन के साथ अच्छी पार्टनरशिप निभाई है और अब वह भारत में प्रोडक्शन पर भी काम कर रहा है। रिपोर्ट के अनुसार अगर भारत और यूरोप में छठी पीढ़ी के फ्यूचर कॉम्बैट एयर सिस्टम बनाने पर सहमति बनी है।

समीक्षा बैठक में सीएम मोहन यादव ने दिखाए कड़क तेवर

कलेक्टर्स को सुना दिया है अपना फरमान, परफॉर्म न करने पर छुट्टी तय!

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ.मोहन यादव ने समत्व भवन (मुख्यमंत्री निवास) में किसान कल्याण संबंधी विभिन्न योजनाओं और कार्यों की समीक्षा की। सीएम मोहन यादव ने भोपाल में गेहूं उपार्जन प्रक्रिया की समीक्षा की है। इस दौरान उन्होंने कड़क तेवर दिखाए हैं। साथ ही वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए जुड़े सभी दो कलेक्टर्स को दो टूक शब्दों में सुना दिया है कि आपको परफॉर्म करना होगा। रिजल्ट नहीं देने वाले कलेक्टर मैदान में नहीं रहेंगे। इसके साथ ही सीएम मोहन यादव ने अन्य निर्देश भी दिए हैं।

किसानों को नहीं हो किसी प्रकार की समस्या

सीएम मोहन यादव ने कहा है कि गेहूं उपार्जन प्रक्रिया में किसानों को किसी भी प्रकार की समस्या का सामना न करना पड़े। जिला कलेक्टर पंजीकृत किसानों में से चिन्हित किसानों के सत्यापन, उपार्जन केन्द्रों पर बारदानों की उपलब्धता और किसानों को समय पर भुगतान के लिए शत-प्रतिशत व्यवस्था सुनिश्चित करें। गेहूं का उपार्जन इंदौर, उज्जैन, भोपाल और नर्मदापुरम संभाग में 16 मार्च से 5 मई तक होगा और शेष संभागों जबलपुर, ग्वालियर, रीवा, शहडोल, चंबल और सागर में 23 मार्च से 12 मई तक किया जाएगा। किसान अपना पंजीयन 7 मार्च तक करा सकेंगे।

उन्होंने कहा कि उपार्जन केन्द्रों का समय-सीमा में निर्धारण, उनकी स्थापना और इन केन्द्रों पर सभी आवश्यक सुविधाएं सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि उपार्जन कार्य में लगे अमले के उपयुक्त प्रशिक्षण सहित जिला उपार्जन समिति द्वारा नियमित बैठक कर समस्याओं के त्वरित निदान की व्यवस्था की जाए। किसानों को अद्यतन जानकारियां सरलता से उपलब्ध कराना भी सुनिश्चित हो।

समाधान अभियान पर दिया जोर

इसके साथ ही मुख्यमंत्री यादव ने कहा कि संकल्प से समाधान अभियान का अंतिम चरण जारी है। अभियान के अंतर्गत 40 लाख आवेदनों का निराकरण हुआ है। अब 16 मार्च तक जिला स्तरीय शिविर लगना है। विकास और जनकल्याण की इस गतिविधि की जिला कलेक्टर सघन मॉनीटरिंग सुनिश्चित करें। अभियान में किसी तरह की ढिलाई बर्दाश्त नहीं होगी।

जो कलेक्टर्स जिले की सभी गतिविधियों में परफार्मेंस और परिणाम देंगे, वे ही मैदान में रहेंगे। यह सिद्धांत सभी अधिकारियों और कर्मचारियों पर भी लागू होगा।

'नरभक्षी' गुड्डा ने पत्नी का भी पिया था खून

दूर रहते थे ग्रामीण, बहन के घर जा रहे भरत पर पीछे से किया वार

दमोह (नप्र)। तमन्ना गांव में हुए हत्याकांड ने पूरे मध्य प्रदेश को हिला कर रख दिया है। इस गांव में रहने वाले गुड्डा पटेल नाम के एक अधेड़ उम्र के व्यक्ति ने भरत विश्वकर्मा नाम के किशोर की हथौड़े से हत्या कर दी। हत्याकांड का वीडियो सामने आया है, नर पिशाच की करतूतें देखकर सहम जाएंगे। गांव के लोग इस पर पत्थर बरसाते रहे लेकिन यह डरा नहीं। नाबालिग की हत्या कर मांस खाता रहा है।

खून पिया और मांस खाया- छतरपुर जिले के देहात थाना क्षेत्र में पड़ने वाले इस गांव के लिए यह पहली घटना है। लोगों ने पहली बार अपनी आंखों से एक नरभक्षी को देखा है। गांव के लोग शोर मचाते रहे, पत्थर फेंकते रहे, मगर राक्षस गुड्डा भरत विश्वकर्मा के सिर पर हथौड़ा मारता रहा है। लोगों के सामने ही वह खोपड़ी से निकालकर मांस खा रहा था। खून पी रहा था। भीड़ बढ़ी तो खेतों की तरफ भागा है।

पत्नी का भी पिया था खून

गुड्डा इंसान के रूप में राक्षस था। उसे इंसानी खून की लत लगी थी। गांव में अलग थलग रहने वाले गुड्डा के बारे में ऐसा किसी ने नहीं सोचा था। घटना आने के बाद गांव के लोगों ने बताया कि करीब दो दशक पहले गुड्डा ने अपनी पत्नी की हत्या भी निर्मम तरीके से कर दी थी। गांव के लोग बताते हैं कि गुड्डा ने अपनी पत्नी का भी खून पिया था।

दो साल पहले आया जेल से छूटकर

पत्नी की हत्या के आरोप में गुड्डा पटेल जेल में सजा काट रहा था। करीब दो साल पहले ही वह जेल से छूटकर आया था। इसके बाद से वह गांव में ही अकेले रहता था। एक बेटा और दो बेटियां हैं। सबकी शादी हो गई है। गांव में ही बेटा अलग रहकर खेती-बाड़ी का काम करता है। गुड्डा पटेल से परिवार का कोई लगाव नहीं था।

गांव के लोग नहीं करते थे बात

गुड्डा पटेल गांव में रहता था। गांव के लोगों का कहना है कि वह सनकी है। इसलिए गांव वाले उससे बात नहीं करते थे। सभी लोग उससे डरते थे। अब घटना के बाद गांव में भय का माहौल है। उस दृश्य को देखकर लोग अब तक सहमे हुए हैं।

सिर पर रॉड से कर दिया वार

लोगों ने बताया कि भाई दूज के दिन गुड्डा अपने घर के बाहर बैठा था, तभी भरत विश्वकर्मा अपनी बाइक से निकला। इसी बीच गुड्डा ने उसके पीछे से सिर पर रॉड से वार कर दिया, जिससे वह जमीन पर गिर गया। इसके बाद गुड्डा ने उसके सिर पर हथौड़ा मारना शुरू कर दिया। साथ ही वह उसका मांस भी खाता दिख रहा है।

ग्रामीणों को डराने लगा

वहीं, ग्रामीण जब उसके करीब जाने लगे तो वह डराने लगा। साथ ही उन्हें हथौड़े से मारने की कोशिश कर रहा था। बाद में बड़ी संख्या में पुलिस की टीम और ग्रामीण वहां जमा हो गए। इसके बाद गुड्डा पटेल को पकड़ा गया है। पुलिस अब मामले की जांच कर रही है, उसने ऐसा क्यों किया।

सुप्रीम कोर्ट में अपील से शासन के परिपत्र की अवहेलना होगी

भोपाल। सीधी भर्ती से नियुक्त कर्मचारियों को प्रथम तीन वर्ष में 70%,80%,90% स्टाइपेंड देने संबंधी नियम हाईकोर्ट द्वारा निरस्त कर दिए जाने के बाद उस निर्णय के विरुद्ध शासन द्वारा सुप्रीम कोर्ट में अपील किया जाना एक असंवेदनशील कदम होगा। इससे शासन की कर्मचारी हितैषी छवि को धक्का लगेगा। शासन स्वयं अपने हजारों युवा कर्मचारियों को सुप्रीम कोर्ट में लड़ने के लिए मजबूर करे इससे शासन और कर्मचारियों के रिश्ते तनावपूर्ण होंगे जो कि सुशासन की दृष्टि से उचित नहीं कहा जा सकता। मंत्रालय सेवा अधिकारी कर्मचारी संघ के अध्यक्ष इंजी सुधीर नायक और निगम मंडल कर्मचारी महासंघ के प्रांताध्यक्ष अजय श्रीवास्तव द्वारा मुख्यमंत्री मोहन यादव से अपील की गयी कि वे अधिकारियों को अनावश्यक मुकदमेबाजी से रोकें। समाचारपत्रों में प्रकाशित समाचार से ज्ञात हुआ है कि मप्र शासन माननीय उच्च न्यायालय के उस निर्णय के विरुद्ध सर्वोच्च न्यायालय में अपील करने जा रही हैद्य मंत्रालय सेवा अधिकारी कर्मचारी संघ के अध्यक्ष सुधीर नायक और निगम मंडल कर्मचारी महासंघ के प्रांताध्यक्ष अजय श्रीवास्तव नीलू ने मुख्यमंत्री से हस्तक्षेप करने की अपील की है।

मप्र में मेयर फंड पर 'सरकार' का ब्रेक, भोपाल में 10 करोड़ सालाना निधि

अध्यक्ष, एमआईसी मेंबर-पार्षदों की दोगुनी हो चुकी

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश में अगले साल नगर निगम के चुनाव होने हैं। इससे पहले मेयर फंड पर 'सरकार' ने ब्रेक लगाया है। नगरीय विकास एवं आवास विभाग ने सभी कमिश्नर को लेटर लिख साफ कहा है कि वार्षिक बजट में महापौर निधि के संबंध में कोई प्रावधान नहीं है। इसलिए अबकी बार बजट बनाते समय नियमों का ध्यान रखें।

आदेश के बाद भोपाल, इंदौर जैसे बड़े निगम के महापौर पर भी असर पड़ेगा। भोपाल में पिछले साल बजट में जल, प्रॉपर्टी और ठोस एवं अपशिष्ट पर टैक्स को बढ़ाते हुए जनता पर बोझ डाला गया था तो दूसरी तरफ जनप्रतिनिधि यानी, पार्षद, एमआईसी मेंबर, अध्यक्ष और महापौर की सालाना निधि दोगुनी कर दी गई थी।

लेटर में लिखा- बजट प्रस्ताव में महापौर निधि का प्रावधान नहीं

विभाग के उप सचिव प्रमोद कुमार शुक्ला ने यह आदेश जारी किया है। जिसमें लिखा कि नगर पालिक निगमों द्वारा अपने बजट में महापौर निधि का प्रावधान किया जाता है। मध्य प्रदेश नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 के अध्याय 7 नगर पालिक निधि के प्रावधान वर्णित है। जिसमें वित्तीय वर्ष में निगम की प्राप्तियों एवं आय का अनुमान पत्रक (बजट प्रस्ताव) में महापौर निधि के संबंध में कोई प्रावधान नहीं है। इसके तहत बजट तैयार करते समय मध्य प्रदेश नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 एवं मध्य प्रदेश नगर पालिक निगम (लेखा एवं वित्त) नियम 2018 में दिए गए प्रावधान के अनुसार ही कार्रवाई की जाए।

नगर निगम में जनप्रतिनिधियों की अलग-अलग निधि

भोपाल में महापौर के अलावा अध्यक्ष, एमआईसी मेंबर, पार्षद और जोन अध्यक्ष की भी निधि है। पिछले बजट में यह दोगुनी कर दी गई थी। जैसे महापौर की 5 की जगह 10 करोड़ रुपए की गई थी। वहीं, अध्यक्ष की 5 करोड़, एमआईसी मेंबर की 1 करोड़ रुपए, पार्षद की 50 लाख रुपए और जोन अध्यक्ष की 10 लाख रुपए निधि रही।

इस बजट में निधि रखेंगे या नहीं, इसे लेकर संशय

विभाग के लेटर के बाद अगले बजट में महापौर, अध्यक्ष समेत अन्य जनप्रतिनिधि अपनी निधि रखेंगे या नहीं, इसे लेकर संशय की स्थिति है।

'सरस्वती अभियान' से शिक्षा की मुख्यधारा में पुनः आएगी शाला त्यागी बालिकाएँ

बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ के अंतर्गत महिला बाल विकास विभाग की नई पहल

भोपाल (नप्र)। प्रदेश में शाला त्यागी बालिकाओं को पुनः शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ने के लिए महिला एवं बाल विकास विभाग ने बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ योजनांतर्गत 'सरस्वती अभियान' की शुरुआत की है। इस नवाचार के माध्यम से वे बालिकाएँ जो किसी सामाजिक, पारिवारिक या आर्थिक कारण से विद्यालय छोड़ चुकी हैं, उन्हें फिर से शिक्षा से जोड़कर आत्मनिर्भर और सशक्त बनाने का प्रयास किया जाएगा। राज्य स्तर पर इस अभियान को नई दिशा देने के लिए 10 मार्च को भोपाल के कुशाभाऊ ठाकरे सभागार में आयोजित कार्यक्रम में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव शामिल होंगे। कार्यक्रम में शाला त्यागी बालिकाओं को पुनः शिक्षा से जोड़ने के लिए विभाग की कार्य योजना और नवाचारों की जानकारी भी दी जाएगी।

अभियान में राज्य ओपन स्कूल प्रणाली के माध्यम से बालिकाओं को कक्षा 8वीं, 10वीं और 12वीं की परीक्षाओं में शामिल होने का अवसर दिया जाएगा। उन्हें अध्ययन सामग्री, मार्गदर्शन, संपर्क कक्षाएँ और मेंटोरिंग की सुविधा भी प्रदान की जाएगी, ताकि वे अपनी पढ़ाई पूरी कर सकें और आगे की शिक्षा या रोजगार के अवसर प्राप्त कर सकें।

राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण के अनुसार प्रदेश में बड़ी संख्या में बालिकाएँ कक्षा 8वीं, 10वीं या 12वीं से पहले ही विद्यालय छोड़ देती हैं। शिक्षा छूटने के बाद उन्हें पढ़ाई जारी रखने का अवसर नहीं मिल पाता, जिससे उनकी शिक्षा अधूरी रह जाती है और उनके भविष्य के अवसर सीमित हो जाते हैं। ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों में यह समस्या अधिक गंभीर रूप में सामने आती है।

चुनौती को ध्यान में रखते हुए महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा शुरू किए जा रहे सरस्वती अभियान के अंतर्गत शाला त्यागी बालिकाओं की पहचान के लिए सर्वेक्षण किया जाएगा, उन्हें राज्य ओपन स्कूल में नामांकित किया जाएगा। परीक्षा की तैयारी के लिए अध्ययन सामग्री और शैक्षणिक मार्गदर्शन उपलब्ध कराया जाएगा। इसके साथ ही मेंटोरिंग और काउंसलिंग के माध्यम से बालिकाओं को परीक्षा में सफल होने के लिए निरंतर सहयोग दिया जाएगा। अभियान के तहत परीक्षा उत्तीर्ण करने वाली बालिकाओं को प्रमाण-पत्र प्रदान कर आगे की शिक्षा के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा। इस पहल का उद्देश्य न केवल बालिकाओं को शिक्षा से जोड़ना है, बल्कि उनमें आत्मविश्वास और आत्मसम्मान का विकास करना भी है। अभियान बालिका शिक्षा की दर बढ़ाने, ड्रॉप-आउट दर कम करने और महिला सशक्तिकरण को गति देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। साथ ही बाल विवाह जैसी सामाजिक कुरीतियों को रोकने में भी यह अभियान प्रभावी साबित हो सकता है। सरस्वती अभियान के माध्यम से शिक्षा से वंचित बालिकाओं को नया अवसर मिलेगा और वे न केवल अपने जीवन को बेहतर बना सकेंगी, बल्कि परिवार और समाज के विकास में भी सक्रिय भूमिका निभा सकेंगी।

नशे में धुत आरक्षक ने होटल में किया हंगामा

नीमच में स्टाफ से गाली-गलौज की, थप्पड़ मारा; पुलिस टीम ने भगाया

नीमच (नप्र)। नीमच शहर के महू-नीमच हाईवे पर स्थित राजस्थानी होटल में देर रात एक पुलिस आरक्षक ने शराब के नशे में हंगामा किया। आरक्षक पर होटल स्टाफ से गाली-गलौज करने, एक व्यक्ति को थप्पड़ मारने और मुफ्त में सिगरेट व पानी की बोतल मांगने का आरोप है। इस घटना के वीडियो भी सामने आया है।

आरक्षक और उसके साथी ने होटल में किया हंगामा

होटल संचालक चंचल सोनी (31) ने बताया कि उन्हें गुरुवार-शुक्रवार की दरमियानी रात तकरीबन 3:50 बजे होटल स्टाफ का फोन आया। स्टाफ ने सूचना दी कि आरक्षक जयराम राठौर अपने एक साथी के साथ होटल में उत्पात मचा रहा है। जानकारी मिलते ही संचालक तुरंत होटल पहुंचे।

मुफ्त में पानी की बोतलें, सिगरेट की मांग कर रहा था

संचालक के अनुसार, आरक्षक जयराम पूरी तरह शराब के नशे में था। वह अपना रसूख दिखाते हुए होटल स्टाफ से मुफ्त में पानी की बोतलें और सिगरेट की मांग कर रहा था। स्टाफ द्वारा मना करने पर उसने गाली-गलौच शुरू कर दी और होटल में मौजूद अन्य लोगों से भी बदतमीजी की।

शिकायत पर पुलिस टीम ने आरक्षक को हटाया- हंगामे की स्थिति बढ़ती देख होटल संचालक ने तत्काल पुलिस कंट्रोल रूम (डायल 112) को सूचना दी। मौके पर पहुंची पुलिस टीम ने आरक्षक की हरकतों को देखा और उसे फटकार लगाकर वहां से हटाया।

पीड़ित होटल संचालक ने अब इस मामले में वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों से शिकायत कर आरोपी आरक्षक के खिलाफ सख्त अनुशासनात्मक कार्रवाई की मांग की है।

कोलार थाना क्षेत्र में युवक का अपहरण, अधमरा कर हॉस्पिटल छोड़ा

बदमाशों ने बहन को कॉल कर कहा- एक्सीडेंट हो गया, दुश्मन से दोस्ती रखने का लिया बदला

भोपाल (नप्र)। भोपाल के कोलार थाना क्षेत्र में गार्मेंट्स शॉप में काम करने वाले एक युवक का अपहरण कर बदमाशों ने उसके साथ मारपीट की। आरोपियों ने उसे कार में जबरन बैठाकर सुनसान इलाके में ले जाकर करीब दो घंटे तक बेल्ट, डंडों और लात-घूसों से पीटा।

गंभीर हालत में युवक को अस्पताल में भर्ती कराया गया है। पुलिस ने गुरुवार रात मामले में एफआईआर दर्ज कर आरोपियों की तलाश शुरू कर दी है। पुलिस के मुताबिक घायल युवक दिनेश अहिरवार (22) है, जो

कोलार क्षेत्र की एक गार्मेंट्स शॉप में सैल्समैन का काम करता है। मारपीट के बाद आरोपियों ने ही उसे अस्पताल पहुंचाया और उसके मोबाइल से परिजनों को फोन कर दुर्घटना की सूचना दी। दिनेश के हाथ की 2 उंगलियों में फ्रैक्चर हुआ है।

मोबाइल से बहन को दी एक्सीडेंट की सूचना- दिनेश की बहन शिवानी अहिरवार ने बताया कि उसके भाई के मोबाइल से फोन आया और कहा गया कि दिनेश का एक्सीडेंट हो गया है। उसे गंभीर चोट आई है और तुरंत सीएचसी अस्पताल कोलार रोड पहुंचने को कहा गया। शिवानी अपनी मां गीता और बहन निकिता के साथ अस्पताल पहुंची, जहां दिनेश का इलाज चल रहा था और उसके शरीर पर कई गंभीर चोटें थीं।

बांसखेड़ी पुलिया के पास रोककर जबरन कार में बैठाया- दिनेश ने पुलिस को बताया कि 4 मार्च 2026 की दोपहर करीब एक बजे वह बांसखेड़ी पुलिया के पास से पैदल गुजर रहा था। इसी दौरान निक्की शुक्ला, आकाश प्रजापति, तिलक चौहान, दिव्यांशु, नन्नू, अजय और अमन प्रजापति ने उसे रोक लिया।

होली के त्योहार पर 948 सड़क हादसे

सागर 67 के साथ टॉप पर; नशा, तेज रफ्तार और नियमों की अनदेखी बनी बड़ी वजह

भोपाल (नप्र)। होली के उत्सव के बीच प्रदेश में सड़क हादसों का ग्राफ चिंताजनक रूप से बढ़ गया। 4 मार्च को 108 एंबुलेंस सेवा के डेटा के अनुसार एक ही दिन में 948 सड़क दुर्घटनाएं दर्ज की गईं। सबसे अधिक 67 हादसे सागर जिले में हुए, जबकि राजधानी भोपाल 39 मामलों के साथ आठवें स्थान पर रहा। विशेषज्ञों का कहना है कि तेज रफ्तार, शराब पीकर वाहन चलाना और ट्रैफिक नियमों की अनदेखी हादसों के प्रमुख कारण हैं। सरकारी अस्पतालों में सामान्य दिनों की तुलना में दोगुने से अधिक घायल इलाज के लिए पहुंचे।

सागर टॉप पर, कई जिलों में बढ़े मामले

प्रदेश में दर्ज 948 सड़क हादसों में सागर जिला 67 मामलों के साथ पहले स्थान पर रहा। इसके बाद विदिशा में 55, इंदौर में 46 और जबलपुर में 45 दुर्घटनाएं दर्ज की गईं। महाकौशल और विंध्य क्षेत्र के जिलों में भी स्थिति गंभीर रही। रीवा और सतना में 42-42 तथा रायसेन में 41 हादसे दर्ज हुए। राजधानी भोपाल में 39 दुर्घटनाएं सामने आई, जिससे वह सूची में आठवें स्थान पर रहा। वहीं, छिंदवाड़ा (30), धार (28), सिंगरौली (27), खरगोन और बालाघाट (25-25) में भी उल्लेखनीय संख्या में सड़क हादसे हुए। वहीं शाजापुर में 2 और दतिया में 1 हादसा दर्ज किया गया।

नशा और तेज रफ्तार बनी बड़ी वजह

108 एंबुलेंस सेवा के सीनियर मैनेजर तरुण सिंह परिहार ने बताया कि तेज रफ्तार, शराब पीकर वाहन चलाना और यातायात नियमों की अनदेखी सड़क दुर्घटनाओं के प्रमुख कारण हैं।

उन्होंने कहा कि होली के दौरान नशे की हालत में वाहन चलाने की घटनाएं बढ़ जाती हैं। इस बार बीते साल की तुलना में नशे में हुए एक्सीडेंट की संख्या अधिक रही है।

भोपाल में सामान्य से दोगुने मामले

राजधानी भोपाल के सरकारी अस्पतालों में होली के दौरान सड़क दुर्घटनाओं से जुड़े 62 घायल इलाज के लिए पहुंचे। जबकि सामान्य दिनों में यह संख्या 20 से 25 के बीच रहती है।

अस्पताल सूत्रों के अनुसार, अधिकतर घायलों में बाइक सवार शामिल थे। कई मामलों में हेलमेट का उपयोग नहीं किया गया था, जिससे सिर में गंभीर चोटें आईं।

ट्रॉमा मामलों में 30 प्रतिशत तक मृत्यु दर

कम्युनिटी मेडिसिन विशेषज्ञ डॉ. कुलदीप गुप्ता के अनुसार, एक रिसर्च में पाया गया है कि सड़क दुर्घटना के बाद ट्रॉमा में लाए गए 10 गंभीर घायलों में से 3 की जान नहीं बच पाती। उन्होंने कहा कि ज्यादातर मामलों में ट्रैफिक नियमों का पालन नहीं किया गया था। बाइक चालकों के लिए हेलमेट पहनना बेहद जरूरी है, क्योंकि सिर की चोटें जानलेवा साबित हो सकती हैं। कई उदाहरण ऐसे भी हैं जहां हेलमेट पहनने के कारण गंभीर हादसे के बावजूद व्यक्ति की जान बच गई।

हेलमेट और सीट बेल्ट की अनदेखी

तरुण सिंह परिहार ने बताया कि अधिकांश मामलों में लोग हेलमेट और सीट बेल्ट का उपयोग नहीं करते। छोटी दुर्घटना भी इसी कारण गंभीर रूप ले लेती है।

उन्होंने लोगों से अपील की कि वाहन चलाते समय सभी नियमों का पालन करें। किसी भी आपात स्थिति में निजी वाहन से ले जाने के बजाय एंबुलेंस सेवा का उपयोग करें, क्योंकि उसमें जीवन रक्षक उपकरण और प्रशिक्षित स्टाफ मौजूद रहता है।

जागरूकता ही बचाव का रास्ता

विशेषज्ञों का मानना है कि त्योहारों के दौरान अतिरिक्त सावधानी बरतने की जरूरत है। उत्सव का माहौल सड़क सुरक्षा के नियमों को नजरअंदाज करने का कारण नहीं बनना चाहिए।

तेज रफ्तार और लापरवाही के कारण बढ़ते हादसे यह संकेत दे रहे हैं कि सड़क सुरक्षा को लेकर व्यापक जागरूकता अभियान और सख्त प्रवर्तन की आवश्यकता है, ताकि आने वाले समय में ऐसे आंकड़ों में कमी लाई जा सके।

बिना ट्रेनिंग बन रहे कैंसर विशेषज्ञ

हमीदिया के लिए डुअल लीनेक नहीं हुआ ऑर्डर, हर माह 1500 मरीजों को सिर्फ सलाह

भोपाल (नप्र)। राजधानी के गांधी मेडिकल कॉलेज (जीएमसी) में हर महीने 1500 से ज्यादा कैंसर मरीज इलाज की उम्मीद लेकर पहुंचते हैं, लेकिन यहां रेडिएशन की सुविधा न होने से उन्हें सिर्फ ओपीडी में सलाह मिल रही है। कोबाल्ट मशीन सालों से खराब है, ब्रेकी थेरेपी यूनिट भी बंद पड़ी है और डुअल एनर्जी लीनेक मशीन अब तक ऑर्डर नहीं हुई। नतीजा यह कि

मरीजों को रेडिएशन के लिए एम्स या निजी कैंसर अस्पतालों का रुख करना पड़ रहा है। स्थिति इतनी गंभीर है कि छात्रों को भी क्लिनिकल एक्सपोजर नहीं मिल पा रहा। जबकि दावा है कि नया रेडिएशन बंकर तैयार है और जल्द 25 करोड़ की हाईटेक यूनिट शुरू होगी।

बता दें, पुरानी कोबाल्ट मशीन वर्षों से खराब पड़ी है और अब उसे डिकमीशन करने की तैयारी चल रही है। वहीं ब्रेकी थेरेपी मशीन भी पिछले एक साल से बंद है। ऐसे में सर्जरी होने के बाद भी मरीजों को रेडिएशन के लिए अन्य संस्थानों में भेजना पड़ता है। वहीं, जीएमसी की डीन डॉ. कविता एन सिंह ने कहा कि बंकर तैयार है और जल्द ही मशीनें इंस्टॉल की जाएंगी।

एम्स या निजी अस्पताल ही मरीजों के पास विकल्प

रेडिएशन की जरूरत वाले मरीजों को या तो एम्स या निजी कैंसर अस्पतालों में जाना पड़ रहा है। एम्स में पहले से भारी भीड़ है, जिससे लंबी वेटिंग का सामना करना पड़ता है। यदि मरीज निजी अस्पताल का रुख करता है, तो उसे डेढ़ से दो लाख रुपये तक का अतिरिक्त खर्च उठाना पड़ता है। आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों के लिए यह बड़ा संकट है।

नाबालिग ने पेड़ पर फांसी लगाई घर से बिन बताए निकली थी, 200 मीटर की दूरी पर मिला शव

भोपाल (नप्र)। रातीबड़ इलाके में शुक्रवार सुबह एक किशोरी ने खेत में खड़े नीम के पेड़ पर फांसी लगाकर खुदकुशी कर ली। उसने यह कदम क्यों उठाया इसका खुलासा नहीं हो सका है। मृतका के पास से पुलिस को कोई सुसाइड नोट भी नहीं मिला है। पुलिस ने इस मामले में मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है। पुलिस के मुताबिक खुशी पारदी पुत्री बादल सिंह (16) ग्राम छोटी झागरिया में रहती थी। वह कक्षा आठवीं तक पढ़ी थी और अब अपने घर में ही रहती थी।

घर से बिना बताए निकली थी

शुक्रवार सुबह उसने घर से 200 मीटर दूर स्थित खेत में नीम के पेड़ पर फांसी का फंदा बनाया और जान दे दी। वह घर से बिन बताए निकली थी। परिजनों ने पुलिस को दिए बयानों में खुदकुशी के लिए कोई ठोस कारण नहीं बताया है। वहीं सूचना मिलते ही मौके पर पहुंची पुलिस ने मृतका का शव बरामद कर उसे पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। सुसाइड नोट नहीं मिलने से कारणों का खुलासा नहीं हो सका है। पुलिस का कहना है कि मामले की सभी एंगल पर जांच की जा रही है।

स्ट्रीट डॉग्स को लेकर प्रदर्शन, करोंद की मैपल ट्री सोसायटी में लोग लामबंद हुए, बोले-डॉग लवर्स झूठी शिकायत कर रहे

भोपाल (नप्र)। भोपाल के जेल रोड करोंद स्थित मैपल ट्री सोसायटी में गुरुवार देर रात लोग स्ट्रीट डॉग्स को लेकर लामबंद हो गए। वे कॉलोनी के गेट पर पहुंचे। उन्होंने नगर निगम और डॉग लवर्स के विरुद्ध प्रदर्शन भी किया। हालात को देखते हुए पुलिस मौके पर पहुंची और समझाइश दी। लोगों ने चेतावनी दी कि स्ट्रीट डॉग्स की समस्या दूर नहीं हुई तो उग्र आंदोलन करेंगे।

प्रदर्शन गुरुवार रात 11 बजे के बाद चलता रहा। रहवासियों ने बताया कि कॉलोनी में स्ट्रीट डॉग्स को लेकर खासे

परेशान हैं। आसपास के इलाकों से यहां पर बड़ी संख्या में डॉग्स आ गए हैं। इससे काटने की घटनाएं बढ़ गई हैं। हाल ही में बुजुर्ग और बच्चों को स्ट्रीट डॉग्स ने काट लिया। इसे लेकर नगर निगम को शिकायत की थी। ऐसा करने पर डॉग लवर्स थाने में रहवासियों के विरुद्ध ही झूठी एफआईआर दर्ज करवा रहे हैं।

गेट पर ही बैठ गए, पुलिस पहुंची- डॉग्स काटने और झूठी शिकायत करने के विरोध में मैपल ट्री सोसायटी के लोगों का प्रशासन के खिलाफ गुस्सा फूट पड़ा। रहवासियों ने सोसायटी गेट पर ही जाम लगा दिया और जमकर नारेबाजी की। जानकारी मिलने के बाद पुलिस मौके पर पहुंची और लोगों को समझाया।

जीतू बोले- सीएम पहलवान, लेकिन अफसरों के दांव में चित

कृषि विभाग के 60 प्रतिशत पद खाली, किसान कर्ज में डूबे, कृषक कल्याण वर्ष पर भी उठाए सवाल

भोपाल (नप्र)। प्रदेश कांग्रेस कार्यालय में पीसीसी चीफ जीतू पटवारी ने मुकेश नायक, अभय दुबे और सुखदेव पांसे के साथ प्रेस कॉन्फ्रेंस कर मोहन सरकार के कृषक कल्याण वर्ष पर सवाल उठाए। पटवारी ने कहा कि सरकार किसानों के कल्याण की बात कर रही है, जबकि कृषि तंत्र में भारी कमी और बाजार में किसानों को उचित कीमत नहीं मिल रही है।

पटवारी ने मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव पर तंज कसते हुए कहा कि वे शुरुआती दिनों में पहलवानी करते थे और उज्जैन में उन्हें पहलवान के नाम से जाना जाता है। लेकिन अब हालात ऐसे हैं कि जब कोई अधिकारी उनके पास आता है और पहलवानी का दांव देता है तो मुख्यमंत्री खुद ही चित हो जाते हैं। पटवारी ने कहा कि ऐसी स्थिति एक-दो बार नहीं बल्कि लगभग हर महीने देखने को मिलती है। मुख्यमंत्री को अपने पद की

गरिमा का ध्यान रखना चाहिए।

सीएम के जिले में 18 सौ रुपए क्विंटल बिक रहा गेहूं- उन्होंने कहा कि भाजपा ने किसानों को तीन बड़ी गारंटियां दी थीं, गेहूं 2700 रुपए प्रति क्विंटल, धान 3100 रुपए प्रति क्विंटल और सोयाबीन 6000 रुपए प्रति क्विंटल खरीदने की बात कही थी। लेकिन हकीकत यह है कि उज्जैन मंडी में गेहूं 1800 से 1900 रुपए प्रति क्विंटल तक बिक रहा है। यह स्थिति मुख्यमंत्री के अपने विधानसभा क्षेत्र की मंडी की है। पटवारी ने कहा कि कांग्रेस ने इसका वीडियो भी जारी किया था, जिससे साफ है कि एक तरफ सरकार कृषि कल्याण की बात करती है और दूसरी तरफ किसानों को उचित दाम तक नहीं मिल पा रहा है।

ट्रेड डील के खिलाफ जनमत संवाद करेगी कांग्रेस- जीतू पटवारी ने बताया- कांग्रेस पार्टी की तरफ से ट्रेड डील के खिलाफ प्रदेश भर में एक फार्मूला तय किया गया है। इस फार्मूले के तहत कांग्रेस प्रदेश भर में जनमत संवाद करेगी। कांग्रेस की तरफ से एमपी के सभी जिलों में जनमत संवाद का आयोजन किया जाएगा।

जिसके तहत ट्रेड डील की जनता को जानकारी दी जाएगी और उसमें यह बताया जाएगा कि इस डील से प्रदेश के किसानों को कितना नुकसान होने वाला है। इस अभियान के माध्यम से कांग्रेस किसानों को भी जनमत संवाद के जरिये एकजुट करेगी।

मुख्यमंत्री एक साल का हिसाब दे दें

जीतू पटवारी ने कहा, मुख्यमंत्री को पिछले 20 साल का नहीं, सिर्फ पिछले एक साल का हिसाब देना चाहिए। अगर सरकार सच में किसानों के हित में काम कर रही है तो वह अपने एक साल के काम का ब्योरा सार्वजनिक करे।

पटवारी ने आरोप लगाया कि प्रदेश में कृषि व्यवस्था सरकारी उदासीनता के बोझ तले दम तोड़ रही है। कृषि विभाग के आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार विभाग में स्वीकृत 14,537 पदों में से 8,468 पद खाली हैं, यानी लगभग 60 प्रतिशत कर्मचारी नहीं हैं। इसके अलावा मत्स्य पालन विभाग में 1,290 में से 722 पद रिक्त हैं, उद्यानिकी विभाग में 3,079 में से 1,459 पद खाली हैं और पशुपालन व डेयरी विभाग में भी बड़ी संख्या में पद रिक्त पड़े हैं। पटवारी ने कहा कि जब कृषि से जुड़े विभागों में इतनी बड़ी संख्या में पद खाली हैं तो सरकार किसानों के कल्याण की बात किस आधार पर कर रही है। उन्होंने सरकार से तुरंत रिक्त पद भरने और किसानों को उनकी फसलों का उचित मूल्य दिलाने की मांग की।

संपादकीय

नीतीश को हटाने के मायने

बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के लगभग 20 साल तक सीएम रहने के बाद विदाई की पटकथा तो पिछले साल विधानसभा चुनाव के बाद ही लिख दी गई थी, अब उन्हें राज्यसभा भेजना इसका 'दि एंड' है। कारण भाजपा की लंबे समय से तमन्ना रही है कि वह उत्तर भारत के इस बड़े राज्य में अपनी सरकार बनाए, लेकिन राज्य की राजनीति पर नीतीश कुमार की पकड़ और उनके निश्चित वोट बैंक के चलते उसे नीतीश की छाया तले ही आगे बढ़ना पड़ रहा था। पिछले विधानसभा चुनाव में भाजपा 89 सीटें जीतकर सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी, जबकि नीतीश की जदयू ने 85 सीटें जीतीं। इन नतीजों के बाद भाजपा चाहती तो एनडीए माइनस जदयू भी सरकार बना सकती थी, क्योंकि तब उसे बहुमत के लिए केवल पांच सीटों की और जरूरत होती। लेकिन भाजपा ने ऐसा न करते हुए नीतीश को मानसिक रूप से बिहार छोड़ने के लिए तैयार किया। यह अभी स्पष्ट नहीं है कि नीतीश ने मजबूरी में राज्यसभा जाना स्वीकार किया अथवा उन पर इतना दबाव बनाया गया कि वो ना नहीं कर सके। वैसे भी बीते चार माह में राज्य सरकार जिस तरह निर्णय ले रही थी, वो नीतीश की पुरानी नीतियों से मेल नहीं खाते थे। हालांकि नीतीश का इस तरह बिहार छोड़ना जदयू कार्यकर्ताओं के गले नहीं उतर रहा है। बताया जाता है कि जदयू का एक खेमा नीतीश के इस फैसले से बहुत नाराज हैं और उसने अपनी नाराजी सड़कों पर उतर कर जताई भी है। जबकि दूसरा खेमा भाजपा के साथ ही चलने का हामी है। ऐसे में संभव है कि आगे चलकर यह खेमा भाजपा में ही शामिल हो जाए। यहां सवाल है कि नीतीश इस तरह बिहार छोड़ने पर क्यों तैयार हुए? बताया जा रहा है कि अब उन्होंने अपने बेटे निशांत कुमार को सक्रिय राजनीति में उतारने का मन बना लिया है। अगर ऐसा हुआ तो नई सरकार में निशांत उपमुख्यमंत्री हो सकते हैं। जो चर्चा है, उसके मुताबिक भावी सरकार में सीएम भाजपा का होगा और दो उपमुख्यमंत्री जदयू के होंगे, जबकि स्पीकर पद भाजपा के पास ही रहेगा। एक समय था जब नीतीश बिहार के साथ-साथ राष्ट्रीय राजनीति में एक बड़ा चेहरा बन कर उभरे थे। उसका कारण भाजपा में मोदी युग के उभार के बाद बीजेपी से रिश्ते तोड़ना और विपक्ष की राजनीति करना था। लेकिन बाद में नीतीश ने अपने ही पैमानों को ध्वस्त कर पलटूराम की राजनीति शुरू कर दी। वो मुख्यमंत्री तो बने रहे, लेकिन धीरे-धीरे उनकी नैतिक सत्ता कमजोर पड़ती गई। फिर वो अगर सीएम बने रहे तो इसकी वजह राज्य में उनका मजबूत वोट बैंक है,जो मुख्य रूप अति पिछड़े वर्ग का है। नीतीश के राज्य से हटने के बाद भाजपा सहित सभी की निगाहें इसी वोट बैंक पर लगी है। यही कारण है कि नेता विपक्ष तेजस्वी यादव नीतीश के जाने को भाजपा का षड्यंत्र बताते हए उनके प्रति सहानुभूति जता रहे हैं। उधर भाजपा भी संभवतः किसी अति पिछड़े को ही मुख्यमंत्री बनाएगी, ताकि नीतीश का वोट भाजपा की झोली में गिरे। कहा यह भी जा रहा है नीतीश राज्यसभा में उपसभापति बन सकते हैं। लेकिन इसकी संभावना कम लगती है, क्योंकि नीतीश पहले उपराष्ट्रपति पद का ऑफर ठुकरा चुके हैं। ऐसे में उपसभापति का पद उनके कद से छोटा है। राज्यसभा जाकर भी नीतीश क्या करेंगे, यह अभी बड़ा सवाल है। अलबत्ता अन्य विपक्षी पार्टियां भाजपा को इस बात पर घेर रही हैं कि वह अपने सहयोगियों को किसी न किसी तरह से निपटाती है। बहरहाल बिहार में अब भगवा युग शुरू होने जा रहा है, जिसका राजनीति और समाज पर व्यापक असर जल्द दिखेगा।

अभिशप्त युद्ध से प्रभावित मानवता

नजरिया

प्रो. कन्हैया त्रिपाठी

लेखक राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी रह चुके हैं। केंद्रीय विश्वविद्यालय पंजाब में चेयर प्रोफेसर हैं।

युद्ध का महातांडव शुरू हो गया है। अमेरिका जो कि इस युद्ध में अपनी आँखें लाल-पीली करते हुए शामिल हुआ उसने कई देशों में अपने दूतावास को बंद कर दिया है और अपने नागरिकों व राजनयिकों को सुरक्षित रहने और लौटने का आग्रह किया है। ट्रंप को अब पूरी दुनिया मूर्ख मानने लगी है क्योंकि उनके भीतर का जानवर अब बेकाबू हो गया है और इससे जो पूरे विश्व को हानि का सामना करना पड़ रहा है, वह असहनीय है।

ईरान के सुप्रीमो लीडर खमनेई और उनके सहयोगियों का इस भयानक युद्ध में सर्वनाश कर दिया गया। यह अमेरिका व इस्त्रायल के लिए भले ही प्रसन्नता का विषय हो लेकिन जिस प्रकार से इस सर्वनाश को अंजाम दिया गया वह निंदनीय है। इसकी भर्त्सना पूरे विश्व में हो रही है। ऐप्स्टीन फ़ाइल में की बहस को युद्ध के द्वारा नए तरीके से मोड़ देने के लिए यदि यह युद्ध शुरू किया गया है और इसमें धरती के नागरिकों को त्रासदीपूर्ण वातावरण में धकेल दिया गया है तो यह खतरनाक है। अब हालात ऐसे हो गए हैं कि ईरान पर इसराइल व संयुक्त राज्य अमेरिका के हवाई हमलों और फिर ईरान की ज़वाबी कार्रवाई से पूरे मध्य पूर्व क्षेत्र में उथलपुथल मच गई है। वायु क्षेत्र व परिवहन मार्गों में बड़ा व्यवधान दर्ज किया जा रहा है। परिस्थितियाँ तेज़ी से बिगड़ रही हैं। हताहत होने वाले आम नागरिकों की संख्या बढ़ रही है। खाड़ी देशों समेत व्यापक क्षेत्र में व्यापक अस्थिरता फैल चुकी है। ईरान चेतावनी देते कह रहा है कि अमेरिका को अंतरराष्ट्रीय जलक्षेत्र में उसके युद्धपोत को डुबोने की भारी कीमत चुकानी पड़ेगी।

मध्य पूर्व क्षेत्र में स्थित 12 देश अस्थिरता, तनाव व हमलों की चपेट में ऐसे आएंगे कभी किसी ने सोचा भी नहीं होगा। इस युद्ध से अभिशप्त वे हैं जो बेजुबान हैं। जिनसे कोई इस युद्ध का वास्ता नहीं है। वे अपने जीवन को नहीं जी सकते बस। हिंसक टकराव के दौरान ईरान के मिनाब शहर में लड़कियों के एक प्राथमिक स्कूल के हमले की चपेट में आने पर गहरा क्षोभ स्वाभाविक है। इसमें बड़ी संख्या में छात्राओं की मौत हुई है। आखिर उन बेचारी छात्रों व छात्राओं का क्या दोष है जो अपने जान से हाथ धो बैठे। बच्चे, छोटी लड़कियाँ स्कूली दिन की शुरुआत में इस तरह मारी जा रही हैं। उनके बस्तों पर खून के धब्बे देखकर रोंगटे खड़े हो जाते हैं। यह पूरी तरह से भयावह है और मानव गरिमा के खिलाफ है। जिन लोगों ने अपने सनक को अंजाम दिया है उनसे

कोई सवाल कोई करे तो क्या करे क्योंकि यह उनकी अपनी सनक है और कुछ भी नहीं।

विश्व में आने वाले संकट को अब कोई नहीं रोक सकेगा, यह तो तय है। देखा जाए तो यह वैश्विक सप्लाई चेन में एक बड़ा असर डालने वाला युद्ध लग रहा है। अगर संघर्ष आगे बढ़ता रहा, तो बहुत सी चीजों की किल्लत और कुछ मामलों में बहुत ज्यादा महंगाई बढ़ेगी। आम जनजीवन बहुत ज्यादा विश्व भर में प्रभावित होगा। मानवाधिकारों का हनन जो व्यापक पैमाने पर होने जा रहा है उसका आंकलन तो कोई कर ही नहीं सकता। विगत कुछ वर्ष पहले दुनिया को स्मरण होगा की संयुक्त राष्ट्र में बैठकर समिट फॉर फ्यूचर पर सभी राष्ट्राध्यक्ष बड़ी-बड़ी बातें किए और अब यह युद्ध है हमारे सामने। इससे पता चलता है कि आज का युग कितना असंवेदनशील होता जा रहा है।

ईरान संकट पर सुरक्षा परिषद की आपात बैठक हुई। उसमें पुरानी परिपाटी के अनुसार कहा गया कि यह केवल एक आक्रामक कृत्य नहीं है। यह एक युद्ध अपराध और मानवता के विरुद्ध अपराध है। इसका असर क्या पड़ने वाला है, यह तो दुनिया जानती है। यदि यह कहा जाए कि यह सभी देशों को सुनने की आदत हो गयी है तो कोई अतिश्योक्तिपूर्ण बात न होगी क्योंकि युद्ध के साथ ऐसी बातें सुरक्षा परिषद् में होती रही हैं। अब कुछ उन देशों की बातें करें जो इस युद्ध में अहम् नाम हैं जिसमें अमेरिका कहता है कि आक्रामकता को नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता। वह अपनी आक्रामकता को कभी प्रश्नांकित नहीं करता। रूस जो कि शक्तिशाली देशों में सम्मिलित है उसका कहना है कि सशस्त्र आक्रामकता का एक और उकसावे वाला कृत्य इस्त्रायल व अमेरिका ने किया है जो उचित नहीं है। अब बात करें चीन की तो उसके रुख के बारे में पूरी दुनिया को पता है फिर भी उसने कहा कि ईरान की क्षेत्रीय अखंडता का सम्मान किया जाना ही होगा जबकि ब्रिटेन का मानना है कि क्षेत्रीय स्थिरता एक प्राथमिकता के तौर पर देखी जानी चाहिए। बहरीन ने अकारण ईरानी हमलों की निन्दा की और फ्रांस का ज़ोर है कि युद्धरत क्षेत्र को शान्ति की ज़रूरत है। इस कहासुनी के बीच युद्ध में रोज लोग मारे जा रहे हैं और भारी संख्या में जानमाल की हानि विश्व में विशेषज्ञ अपने-अपने आकलन के अनुसार दे रहे हैं।

यह एक विकृत लोगों का समय है। जिसमें युद्ध यूक्रेन व रूस लड़ते रहे। गज़ा में अशांति रही और अब ईरान, इस्त्रायल व अमेरिका की पॉवर पोलिटिक्स निश्चित रूप से बहुपक्षवाद व द्विपक्षीय मसलों को किसी भी तरीके से एक प्लेटफॉर्म पर आने ही नहीं देंगे, ऐसा लगता है। युद्ध किसी भी दशा में ठीक नहीं है। विश्व में अफरातफरी का माहौल होगा तो हमारे विकास की गति रुक जाएगी। जिन देशों को सतत विकास लक्ष्य को हासिल करना था उन देशों ने युद्ध लड़ना शुरू कर दिया है। हमारे पर्यावरण, मानव विकास व भविष्य की विभिन्न नीतियों पर इससे असर पड़ने वाला है। पृथ्वी पर अशांति व अस्थिरता से ज्यादा खतरनाक कुछ और नहीं हो सकता। संयुक्त राष्ट्र के महासचिव एंटोनियो गुटेरेस ने भले दुनिया से अपील करके अपनी चिंता व्यक्त की हो लेकिन आमजन के बीच इन युद्धों से जो उत्पीड़न देखने को मिल रहे हैं वे असह्य हैं। अविश्वास में भी युद्धरत देश किसी तरह से अपने नागरिकों का विश्वास नहीं जीत सकते। इस पूरी सभ्यता में उनका विश्वास ज़रूर खोता जा रहा है। ऐसे में, इस अभिशप्त काल में विश्व के युद्धरत देशों की जीवन दशा कैसे बचेगी चिंता इस बात की है। चिंता इस बात की है कि अपनी संप्रभुता व वर्चस्व के लिए क्या मानव हित बिलकुल संवेदना से बाहर होते जा रहे हैं। यदि यही हाल रहा तो तृतीय विश्वयुद्ध अपना आकार ले लेगा और परमाणु हथियार भी उपयोग में आने लगेंगे।

ईरान, अमेरिका व इसरायल के द्वंद्व के बीच फंसी दुनिया को अब अपना-अपना पक्ष तय करना पड़ेगा तो स्थितियां और खतरनाक होंगी। ऐसे में, यदि ये युद्ध रुक जाएँ और मनुष्यता के लिए विश्व के सभी देश कार्य संस्कृति विकसित करें तो अच्छा होगा। यदि बदले की भावना और बर्चस्व की राजनीति में देश फंसेंगे तो निश्चय ही महाविनाश की ओर जाकर हम अपने भविष्य को अंधकार में डाल देंगे।

मजबूत सैन्य रणनीति का हिस्सा हैं परमाणु हथियार

ईरान पर हमला

प्रमोद भार्गव

लेखक पत्रकार हैं।

अमेरिका-इजरायल और ईरान के बीच युद्ध आरंभ हो गया है। लेकिन अब यह युद्ध मात्र तीन देशों के बीच न रहकर वैष्विक युद्ध की श्रेणी में बदलता दिख रहा है। क्योंकि ईरान ने कई अरब देशों पर ड्रोन हमले करके बड़ी तबाही मचा दी है। इधर अमेरिकी स्टेल्थ जेट्स ने ईरानी परमाणु ठिकानों फोरदो, इस्फाहन और नातांज पर भारी बमबारी की है। इस हमले की पुष्टि करते हुए अंतरराष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी (आईएईए) के ईरानी प्रतिनिधि रेजा नजाफी ने दावा किया है कि 'अमेरिका और इजरायल की संयुक्त सैन्य कार्यवाही में ईरान के परमाणु ठिकानों को निशाना बनाया गया है। जबकि यहां शांतिपूर्ण परमाणु ऊर्जा पर काम हो रहा है। बमबारी के बाद इन ठिकानों से परमाणु रिसाव का खतरा बढ़ गया है। यह रिसाव पूरी दुनिया के लिए संकट बन सकता है।' हालांकि आईएइए के महानिदेशक राफेल ग्रॉसी ने इस तरह के किसी हमले की जानकारी से मना किया है। जबकि अमेरिकी रक्षा मंत्री पीट हेगसेथ ने कहा है कि ईरान परमाणु बम बना रहा है। इसलिए इस कार्यक्रम पर नियंत्रण जरूरी है।

नतांज ईरान का सबसे पुराना परमाणु संयंत्र है। यहां दो यूरेनियम संवर्धन संयंत्र स्थापित है। यहीं पर जून 2025 में अमेरिका ने हमला किया था। अमेरिका ने इस हमले को जायज ठहराते हुए कहा था कि ईरान इस संयंत्र में परमाणु बम बनाने के लायक यूरेनियम संवर्धन कर रहा था। अब इजरायल के साथ परमाणु ठिकानों पर हमले करके वैश्विक संकट बढ़ा दिया है। यह संकट इसलिए भी बड़ा आकार लेता जा रहा है, क्योंकि ईरान ने संयुक्त अरब अमीरात (यूएई), सऊदी अरब, जोर्डन, बहरीन, ओमान, कुवैत, कतर पर भी हमले बोल दिए हैं। ये सब वे मुस्लिम देश हैं, जिनमें अमेरिका के या तो हवाई सैन्य अड्डे हैं, या वे अमेरिका के हमदर्द बने हुए हैं। ईरान ने दुबई पर हमले इसलिए किए हैं, क्योंकि वहां अमेरिकी कंपनियां कार्यरत हैं।

इस युद्ध में ट्रंप दादागिरी की भूमिका में हैं। उनके अहंकार का ज्ञान तभी हो गया था, जब उन्होंने वेनेजुएला के राष्ट्रपति और उनकी पत्नी को उनके घर से बिना कोई युद्ध किए उठा लिया था। इजरायल और ईरान लंबे समय से एक-दूसरे के कट्टर शत्रु हैं। अतएव ईरान की ओर से जब भी खतरे की आशंका होती है, इजरायल अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए ईरान पर हमला बोल देता है। अतएव इसलिए यह कहना स्वाभाविक है कि इजरायल-अमेरिका ने यह हमला एक व्यापक और लंबे समय तक चलने वाले रणनीतिक अभियान के अंतर्गत किया है। ट्रंप बोल भी चुके हैं कि यह लड़ाई एक माह से अधिक खिंच सकती है। इस बीच ईरान पर बड़ी कार्यवाही भी संभव है। यानी यह आशंका बनी हुई है कि अमेरिका ईरान के परमाणु ठिकानों को तो नेस्तनाबूद कर ही सकता है, तेहरान पर परमाणु हमला भी कर दे तो कोई हैरानी नहीं होगी ?

दरअसल ईरान को परमाणु बम बनाने से रोकने के लिए यह संयुक्त हमला किया गया है। अमेरिका और इजरायल को आशंका है कि ईरान ने यूरेनियम संवर्धन प्रक्रिया शुरू कर दी है। यह ऐसी प्रक्रिया हैं, जो परमाणु हथियार बनाने की प्रक्रिया को बेहतर बनाती है। इस प्रक्रिया के अंतर्गत यूरेनियम-235 के निर्माण की प्रक्रिया को बढ़ावा दिया जाता है। अतएव इजरायल के लिए ईरान का परमाणु हथियार संपन्न देश हो जाना चिंता की स्थिति उत्पन्न करने वाली बात है। दरअसल, परमाणु हथियार संपन्न देश होना एक ऐसी सैन्य रणनीति है, जिसके चलते दूसरे देश परमाणु संपन्न देश पर हमला करने से कतराते हैं। इसका बुनियादी कारण है कि यदि कोई देश शत्रु देश पर परमाणु हमला करता है तो जवाबी कार्यवाही में उसे भी परमाणु हमले का सामना करना पड़ सकता है। ऐसा होता है तो दोनों देशों को बड़ा नुकसान उठाना पड़ सकता है। रूस ने यूक्रेन पर आसानी से इसलिए हमला बोल दिया था, क्योंकि उसके पास परमाणु हथियार नहीं है। रूस और अमेरिका के बहकावे में आकर उसने अपने परमाणु हथियार, परमाणु निरस्त्रीकरण संधि पर हस्ताक्षर करने के बाद समुद्र में नष्ट कर दिए थे। इसका खामियाजा उसे खत्म नहीं होने वाले युद्ध के रूप में भुगतना पड़ रहा है। ईरान परमाणु संपन्न देश न बन जाए, इसलिए उस पर अमेरिका ने लंबे समय से परमाणु संबंधी प्रतिबंध लगाए हुए थे। परंतु बराक ओबामा के कार्यकाल में अमेरिका और ईरान के बीच एक परमाणु समझौता हुआ और ईरान से परमाणु प्रतिबंध समाप्त कर दिए गए थे। तब भी इजरायल ने इस समझौते का खुला विरोध किया था। नेतन्याहू ने यहां तक कहा था कि यह संधि एक ऐतिहासिक भूल है। किंतु उस समय इस संधि को ओबामा की बड़ी उपलब्धि बताकर वैश्विक श्रेय लूटा गया था।

ईरान और इजरायल के बीच तनाव लंबे समय से चला आ रहा है। लेकिन इन देशों ने लंबे समय तक छद्म् युद्ध लड़ा है। परंतु जब एक अप्रैल 2024 को इजरायल ने सीरिया पर हमला किया था तब ईरान ने इजरायल पर सीधा हमला बोला था। क्योंकि इस लड़ाई में ईरान समर्थित इस्लामिक रिवॉल्यूशनरी गार्ड के ब्रिगेडियर जर्नल मोहम्मद रजा जाहेदी समेत 8 अधिकारी मारे गए थे। ईरान ने इस हमले के जवाब में अप्रत्याशित रुख अपनाते हुए लगभग 320 ड्रोण और क्रूज मिसाइलों से हमला किया था।। ईरान इजराइल से करीब 1800 किमी की दूरी पर स्थित होने के बावजूद हमला करने में सफल रहा। ईरान ने 1979 की इस्लामी क्रांति के बाद इजरायल से लंबी दुश्मनी के चलते पहली बार यह सैन्य हमला किया था। इस लड़ाई में इजरायल को अमेरिका ने खुली सामरिक मदद की थी। इस संदर्भ में ईरान ने अमेरिका को चेतावनी देते हुए कहा था कि उसने यदि अब इजरायल की मदद की तो नतीजा भुगतने को तैयार रहे। ईरान ने यह पलटवार इसलिए भी किया था, जिससे मध्य-पूर्व की राजनीति में उसके वर्चस्व की महिमा को स्वीकार लिया जाए। यदि वह जवाबी हमला नहीं बोलता तो इजरायल और अमेरिका के खिलाफ खामेनेई की जो धारणा है, वह ध्वस्त हो जाती। दरअसल ईरान इजरायल के अस्तित्व को ही स्वीकार नहीं करता है। उसका मानना है कि इजरायल ने मुस्लिमों की जमीन पर कब्जा कर रखा है।

बराक ओबामा के कार्यकाल में ईरान से हुए परमाणु समझौते के तहत शर्त थी कि ईरान 300 किलोग्राम से ज्यादा यूरेनियम अपने पास नहीं रख सकेगा। ईरान अपनी परमाणु सेन्ट्रीफ्यूजन प्रयोगशालाओं में दो तिहाई यूरेनियम का 3.67 फीसदी भाग ही रख सकेगा। यह शर्त इसलिए लगाई गई थी, जिससे ईरान परमाणु बम नहीं बना पाए। दरअसल यूरेनियम की प्राकृतिक अवस्था में 20 से 27 प्रतिशत ऐसे बदलाव करने होते हैं, जो यूरेनियम को खतरनाक परमाणु हथियार में तब्दील कर देते हैं। ईरान यूरेनियम में परिवर्तन की तकनीक बहुत पहले हासिल कर चुका है। इसी शंका के चलते 300 किलोग्राम से अधिक यूरेनियम नहीं रखने की बाध्यकारी शर्त मानने के लिए मजबूर कर दिया था। लेकिन 2025 में आई रिपोर्ट के मुताबिक ऐसा माना गया कि ईरान के पास बड़ी मात्रा में सवंर्धित यूरेनियम है। जिससे कई घातक परमाणु हथियार बनाए जा सकते हैं। इजरायल अपने अस्तित्व के लिए किसी भी हाल में नहीं चाहता कि ईरान परमाणु संपन्न देश बन जाए। इजरायल की इस मंशा का समर्थन शक्तिशाली देश अमेरिका और उसके तानाशाह की भूमिका में आए राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप भी करते हैं। दोनों देशों की इसी संयुक्त मंशा का परिणाम यह एक ऐसा युद्ध है, जो अब परमाणु नियंत्रण के बहाने धर्म, तेल, गैस और क्षेत्रीय रणनीति की ऐसी कुटिल चालों में उलझता दिखाई दे रहा है, जो विश्व को महाविनाश की ओर ले जा सकता है ?

प्रजातंत्र के लिए जाँच एजेंसियों को निष्पक्ष होना है जरूरी !

विचार

डॉ. चन्दर सोनाने

दिल्ली की विशेष सीबीआई कोर्ट ने हाल ही में दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री श्री अरविंद केजरीवाल और पूर्व उप मुख्यमंत्री श्री मनीष सिसोदिया और सभी अन्य आरोपियों को आरोप तय होने से पहले ही आरोप मुक्त कर दिया। दिल्ली की अरविंद केजरीवाल सरकार की आबकारी नीति में सीबीआई ने श्री केजरीवाल को 176 और श्री सिसोदिया को 530 दिन जेल में रखा था। जिस केस में ये जेल में रहे, उसे कोर्ट ने आरोप तय करने के लायक भी नहीं माना !

सीबीआई की विशेष कोर्ट के जस्टिस श्री जितेन्द्र सिंह ने इस संबंध में कहा कि लोक सेवक को बिना सबूत के आरोपी बना दिया गया है। जाँच अधिकारी की जाँच की जाए। कोर्ट ने कहा कानूनी तौर पर ऐसी कोई सामग्री नहीं है, जिससे गंभीर संदेह बनता है। कोर्ट ने यह भी कहा कि बिना स्वीकार्य सबूतों के आरोपियों को आपराधिक मुकदमे में घसीटना न्याय का दुरूपयोग और आपराधिक प्रक्रिया का गलत इस्तेमाल होगा।

सीबीआई की विशेष कोर्ट का उक्त निर्णय यह बताता है कि सीबीआई हो या अन्य कोई जाँच एजेंसी, उनका निष्पक्ष होना प्रजातंत्र के लिए जरूरी है! सामान्यतः सत्ता में बैठे लोग विपक्षी दलों की सरकारों को गिराने में और उसे बदनाम करने में इन जाँच एजेंसियों का दुरूपयोग करती आ रही है।

देश में सरकार किसी की भी हो, वे विपक्षी दलों की सरकारों को बदनाम करने में जाँच एजेंसियों का उपयोग करती आ रही है। इसका लंबा इतिहास है। जब देश में श्रीमती इंदिरा गाँधी की सरकार थी, तब उन्होंने भी सीबीआई सहित सभी जाँच एजेंसियों का जमकर दुरूपयोग किया। वर्तमान की भाजपा सरकार भी इस मामले में कांग्रेस से अलग नहीं है, बल्कि उससे 4 कदम आगे ही है !

राज्य हो या केन्द्र, किसी भी सरकार के लिए सक्षम विपक्ष प्रजातंत्र के लिए जरूरी है। विपक्ष यदि सक्षम होगा तो वह सरकार पर नकेल डाल सकेगा और सरकारें गलत फैसले लेने से बचती रहेगी। किन्तु अब ऐसा हो नहीं रहा है। यह प्रजातंत्र के लिए खतरा है।

दिल्ली की शराब नीति से जुड़े मामले में लंबी जाँच, गिरफ्तारियां और राजनीतिक आरोप प्रत्यारोपण के बाद जब अदालतें कई आरोपियों को राहत देती है या सबूतों की कमजोरी पर सवाल उठाती है, तो बहस केवल एक केस तक सीमित नहीं होती। यह बहस उस बड़े सवाल में बदल जाती है कि क्या भारत की राजनीति में आरोप ही सजा बनते जा रहे हैं! दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री श्री अरविंद केजरीवाल और उप मुख्यमंत्री श्री मनीष सिसौदिया जैसे नेताओं पर कार्रवाई, जेल और हाल ही में न्यायिक राहत, इस पूरे क्रम ने एक बार फिर यह यक्ष प्रश्न खड़ा कर दिया है कि जाँच एजेंसियों, न्यायिक प्रक्रिया और राजनैतिक नैरेटिव के बीच संतुलन कहाँ है ? अन्ततः यह बहस किसी एक पार्टी की जीत या हार की नहीं है। यह उस लोकतांत्रिक संतुलन की बहस है, जिसमें एजेंसियाँ स्वतंत्र रहे, राजनीति जवाबदेह रहे और न्यायिक प्रक्रिया समयबद्ध हो। आरोप जरूरी हो सकते हैं, पर लोकतंत्र की मजबूती इस बात में है कि अंतिम सत्य आरोप नहीं, बल्कि प्रमाण और न्यायिक निष्कर्ष तय करें।

देश के प्रजातंत्र में अनेक उतार-चढ़ाव आते रहे हैं। समय साक्षी है। सबका हिसाब-किताब होता है। देश के प्रजातंत्र के हित में यह जरूरी है कि देश की सभी जाँच एजेंसियां निष्पक्ष हो और अपने दायरे में रहकर कार्य करें, तभी प्रजातंत्र जिंदा रह सकेगा।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

ढलती उमर पर चढ़ता होली का रंग

व्यंग्य

डॉ. प्रेमचंद द्वितीय

लेखक व्यंग्यकार हैं।

कस्बे में होली पर इकट्ठा होने वाली टोली में उम्र दराज, सेवानिवृत्ति, ओल्ड फ्रेंड,शरीर से पस्त, मन से अनुभवी और हर चीज के इच्छुक ,बैसाखी से छुक-छुक चलने वाले, कुछ एक प्रशासनिक अधिकारी,कुछ,एसी रूम,से बाहर निकले अधिकारी, तो कुछ सिग्नेचर पावर जाने से पावरलेस और चेहरे पर झुर्रियां सिलवटे, लेकिन उनका ध्यान हटाने के लिए,डाई,रंगे सुसज्जित बाल,लगभग किसी के पास लघु, तो किसी के पास दीर्घ अनुभव वाले टोली बनाकर होली खेलने के लिए अज्ञान चबूतरे पर इकट्ठा हुए ,तो कुछ ठिठोली करने लगे ,इस ठिठोली को बंद करते हुए ऐसे विभाग के पब्लिक रिलेशन ऑफिसर जिन्हें अपने ऑफिस के हर कार्यक्रम में पब्लिक को जोडने जिम्मा था बोले होली के त्यौहार को पब्लिक रिलेशन से जोड़ने के लिए अपने-अपने सुझाव दीजिए,वे बोले उनका पब्लिक से रिलेशन था लेकिन जैसे ही रिटायर हुआ रिलेशन पर लोशन लग गया और मैं अकेला पड़ गया। जब अकेले पड़ने की बात सामने आई तो उम्र दराज में से कुछ बोले हमारे ऑफिस के बॉस की घरवाली किसी के साथ ,हो ली, तो वे भी अकेले पड़ गए! कुछ बोले हमारी,भागवान,भी भगवान के साथ हो ली तो अकेले हम भी हैं इसीलिए तो यह,टोली,होली पर अकेलेपन को दूर करने के लिए तैयार की है।

होली की टोली में शरीक अधेड़ की लाइन क्रॉस कर सीनियर सिटीजन बने लचकराम जी बोले ढलती उम्र की अनेक त्रासदियां है किसी को औलाद की तो किसी को परिवार जन त्रास देते हैं,तो किसी की शारीरिक्त त्रास झेलने पड़ते हैं ।इस पर प्रोफेसर नंदलाल बोले घर परिवार में हम जैसे वृद्धों के साथ दूरी बना ली है। कईयों की दखलंदाजी दूर करने के लिए हाशिए पर धकेलते हैं।

इस पर साठ वसंत होली खेल चुके पंडित शिवनारायण जी बोले एक सर्वे में छपा था

जिसमें उम्र दराज हाइपर फोबिया अस्थिरता के भाव तो किसी के नेत्रों की रोशनी गुल हो जाने से उनमें चिडचिडपन, उत्तेजना पाई जाती है। ढलती उम्र पर पंडित जी के संवाद सुनकर सुनील भैया बोले उम्रदराजी के विकारों से छुटकारे के लिए तो होली की टोली बनाई है ताकि यह सारी बातें होली के दहन में शमन हो जाए।

इस पर पेंशन से टेंशन की होली जला चुके भारतलाल जी बोले होली पर जब साठ, सत्तर के उम्र चढ़े लोग डांस करेंगे,हास परिहास करेंगे तो ढलती उम्र की कमर को कस देंगे ! वे बोले परंपराओं के रंगों से इस टोली में होली के अलग-अलग रंग देखने को मिल रहे है । इस पर इतिहास का बखान करने वाला अखिलेश जी बोले अलग-अलग इलाकों में किस्म किस्म की होली मनाई जाती है ।लेकिन यह टोली वाली होली ऐसे मनाई जिसमें गठबंधन सरकारों की तरह सबका सफल गठबंधन हो। हम सब अलग-अलग इलाके में रहे हैं,किसी ने ता उम्र मालवा में सरकारी होली भी जलती देखी है , हम में से अनेक सरकारी रहे इसलिए रंग ढुले सरकार का और उम्र दराज खेले होली ! इस तर्ज पर टोली को होली खेलना चाहिए। कई जगह होली रंग गुलाल से ज्यादा नाच और नाट्य के रंगत से मनाई जाती है, इस टोली में शरीक अनेक लोगों ने जिंदगी भर लोगों को कामकाज के नचाया वह अपने नाट्य प्रदर्शन से होली को यादगार बना सकते हैं। इस पर प्रोफेसर लक्ष्मण जी बोले बरसाना की लठमार होली को हम लोगों को नहीं मनाना है अन्यथा होली पर टूटी हड्डी जुड़ नहीं पाएगी ।इस पर बुद्धिजीवी किस्म के मेहताजी बोले होली पर हमारी बिरादरी का मूर्ख सम्मेलन आयोजित कर मूर्खों की टोली बनने का खिताब भी हम हासिल कर सकते हैं। और यह बात जरूर ध्यान रखना है कि हमें एलीफेंट, गंधर्व, हार्स फेस्टिवल वाली होली खेलना भी सीखना होगी। इस पर एक सीनियर बोले हम जैसे उम्रपार लोगों को सुरीली महफिले जमाना चाहिए, होली की राग रागिनी के साथ भांग के रस का रसास्वादन कर टोली के सदस्य घर पहुंचे तो बरसाना की होली की तर्ज पर घर की महिलाएं टोलीबाजों को स्त्री वेशभूषा पहना कर नचाए और होली की टोली ढलती उम्र होली के जरिए अपने उम्र के तटबंध से किनारा कर सके!

अमृतकाल में चार्ल्स डारविन: अंधेरी सुरंग में लंबे सफर की शुरुआत

विज्ञान और हम

श्याम बोहरे

लेखक सामाजिक कार्यकर्ता हैं।

1925 में अमेरिका के टेनसी प्रांत के डेटन कस्बे में 24 साल के एक शिक्षक जान स्कोप्स का मानना था कि जैव-विकास और चार्ल्स डारविन की बात किये बगैर जीव विज्ञान पढ़ाया ही नहीं जा सकता। स्कोप्स ने तो यह भी बताया कि सभी शिक्षक अपनी कक्षा में 'ए सिविक बायोलाजी' नामक किताब पढ़ाते हैं जिसमें डारविन का सिद्धान्त समझाया गया है। जब लोगों ने स्कोप्स से पूछा कि यह बात वह अदालत में कहने के लिए तैयार हैं? उसके हां कहते ही अगले दिन एफआईआर दर्ज की गई और जनाब स्कोप्स को गिरफ्तार कर लिया। शिक्षक स्कोप्स पर आरोप था कि उसने जैव विकास पढ़ाकर बटलर कानून तोड़ा है। अमेरिकन सिविल लिबर्टी यूनियन को यह सूचना मिलते ही सीनियर वकील क्लेरेन्स डैरो यह मुकदमा लड़ने के लिए डेटन रवाना हो गए।

'सौ साल पहले हमें तुमसे प्यार था, आज भी है और कल भी रहेगा'। जब प्यार किसी से होता है फिल्म का यह गाना महान वैज्ञानिक चार्ल्स डारविन के सन्दर्भ में याद आना संयोग मात्र नहीं वरन हकीकत नजर आता है। सौ साल पहले 1925 में अमेरिकन सरकार को चार्ल्स डारविन से 'प्यार' तो था लेकिन नफरत से भरपूर। कुछ - कुछ उसी तर्ज पर आज हमारी सरकार को भी सौ साल बाद उनसे प्यार हो गया है, शायद इसीलिये खबर है कि स्कूलों के लिए एन सी ई आर टी की किताबों से जनाब डारविन को बे-आबरु करके रुखसत कर दिया गया है। खुदा जाने यह भी 'डील' का हिस्सा हो? ट्रम्प साहब ने उनके दोस्त मोदी जी को कहा हो यार सौ साल पहले अमेरिका ने चार्ल्स डारविन को ठिकाने लगा दिया था, लेकिन यह ससुरा फिर उबर आया, हमारे यहां प्रबुद्ध वैज्ञानिक और जागरुक जनता अधिक हैं, गोदी मीडिया और अंधभक्त दोनों ही नहीं होने से, फिलवक्त हम इसका कुछ बिगाड़ नहीं सकते। तुम्हारा गुलाम मीडिया एक इशारे पर वैज्ञानिकों और जागरुक नागरिकों की खाट खड़ी कर देगा इसलिए तुम फौरन के पेश्तर इसे निपटा दो। डारविन के विरोध और सत्ता के चरित्र को समझने के लिए अमेरिका की अदालत में सौ साल पहले चले एक मुकदमे के कुछ तथ्य समझना रोचक होगा।

1925 में अमेरिका के टेनसी प्रांत के डेटन कस्बे में 24 साल के एक शिक्षक जान स्कोप्स का मानना था कि जैव-विकास और चार्ल्स डारविन की बात किये बगैर जीव विज्ञान पढ़ाया ही नहीं जा सकता। स्कोप्स ने तो यह भी बताया कि सभी शिक्षक अपनी कक्षा में 'ए सिविक बायोलाजी' नामक किताब पढ़ाते हैं जिसमें डारविन का सिद्धांत समझाया गया है। जब लोगों ने स्कोप्स से पूछा कि यह बात वह अदालत में कहने के लिए तैयार हैं? उसके हां कहते ही अगले दिन एफआईआर दर्ज की गई और जनाब स्कोप्स को गिरफ्तार कर लिया। शिक्षक स्कोप्स पर आरोप था कि उसने जैव विकास पढ़ाकर बटलर कानून तोडा है। अमेरिकन सिविल लिबर्टी यूनियन को यह सूचना मिलते ही सीनियर वकील क्लेरेन्स डैरो यह मुकदमा लड़ने के लिए डेटन रवाना हो गए।

यद्यपि डेटन का उदारवादी समूह चाहता था कि प्रसिद्ध विज्ञान कथा लेखक एचजी वेल्स इस मुकदमे की पैरवी करते। सरकार की तरफ से विलियम जेन्गिस ब्रायन, जो वकील कम और राजनेता के रुप में अधिक जाने जाते थे मुकदमे के लिए आ धमके, ब्रायन तीन बार राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार रह चुके थे और बहुत दिनों से जैव-विकास के खिलाफ अभियान चला रहे थे, उन्हें तो यह मुकदमा अपने अभियान और राजनीति चमकाने का सुनहरा मौका था। मुकदमे की सुनवाई करने वाले जज जान रास्टन थे। उस समय अमेरिका में 'अमृतकाल' चल रहा था जिसके तहत डारविन को पढ़ाना हिमाकत ही थी, टेनसी प्रांत के कानून के खिलाफ थी। पुराने ख्यालों के बुनियादपरस्त;फंडामेंटलिस्ट लोग बाइबिल में लिखी हर बात को अंतिम सच मानने पर आमादा थे, उन्हें डारविन का जैव-विकास का सिद्धांत बाइबिल के खिलाफ नजर आता था इसलिए इसे स्कूलों में कैसे पढ़ाया जा सकता था? बा-कायदा डारविन को स्कूल से बाहर करो मुहिम चली। कानून बनाने में माहिर बटलर साहब ने जैव विकास निषेध कानून बनाया था इसलिए इसका नाम बटलर कानून था। टेनसी प्रांत के अलावा कई अन्य प्रांतों ने भी इसी तरह के विधेयक पारित किये थे। एक तरफ डारविन के सिद्धान्त की मुखालफत हो रही थी तो दूसरी ओर अमेरिकन सिविल लिबर्टी यूनियन ने अभिव्यक्ति की आजादी पर खतरा मानते हुए घोषणा की, यदि कोई शिक्षक इस कानून का उल्लंघन करेगा तो यूनियन उसे कानूनी सहायता देगा।

डेटन की अदालत में जैसे ही यह मुकदमा शुरु हुआ देश भर में हलचल तेज होने लगी, तमाम मीडिया सक्रिय हो गया, मुकदमे का आंखों देखा हाल रेडियो पर सुनाने का इंतजाम किया गया। डेटन में विभिन्न वर्गों का उत्साह देखने लायक था, गली-गली में पादरियों के प्रवचन होने लगे, मेले जैसा माहौल बन गया, तरह तरह की दुकानें सज गईं, कई तरह के धंधे चल निकले, नुक्कड़ों पर

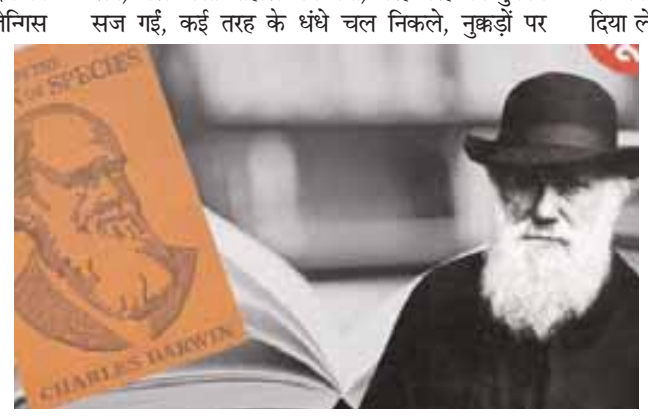

सर्कस भी धंधा करने लगे। गहमा-गहमी के बीच 10 जुलाई 1925 को सुबह सुनवाई शुरु हुई, इसके पहले ही अदालत में लोगों का भारी जमावड़ा लग गया था। सुनवाई के पहले ज्यूरी का चुनाव हुआ। सबसे पहले सबूत के तौर पर बुक आफ जिनेसिस पेश की गई। इसके बाद स्कूल के बच्चों की गवाहियां हुईं। सभी बच्चों ने कहा कि उनके शिक्षक स्कोप्स ने उन्हें पढ़ाया था कि मानव का विकास एक कोशिय जन्तुओं से हुआ है। सरकारी वकील के हिसाब से मुकदमा बस इतना ही था। दूसरी ओर बचाव पक्ष इस मुकदमे के जरिये चाहता था कि जैव विकास की प्रमाणिकता पर बहस हो, वैज्ञानिक प्रमाण प्रस्तुत हो, अभिव्यक्ति की आजादी पर बहस हो जिससे बटलर कानून को असंवैधानिक करार दिया जा सके। बचाव पक्ष का मुख्य तर्क था कि बाइबिल की शाब्दिक व्याख्या से अकादमिक काम नहीं चलेगा, जबकि धर्मपरस्त लोग मानते हैं कि बाइबिल में सब कुछ दिया है और सच वही है जो बाइबिल में दिया है। अदालत की कार्यवाही प्रार्थना से शुरु होती थी। इस पर बचाव पक्ष के वकील ने आपत्ति की जिसे जज ने खारिज तो कर दिया लेकिन अदालत में एक पोस्टर लगाया गया जिसमें लिखा था कि बाइबिल पढ़ो। बचाव पक्ष के वकील ने यह दलील देते हुए कि यह मेरे मुवक्किल के विरुद्ध है इस पोस्टर को हटाने की मांग की जिसे जज ने मान लिया।

लेकिन असली खेल तो तब शुरु हुआ जब बचाओ पक्ष की उम्मीदों पर पानी फेरते हुए जज ने जीव वैज्ञानिकों, भूवैज्ञानिकों सहित अन्य महत्वपूर्ण वैज्ञानिकों को गवाही देने की अनुमति इस शर्त पर दी कि जीव वैज्ञानिक की कुछ दलीलों को सुनने के बाद वे तय करेंगे कि इसकी जरुरत है या नहीं। जज साहब की दूसरी शर्त थी कि गवाही के दौरान ज्यूरी के सदस्य नहीं रहेंगे क्योंकि उनकी मानसिकता पर इसका असर हो सकता है। इस तरह ज्यूरी की गैरहाजिरी में जीव वैज्ञानिक मैनार्ड मैटकाफ की गवाही शुरु हुई। अपनी गवाही में उन्होंने बताया कि कैसे धरती पर विभिन्न जीव धीरे-धीरे विकसित हुए और इस सिद्धांत के पक्ष में किस तरह के सबूत मिले हैं आदि। वैज्ञानिक तर्कों को कुछ समय तक बर्दाश्त करने के बाद जज राल्टन साहब ने आदेश दिया कि इस तरह की वैज्ञानिक तथ्यपरक बातों की गवाही की अनुमति नहीं दी जा सकती। ज्यूरी को इस तरह की गवाही को सुनने से पहले ही मना कर दिया था। सरकारी वकील ने तो यहां तक कह दिया कि इस तरह के मुकदमों में विशेषज्ञों का कोई सम्बंध नहीं हो सकता। जिन विशेषज्ञों के विज्ञान सम्मत तथ्य मुकदमे का फैसला करने उपयोगी हो सकते थे, उन्हें ही नकार कर बचाव पक्ष को पूरी तरह से निर्जीव कर दिया।

बचाव पक्ष का इरादा था कि इस मुकदमे के माध्यम से समाज में एक बहस चला पायेंगे, जो सत्ता पक्ष को मंजूर नहीं था, इसलिए अदालत ने वैज्ञानिक पक्ष की गवाही की अनुमति नहीं दी। वैज्ञानिकों की गवाही को नकार कर अदालत ने स्पष्ट कर दिया कि इतिहास और विज्ञान क्या है? इसका फैसला इतिहासकारों और वैज्ञानिकों द्वारा नहीं बल्कि धर्माचारियों द्वारा किया जायेगा। दुनिया को समझने के लिए कौन से सिद्धांत माने जायेंगे और बच्चों को पढ़ाये जायेंगे यह वैज्ञानिक नहीं धार्मिक लोग तय करेंगे ।

मुकदमे के सम्बन्ध में और विस्तार से जानकारी एकलव्य द्वारा संचालित स्त्रोत पत्रिका के अप्रैल 2003 के अंक में प्रकाशित,विज्ञान लेखक सुशील जोशी के लेख 'धर्म और विज्ञान का बन्दर मुकदमा' से प्राप्त की जा सकती है, जहां से मुकदमे सम्बंधी जानकारी आभार सहित इस लेख में उपयोग की गई है।

जहां एक ओर वैज्ञानिक अनुसंधान और उसका उपयोग करते हुए अमेरिका तो अपने सौ साल पहले बुनियादपरस्त संकुचित सोच से आगे बढ़ता दिख रहा है, वहीं हमारे हुकमरान वैज्ञानिक सोच को धकियाते हुए सैकड़ो साल पीछे जाने के लिए जमीन आसमान एक कर रहे हैं। डारविन को एनसीईआरटी की किताबों से विदा करना, पीरियाडिक टेबल को पुस्तकों से दूर रखना, गोबर की महिमा स्थापित करने के लिए अनुसंधानों को अनुपात से अधिक प्रोत्साहित करना, गोमूत्र से कैंसर सहित अनेकों असाध्य बीमारियों के इलाज, नाली की गैस से चाय बनाने के नुस्खे, कोरोना सरीखे गम्भीर मर्ज को थाली बजाकर दूर करने के कर्मकाण्ड, आदि। यह तो अंधेरी सुरंग में लंबे सफर की शुरुआत की एक झांकी मात्र है।

बादलों की तरह आकृतियां बनाती चोटियाँ

हमारी दुनिया

ब्रजेश कानूनगो

लेखक स्तंभकार हैं।

बचपन के दिनों में गर्मियों की रात को जब हम खुली छत पर सोने जाते तो दिन अस्त होने के पहले आकाश में छाए बादलों में अनेक आकृतियों की कल्पना करके असीम आनंद से भर जाते थे। बादलों में कभी कोई पक्षी दिखता तो कभी हाथी, बंदर या मनुष्य की छवि नजर आती थी। हम सब के लिए यह बहुत रोमांच और कुतुहल के दृश्य होते थे। ऐसी ही कुछ अनुभूति अफ्रीका के बुर्किना फासो के लेराबा प्रांत में स्थित सिंदौ की चोटियाँ (Peaks of Sindou) देखकर होने लगती है। ट्रैवलर दाऊद अखुनजादा के वीडियो के जरिए हमने इस इलाके की आभासी सैर करते हुए महसूस किया कि देखने में ये किसी 'पत्थरों के जंगल' या किसी काल्पनिक शहर की मीनारों जैसी लगती हैं। किंतु जब हम इन चोटियों को देखने में अपनी कल्पनाशीलता को भी जोड़ लेते हैं तो इनमें कई मानव आकृतियां दिखाई देने लगती हैं। किसी चोटी में हैट लगाए कोई पुरुष दिखता है तो किसी में शिशु को उठाए कोई माँ दिखाई देने लगती है।

सिंदौ की चोटियाँ (Peaks of Sindou) दुनिया के सबसे अद्भुत और सुंदर भूवैज्ञानिक संरचनाओं में से एक हैं। यह स्थान न केवल अपनी प्राकृतिक सुंदरता के लिए प्रसिद्ध है, बल्कि इसका सांस्कृतिक और आध्यात्मिक महत्व भी बहुत गहरा है।ये चोटियाँ मुख्य रूप से बलुआ पत्थर (Sandstone) से बनी हैं। लाखों वर्षों तक हवा और बारिश के कारण हुए कटाव (Erosion) ने इन चट्टानों को नुकीले स्तंभों, गुंबदों और अजीबोगरीब आकृतियों में बदल दिया है। इनका रंग समय और धूप के अनुसार बदलता रहता है, जिससे भिन्न समय में भिन्न कोण से इनका अलग सौंदर्य नजर आने लगता है।

दरअसल ,प्रकृति एक अद्भुत कलाकार है, जो हवा, पानी और समय के मेल से पत्थरों को तराश कर ऐसी कृतियाँ बना देती है जिन्हें देखकर मानवीय वास्तुकला भी फीकी लगने लगती है। भौगोलिक रूप से इस प्रक्रिया को अपक्षय (Weathering) और अपरदन (Erosion) कहा जाता है। दुनिया में ऐसी कुछ प्रमुख संरचनाओं पर नजर डालें तो इनमें अमेरिका के एरिजोना (संयुक्त राज्य अमेरिका) में ग्रैंड कैनयन, नदी द्वारा किए गए कटाव का सबसे भव्य उदाहरण है। करोड़ों वर्षों तक कोलोराडो नदी के बहाव ने चट्टानों को काटकर इस दर्शनीय और अद्भुत विशाल घाटी का निर्माण किया है। यहाँ की चट्टानें पृथ्वी के भूगर्भीय इतिहास के लगभग 2 अरब साल पुराने रहस्यों को संजोए हुए हैं। इसकी गहराई 1.8 किमी तक है। यह अपनी अद्भुत लाल परतों और विशालता के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ हाइकिंग और रिवर राफ्टिंग काफी लोकप्रिय है। इसी तरह तुर्की के अनातोलिया स्थित कप्पाडोसिया (Cappadocia) के अजीबो-गरीब 'फेयरी चिमनी' (Fairy Chimneys) और गुफाएँ ज्वालामुखी विस्फोट के बाद हवा और बारिश के कटाव से बनी हैं। यहाँ की नरम 'टफ' चट्टानें आसानी से कट जाती हैं। यह ज्वालामुखी राख (Soft Tuff) और ऊपर की कठोर चट्टानों के असमान कटाव का परिणाम है। यह जगह अपने हॉट एयर बैलून राइड और जमीन के नीचे बसे प्राचीन शहरों के लिए मशहूर है। एरिजोना-यूटा सीमा, अमेरिका में द वेव (The Wave) लहरों के आकार की अद्भुत चट्टानी संरचना है जो सैंडस्टोन (बलुआ पत्थर) पर हवा के कटाव (Wind Erosion) के कारण बनी है। यहाँ की धारियां जुरासिक काल के दौरान रेत के टीलों के जमा होने और फिर हवा द्वारा उन्हें तराशने से बनी हैं। इसकी संवेदनशीलता के कारण यहाँ जाने के लिए लॉटरी सिस्टम से बहुत कम परमिट दिए जाते हैं। चीन के हुनान प्रांत में स्थित जांगजियाजी नेशनल फॉरेस्ट पार्क (Zhangjiajie) जिससे प्रसिद्ध फिल्म 'अवतार' के पहाड़ों की प्रेरणा से ली गई है। ये ऊंचे स्तंभ जैसे पहाड़ पानी के कटाव और पौधों की जड़ों के फैलाव के कारण बने हैं। ये क्वार्ट्ज

सैंडस्टोन के स्तंभ लाखों वर्षों के भौतिक कटाव का परिणाम हैं। यहाँ दुनिया का सबसे ऊंचा आउटडोर लिफ्ट और कांच का पुल सैलानियों के आकर्षण का केंद्र है। उत्तरी आयरलैंड में जाइंट्स कॉजवे (Giant's Causeway) पर समुद्र की लहरों और ज्वालामुखी क्रिया के मेल से यहाँ लगभग 40,000 षट्कोणीय (He&agonal) बेसाल्ट स्तंभ बने हैं। यह ज्वालामुखी फटने के बाद लावा के तेजी से ठंडा होकर सिकुड़ने से बनी अनोखी ज्यामितीय संरचनाएं हैं। इसे यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल का दर्जा प्राप्त है और यह अपनी रहस्यमयी सुंदरता के लिए जाना जाता है।

इन्हीं अनोखी प्राकृतिक संरचनाओं के क्रम में सिंदौ की चोटियाँ भी अपना बहुत महत्व रखती हैं। बुर्किना फासो के सबसे लोकप्रिय पर्यटन स्थलों में से यह एक है। स्थानीय सेनुफो (Senufo) लोगों के लिए यह स्थान अत्यंत पवित्र है। प्राचीन काल में, ये ऊँची और टेढ़ी-मेढ़ी चोटियाँ आक्रमणकारियों से बचने के लिए एक प्राकृतिक सुरक्षा दीवार का काम करती थीं।आज भी, स्थानीय लोग यहाँ अपने पूर्वजों का सम्मान करने और विशेष धार्मिक अनुष्ठान करने के लिए आते हैं। गाँव के कुछ हिस्से पर्यटकों के लिए प्रतिबंधित हैं क्योंकि वे पवित्र माने जाते हैं।

बुर्किना फासो के सिंदौ शहर के बहुत करीब और 'बन्फोरा' (Banfora) शहर से लगभग 50 किमी की दूरी पर स्थित इस जगह पर्यटकों के लिए पैदल चलने के रास्ते बने हुए हैं। ट्रैवलर के वीडियो में हमने देखा कि चोटियों के बीच से गुजरना एक भूलभुलैया में चलने जैसा अनुभव देता है। यहाँ से सूर्यास्त का नजारा अद्भुत होता है, जब ढलती धूप चट्टानों को सुनहरा और नारंगी रंग देती है। स्थानीय कहानियों के अनुसार, ये चट्टानें आज भी 'जीवित' मानी जाती हैं और विश्वास किया जाता है कि ये अनोखी चोटियाँ गांव की रक्षा करती हैं। ये ऐसी रोमांचक और अद्भुत चट्टाने हैं जिन्हें देखकर बादलों की तरह ही भिन्न आकृतियां इनमें खोजी जा सकती हैं।

एक गैर जरूरी जंग, यह आग कब, कैसे बुझेगी?

मुद्दा

आरबी त्रिपाठी

लेखक स्तंभकार हैं।

दो- प्रतिदावों के बीच अमेरिका इजराइल द्वारा एक साथ ईरान पर जबरन थोपी गई जंग को सप्ताह भर होने जा रहा है। महा विनाश, एक दूसरे के सामरिक ठिकानों यहां तक कि रहवासी इलाकों, प्रतिष्ठानों पर ताबड़तोड़ हमले किये जा रहे हैं। अमेरिकी हमले में ईरान के सुप्रीम लीडर अयातुल्ला खामनेई के मारे जाने के बाद आक्रामकों का एक महत्वपूर्ण लक्ष्य तो पूरा हो गया लेकिन ईरान को परमाणु हथियारों से रोकना तथा तेल के अकूत भंडारों पर अपना प्रभुत्व कायम करना आगे का टारगेट हो सकता है। सबसे दुखद और भयावह घटना जिसमें तकरीबन डेढ़ सौ से ज्यादा मासूम स्कूली बच्चों की मौतें हैं जो अक्षम्य अपराध की श्रेणी में माना जाना चाहिये। इस घटना की महज निंदा करना पर्याप्त नहीं होगा। इनके अतिरिक्त भी बड़ी संख्या में बेकसूर लोग मारे जा रहे या घायल हो रहे हैं ।

क्या यह सब खुद को स्वयंभू समझने वाले और कथित शांतिदूत की सनक, धमक, ठसक, मनमानी तथा स्वयं को सर्वशक्तिमान समझकर अन्य को कमजोर समझने की नादान भूल की परिणिति नहीं है? यह एक थोपी हुई जंग के रूप में इतिहास में दर्ज होगी दुनिया भर के अखबार तथा अल-जजीरा खबरिया चैनल, बीबीसी और अन्य भारतीय चैनल भी दिन रात जंग से जुड़ी खबरें, अपडेट तथा अटकलें प्रसारित करने में लगे हुए हैं।

जवाबी कार्रवाई में ईरान ने भी ना केवल अमेरिका और इजराइल बल्कि खाड़ी क्षेत्र के 8 देशों पर अपनी मिसाइलें दागी, ड्रोन से सटीक हमले भारी तबाही मचाई है। यानी ईरान को कमतर आंकना बड़ी भूल कही जायेगी। क्या कुल मिलाकर यह 'तेल का खेल' नहीं है? इसके लिये जान- माल की भारी क्षति पहुंचाई जाना कहां तक उचित है? स्पष्ट लग रहा है कि यदि यह जंग लम्बी खिंची, रक्षा विशेषज्ञ जैसा अनुमान लगा रहे हैं तो वैश्विक स्तर पर अफरा तफरी, क्रूड ऑयल, तेल का भारी संकट अवश्यंभावी होगा। इस युद्ध का परिणाम जो भी हो इसके जख्म भी बरसों-बरस नहीं भर सकेंगे। सोचिये, रूस-यूक्रेन युद्ध को चार साल हो गये लेकिन कोई नतीजा नहीं निकला, हाल ही में अफगानिस्तान और पाकिस्तान के बीच संघर्ष युद्ध में बदल गया, पाकिस्तान- बलुचिस्तान के संघर्ष तथा उधर थाईलैंड-कंबोडिया के बीच युद्ध की खबरें जब तब आती रहती है। पाक के अंदरूनी हालात भी ठीक नहीं है और इमरान खान की रिहाई को लेकर लोग सड़कों पर उतर आते हैं। इसके बावजूद पाकिस्तान, भारत के

विरूद्ध साजिशें रचने से बाज नहीं आ रहा। सो, भारत के आसपास पड़ोसी देशों में भी शांति, अमन चैन नहीं है।

बीते जून माह में भी हमने ईरान इजराइल युद्ध में अमेरिका के कूद पड़ने को लेकर लिखा था कि क्या दुनिया बारूद के ढेर पर बैठी है? आज फिर हम इसी आशंका को दोहरा रहे हैं कि वाकई इस जंग में कुछ भी हो सकता है। रक्षा क्षेत्र के जानकारों के मुताबिक युद्ध में परमाणु हथियारों का इस्तेमाल यदि होता है (हालांकि यह आशंका नहीं है) तो यह घातक होगा। यदि ऐसा हुआ तो सम्पूर्ण मानवता, इंसानियत के लिये खतरा होगा।

जंग कहीं भी हो, किसी के बीच हो इसके दुष्परिणाम के रूप में विध्वंस और विनाश ही होता आया है। पिछले समय के अनेक युद्धों से यह स्पष्ट रूप से सामने आया भी है। आज भी हिरोशिमा और नागासाकी की भीषण तबाही तथा बरसों के जख्मों को कैसे भुलाया जा सकता है।

मीडिया की अलग-अलग रिपोर्ट के मुताबिक ईरान के विरूद्ध संयुक्त हमले में बी 2 बॉम्बर, फाइटर, मिसाइलों, खतरनाक बम, ड्रोन आदि के इस्तेमाल से वहां का आकाश और जमीन पर धुंआ-धुंआ दिखाई दे रहा है, इससे पर्यावरण और तापमान बढ़ने का खतरा है। जंग में आंकड़ों पर नजर डालें तो अकेले ईरान में मौत का आंकड़ा एक हजार पार चला गया है। इनमें डेढ़ सौ से अधिक स्कूली बच्चे शामिल हैं जिन्हें दफनाने के हृदय विदारक दृश्य चैनलों पर दिखाये गये हैं। ताजा रिपोर्ट के अनुसार श्रीलंका के नज़दीक ईरानी जहाज पर पनडुब्बी हमले में अनेक लोग घायल और लापता बताये जा रहे हैं। यानी युद्ध की विभीषिका ने श्रीलंका के समीप दस्तक दे दी है जो भारत के लिये भी चिंता का विषय होना चाहिये। ईरान हमारा पुराना मित्र देश है जिससे दोस्ताना ताल्लुकात रहे हैं। अभी तक तो हमारा स्टेंड एकदम स्पष्ट नहीं कहा जा सकता है। बहुत फूंक फूंककर कदम बढ़ाने की जरूरत है। इस जंग में रूस और चीन से भी सुलह की कोशिश की जाने की उम्मीद की जा रही है लेकिन अब इस युद्ध के बहु राष्ट्रीय रूप लेने से हर कोई 'वेट एंड वॉच' की नीति अपनाते दिखाई दे रहे हैं। यह भी विचारणीय प्रश्न है कि क्या आज के विश्व में क्या ऐसा कोई नेतृत्व शेष है जो अपने तई इस भीषण जंग को रुकवा सके? यह देशों की अपनी सुरक्षा और संप्रभुता की रक्षा करने के मूल उद्देश्यों से जुड़ा हुआ है।

शब्दों के छींटों संग मनाया जाएगा रंग पर्व, व्यंग्यकार करेंगे रचनाओं का पाठ

देवास। रंगों के पर्व होली और रंगपंचमी के मध्य शहर की साहित्यिक संस्था 'संवाद' द्वारा एक अभिनव साहित्यिक आयोजन किया जा रहा है। यह कार्यक्रम शनिवार 7 मार्च को शाम 4 से 6 बजे तक महाराष्ट्र समाज सभागृह, पुराना महेश टॉकीज परिसर में आयोजित होगा। इस विशेष आयोजन में शहर के प्रख्यात व्यंग्यकार अपनी व्यंग्य रचनाओं का पाठ कर शब्दों के छींटों के साथ रंग पर्व का अनोखा उत्सव मनाएंगे। कार्यक्रम का उद्देश्य साहित्य के माध्यम से होली के उल्लास और सामाजिक सरोकारों को रचनात्मक रूप में प्रस्तुत करना है। आयोजन में वरिष्ठ लेखक सुधीर सोमानी, विजय श्रीवास्तव, प्रदीप उपाध्याय, संदीप भटनागर, श्रीमती यशोधरा भटनागर, मोहन वर्मा, दीपक कर्पे, भावेश कानूनगो, हरी जोशी, ओम वर्मा और सुधीर महाजन अपनी व्यंग्य रचनाओं का पाठ करेंगे। संस्था ÷संवाद÷ ने शहर के सभी साहित्य प्रेमियों, पाठकों और संस्कृति प्रेमियों से इस अनोखे कार्यक्रम में उपस्थित होकर साहित्य और रंगों के इस उत्सव का आनंद लेने की अपील की है।

महिला ने खाया जहरीला पदार्थ, मौत

बैतूल। बोरदेही थाना क्षेत्र के टापरवाणी गांव में एक महिला की जहरीला पदार्थ खाने से मौत हो गई। मृतका की पहचान 39 वर्षीय प्रमिला पति शम्मूलाल के रूप में हुई है। जानकारी के अनुसार 4 मार्च को प्रमिला और उनके पति के बीच किसी बात को लेकर विवाद हुआ था। इसके अगले दिन, 5 मार्च की दोपहर को महिला ने कथित तौर पर जहर खा लिया। तबीयत बिगड़ने पर परिजनों ने उसे बोरदेही से जिला अस्पताल

बैतूल पहुंचाया, जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। शुक्रवार को जिला अस्पताल में महिला का पोस्टमार्टम किया गया। घटना से परिजन सदमे में हैं और मौत की स्पष्ट वजह नहीं बता पा रहे हैं। पति शम्मूलाल ने भी इस संबंध में कोई जानकारी नहीं दी है। मृतका के भाई ने बताया कि प्रमिला के चार बेटियां और एक बेटा है, जिनमें सबसे बड़ी बेटी लगभग 14 साल की है। भाई के अनुसार, पति गांव में खेती और मजदूरी करता है और अक्सर शराब पीकर झगड़ा करता था। आशंका है कि इसी पारिवारिक तनाव के चलते प्रमिला ने यह कदम उठाया। पुलिस ने इस मामले में मर्ग कायम कर लिया है। जांच डायरी बोरदेही थाने को भेज दी गई है, जहां पूरे मामले की विस्तृत जांच की जाएगी। महिला ने किस प्रकार का जहर खाया था, यह अभी स्पष्ट नहीं हो पाया है।

चिचोली बस स्टैंड पर चलेगा सरकारी बुलडोजर

20 अतिक्रमणकारियों को अंतिम नोटिस जारी, 7 दिन की मोहलत

बैतूल। नगर परिषद चिचोली ने बस स्टैंड क्षेत्र की शासकीय भूमि से अतिक्रमण हटाने के लिए सख्त कदम उठाए हैं। नवनिर्मित बस स्टैंड के आसपास सरकारी जमीन पर कब्जा जमाए 20 अतिक्रमणकारियों को अंतिम नोटिस जारी किया गया है। मुख्य नगर पालिका अधिकारी सैयद आरिफ हुसैन ने बताया कि नोटिस जारी होने के बाद

अतिक्रमणकारियों को सात दिन का समय दिया गया है। उन्हें इस अवधि में स्वयं अतिक्रमण हटाने के निर्देश दिए गए हैं। यदि तय समय सीमा में कब्जा नहीं हटाया गया, तो नगर परिषद द्वारा बलपूर्वक कार्रवाई करते हुए अतिक्रमण हटाया जाएगा। इस कार्रवाई में आने वाला पूरा खर्च भी संबंधित अतिक्रमणकारियों से ही वसूला जाएगा। नगर परिषद के अनुसार, इससे पहले मार्च, जून और अक्टूबर 2025 में भी अतिक्रमण हटाने के लिए पत्र जारी कर चेतावनी दी गई थी। हालांकि, अतिक्रमणकारियों ने इन निर्देशों को गंभीरता से नहीं लिया। इसके बाद अब मध्यप्रदेश नगर पालिका अधिनियम 1961 की धारा 223 के तहत यह अंतिम नोटिस जारी किया गया है। प्रशासन ने इस कार्रवाई को लेकर पूरी तैयारी कर ली है। कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए कलेक्टर बैतूल, अनुविभागीय अधिकारी राजस्व बैतूल, तहसीलदार चिचोली और थाना प्रभारी चिचोली को भी लिखित रूप से सूचित कर आवश्यक सहयोग मांगा गया है।

25 मीटर लंबी, लगभग 20 फीट ऊंची और 6 मीटर चौड़ी अस्थाई दीवार की खड़ी

ताप्ती बैराज के क्षतिग्रस्त हिस्से की मरम्मत कर रोका 12 फीट पानी

बैतूल। खेड़ी ताप्ती बैराज की क्षतिग्रस्त हिस्से की वैकल्पिक मरम्मत कर नगरपालिका ने करीब संग्रहित 0.5 एमसीएम पानी को सुरक्षित किया गया है। यह पानी क्षतिग्रस्त हिस्से से बह जाता था, लेकिन भीषण गर्मी से पहले जल संकट की आशंका के बीच नगरपालिका ने क्षतिग्रस्त हिस्से से बहने वाले पानी को जुगाड़ तकनीक के सहारे रोक लिया गया है। जिससे आने वाले दो से ढाई माह तक शहर की जलापूर्ति सुचारू रहने की उम्मीद है। बता दे कि शहर की जनसंख्या के अनुरूप जलापूर्ति के लिए माचना एनीकट पर्याप्त साबित नहीं हो रहा था। ऐसे में नपा ने वैकल्पिक स्त्रोत के रूप में खेड़ी स्थित ताप्ती नदीं पर बैराज बनवाया था। यह बैराज करीब 7 करोड़ रुपये में बना था, लेकिन पहली बारिश में ही बैराज के एक ओर का हिस्सा बंड (तटबंध या किनारा) बह गया था। प्रारंभिक वर्षों में लाखों रुपए खर्च कर मरम्मत कराई गई थी, लेकिन ताप्ती नदी की बाढ़ में अस्थाई संरचनाएं बह गईं। जिसके कारण हर साल पारसडोह जलाशय से जब पानी छोड़ा जाता है तो क्षतिग्रस्त हिस्से से व्यर्थ बह जाता था और नगरपालिका को दोबारा पानी लेना पड़ता था, जिससे आर्थिक भार बढ़ता था।

जुगाड़ के सहारे पानी रोकने में मिली सफलता – गर्मी के दिनों में शहरवासियों को पानी के लिए भारी परेशानी

का सामना करना पड़ता था, हालांकि नगर पालिका ने इस बार इसकी मरम्मत बांधों के विशेषज्ञ जल संसाधन विभाग से करवाने की पहल की थी, लेकिन विभाग ने इसकी मरम्मत करने से इंकार करते हुए आसपास नया बैराज बनाने की राय दी है। विभाग द्वारा इसकी डीपीआर भी बनाई जा रही है। हालांकि यह योजना अभी प्रारंभिक दौर में है और इसे मूर्त रूप लेने में लंबा समय लगेगा। ऐसे में इस गर्मी के लिए व्यवस्था करना जरूरी था। यही कारण है कि जल प्रदाय शाखा के प्रभारी एवं सब इंजीनियर धीरेन्द्र राठौर ने तात्कालिक व्यवस्था के तौर पर अपने स्तर पर ही यहां काम शुरू किया और जुगाड़ के सहारे ही पानी रोकने की कोशिश की, जिसमें सफलता भी मिली।

4 लाख खर्च कर रोक लिया 12 फीट पानी – बताया जा रहा है कि वैकल्पिक व्यवस्था के रूप में बैराज की मरम्मत के लिए लगभग चार लाख रूपये खर्च किये गये है। इस राशि से चार डंपर बारीक डस्ट बुलाई। इसके अलावा 100 डंपर मुरम बुलाई गई। बोल्डर तो मजदूरों से वहीं से जमा करवा लिए गए। जेसीबी मशीन नगरपालिका की उपयोग की गई। इन सबके सहारे बैराज के क्षतिग्रस्त हिस्से को दुरूस्त करने के लिए यहां बंड बना दिया। यह बंड बन जाने से करीब 12 फीट तक पानी रूक रहा है। जिससे आने वाले दो से ढाई माह तक शहर की जलापूर्ति सुचारू रहने की उम्मीद है। श्री राठौर का कहना है कि यह अस्थाई समाधान है, इससे पानी की बर्बादी रोकी जा सकी है। यदि यह प्रयास नहीं किया जाता, तो घोघरी जलाशय से लिया गया पानी भी व्यर्थ बह सकता था। फिलहाल बैराज में संग्रहित पानी आगामी दो से ढाई महीनों तक शहर की जलापूर्ति बनाए रखने में सहायक रहेगा। शहरवासियों को गर्मी के दौरान राहत मिलेगी।

फरवरी में ही लेना पड़ा पानी– फरवरी की शुरुआत में ही ताप्ती का वॉटर लेवल शून्य हो गया था। गंभीरता को देखते हुए नपा ने पहले बैराज के क्षतिग्रस्त हिस्से की अस्थाई मरम्मत शुरू कराई और उसके बाद घोघरी जलाशय से नियंत्रित गति से पानी छोड़ा, ताकि एकदम दबाव न बने। नगरपालिका के अनुसार क्षतिग्रस्त हिस्से में 25 मीटर लंबी, लगभग 20 फीट ऊंची और 6 मीटर चौड़ी अस्थाई दीवार खड़ी की गई है। इस पूरी प्रक्रिया में लगभग 4 लाख रुपए का खर्च आया है। नगरपालिका के सब इंजीनियर धीरेंद्र राठौर ने बताया कि बैराज की कुल ऊंचाई करीब 21 फीट है, लेकिन अस्थाई मरम्मत की मजबूती को ध्यान में रखते हुए फिलहाल 12 फीट तक भरा है। यह बंड केवल काम चलाऊ व्यवस्था के तौर पर है। इससे पानी का ज्यादा प्रेशर या बाढ़ यह बिल्कुल नहीं झेल पाएगा।

शहर में रोजाना 90 लाख लीटर पानी की सप्लाई

नगरपालिका के अनुसार शहर में रोजाना 90 लाख लीटर पानी की सप्लाई की जाती है। इसके लिए शहर भर में 9 टंकियां हैं। नगर पालिका का पाइप लाइन का नेटवर्क करीब 200 किलोमीटर लंबाई का है। पेयजल के लिए नगरपालिका द्वारा 17400 नल कनेक्शन दिए गए है। ताप्ती बैराज के अलावा नगरपालिका बैतूल के विवेकानंद वार्ड में स्थित माचना एनीकट से भी पानी लेती है। हालाकि यहां का पानी आपात स्थिति में उपयोग करने के लिए रिजर्व रखा जाता है। श्री राठौर ने बताया कि ताप्ती बैराज में रोका गया पानी अप्रैल महीने के आखिर तक चल सकेगा। नगर पालिका घोघरी डैम में शहर के लिए एक एमसीएम पानी पेयजल के लिए रिजर्व रखवाती है। जहां से अभी कुछ मात्रा में पानी लिया गया है।

इनका कहना है –

ताप्ती बैराज में पानी को रोकने क्षतिग्रस्त हिस्से की अस्थाई मरम्मत कराई है। चूंकि मरम्मत किए हिस्से की दीवार पर ज्यादा दबाव न पड़े, इसलिए बैराज को 12 फीट तक ही भरा है। यह पानी दो माह तक सप्लाई में उपयोग किया जा सकेगा।

– धीरेंद्र राठौर, जल शाखा प्रभारी एवं सब इंजीनियर नगरपालिका बैतूल

बच्चों और युवाओं ने जमकर खेली होली, रंग-भंग और तरंग की रही धूम

जिलेभर में शांति और सौहार्द्रपूर्ण माहौल में मना होली पर्व

बैतूल। होली के बाद धुरेंडी पर्व जिले भर में सादगी के साथ मनाया गया। सभी ने एक-दूसरे को रंग-गुलाल लगाकर होली की बधाई दी। इस बार चंद्रग्रहण के कारण धुरेंडी एक दिन देरी से मनाई गई। कुछ स्थानों पर होलिका दहन मंगलवार रात को हुआ, जबकि कुछ जगह सोमवार रात को भी दहन किया गया था। कुल मिलाकर, बैतूल में धुरेंडी का त्योहार खुशी, उत्साह और भाईचारे के माहौल में संपन्न हुआ। हुर्रियारों की टोली सुबह से ही दिखाई देने लगी थी। गली-मोहल्ले में सुबह से ही लोगों ने गुलाल खेलने का दौर शुरू कर दिया था। रंगों के पर्व को लेकर बड़े लोगों में ज्यादा उत्साह नहीं देखा गया। उन्होंने गुलाल से होली मनाई, जबकि युवा एवं बच्चों ने एक-दूसरे पर जमकर रंग बरसाया। रंगों की मस्ती में हर कोई झूमता नजर आया। उत्साह, उमंग और उल्लास के इस पर्व का लोगों ने जमकर आनंद उठाया। टोलियां बनाकर जहां युवाओं ने हुल्लड़ मस्ती की, वहीं महिलाएं-युवतियां और बच्चों ने भी होली के रंगों का जमकर लुत्फ उठाया। इससे पूर्व होली समितियों द्वारा होलिका दहन किया गया। होली दहन के साथ-साथ रंग-गुलाल की फुहारें भी बरसने लगी। जगह-जगह उड़ते रंग गुलाल की

फुहारों से पूरा वातावरण रंगमय हो गया।

सूखे रंग रही पहली पसंद – होली में सबसे ज्यादा सूखे रंग लोगों की पसंद रही, वहीं रसायनिक रंगों से लोगों को परहेज करते देखा गया। बुजुर्ग-युवाओं और बच्चों ने गुलाल और हर्बल रंगों से होली मनाई। इसके साथ ही काफी हद तक पानी की भी बचत की। हालांकि हुलियारों ने पहले से ही होली की तैयारी कर रखी थी। बच्चों और बड़ो के अलावा महिलाओं और युवतियों ने भी धुरेंडी पर एक-दूसरे को रंग लगाकर होली मनाई।

बच्चों ने खूब खेली होली– रंग-बिरंगे रंगों के पर्व होली को लेकर सबसे ज्यादा उत्साह और उमंग का माहौल छोटे-छोटे बच्चों में देखा गया। पिचकारी में रंग भरकर बच्चे एक-दूसरे को लगा रहे थे। पिचकारी में रंग भरकर बच्चे अपने दोस्तों को लगाने के लिए एक-दूसरे के पीछे भागते नजर आए। बच्चों में होली का उत्साह देखते ही बन रहा था। इसके साथ ही म्यूजिक पर बच्चे खूब नाचे और होली मनाई।

रंग-भंग, ठंडाई और तरंग की रही धूम – होली पर्व पर रंग-भंग और तरंग की खूब धूम रही। लोगों ने जहां जमकर रंग खेला, वहीं भंग, ठंडाई भी चखी और बैंड-बाजे की धून पर जमकर थिरके। जगह-जगह युवाओं की टोली नाचते और झूमते नजर आई।

भाजपा ने श्रीमती शकुंतला फाटे के निधन पर जताया शोक

बैतूल। भारतीय जनता पार्टी जिले के उपाध्यक्ष एवं पूर्व जिला पंचायत के उपाध्यक्ष नरेश फाटे, पवन फाटे शिक्षक, रवि फाटे की माताजी श्रीमती शकुंतला फाटे के असामयिक निधन पर जिला भाजपा परिवार ने शोक संवेदनाए व्यक्त की है। वहीं फाटे परिवार को दुख की इस घडी में ईश्वर से दिवंगत की शांति की कामना परमपिता परमेश्वर से करते हुए भावभींनी श्रृद्धांजलि अर्पित की है। शोक संवेदना व्यक्त करने वालो में भाजपा प्रदेश अध्यक्ष एवं विधायक हेमंत खंडेलवाल, केन्द्रीय राज्यमंत्री एवं सांसद दुर्गादास उइके, जिलाध्यक्ष सुधाकर पवार, विधायक महेन्द्रसिंह चौहान, चंद्रशेखर देशमुख, डा.योगेश पंडाग्रे, गंगा उइके, जिला पंचायत अध्यक्ष राजा पंवार, उपाध्यक्ष हंसराज धुर्वे, जनपद अध्यक्ष ईमला बाई जावलकर, उपाध्यक्ष कृष्णा लोखंडे, मंडल अध्यक्ष नीतू पटेल सहित मंडल व जिले के समस्त पार्टी पदाधिकारी, कार्यकर्ता प्रमुख है।

रंगों का उत्सव होली हर्षोल्लास के साथ मना रविवार को खेली जाएगी रंगपंचमी

सोहागपुर। सोहागपुर, सेमरीहरचंद, शोभापुर सहित आस-पास के ग्रामीण क्षेत्रों में रंगों का उत्सव होली हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इधर आदिवासी ग्रामों भी परम्परागत होली खेली गई।इसके पूर्व नगर में करीबन 30 स्थानों पर होलिका दहन कार्यक्रम संपन्न हुआ। इधर शास्त्री वार्ड की खंडेलवाल कालोनी में अतिथि देवेन्द्र शर्मा मुख्य जिजमान के साथ पंडित ने मंत्रोच्चारण के होलिका की पूजन अर्चना कराई । इसके बाद होलिका दहन किया गया।

इस अवसर आयोजक विशाल गोलानी सहित खंडेलवाल कालोनी की मातृशक्ति, नागरिक, बच्चे भारी संख्या में उपस्थित थे। होलिका दहन के उपरांत प्रसाद वितरित किया गया। इधर पुलिस ने रंगों उत्सव को लेकर सोहागपुर एवं शोभा पुल आदि में फ्लैग मार्च किया। रंगों उत्सव होली पर पुलिस ने माकूल इंतजाम किए थे। मुख्य स्थलों पर पुलिसकर्मियों तैनात किया गया था। वहीं पुलिस वाहन से निरंतर गस्त की जा रही थी। दोपहर करीबन 8 युवकों की शर्टलेंस टोली स्टेशन रोड से होकर न्यायालय चौराहा तक निकली। इसके उपरांत कहां गए जानकारी नहीं मिल पाई। इधर शरद चौरसिया ने होली को रंगीली बनाते सोशल मीडिया पर व्यंग करते नाम न लिखकर जनप्रतिनिधियों पर कटाक्ष किया है कि 'बुरा न मानो होली है...प्लेटफॉर्म पर ट्रेन अकेली है..!' मिल जाएं 2-4 ट्रेन...ये सबसे बड़ी धुरेड़ी है...!! आपने रंग बिरंगी ट्रेन का फोटो बनाया था। जिसमें वे अकेले दरवाजे पर खड़े होकर उक्त बयां कर रहे थे।उल्लेखनीय है कि एक छोटे कस्बे बोहानी में इन्टरसिटी एक्सप्रेस स्टापेज का स्टापेज सांसद चौधरी दर्शनसिंह ने करवाया है। इस बात को लेकर विगत दिनों माखन नगर में रेल सुविधाओं को लेकर पदयात्रा निकाली गई थी। जिसमें बोहानी एवं सोहागपुर की तुलना की गई थी। जब सोशल मीडिया पर सांसद चौधरी दर्शनसिंह पर कटाक्ष किए गए। तब सांसद चौधरी दर्शनसिंह ने रेल मंत्री को सोहागपुर स्टेशन पर स्टापेज एवं सुविधाओं के लिए ज्ञापन सौंपा था। अब नगरवासी प्रतीक्षा में खड़े हैं। इधर समाजसेवी गणेश अहिरवार ने सोशल मीडिया पर बग़ैर नाम लिखा है कि चुनाव आने दो एक नहीं दो-दो ट्रेनों का स्टापेज मिल जाएगा।

भाजपा प्रदेशाध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल ने न्यास कार्यालय में मनाई होली

बैतूल। भाजपा प्रदेशाध्यक्ष और विधायक हेमंत खंडेलवाल ने विजय सेवा न्यास में कार्यकर्ताओं और आम लोगों के साथ होली खेली। उन्होंने लोगों को रंग-गुलाल लगाकर बधाई दी। अपने निवास पर भी उन्होंने नागरिकों से मुलाकात कर त्योहार की शुभकामनाएं दीं। इसके अलावा केन्द्रीय राज्य मंत्री दुर्गादास उइके, आमला विधायक डॉ. योगेश पंडाग्रे, जिला कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष निलय डागा, आमजनों और कार्यकर्ताओं के बीच पहुंचे और होली मिलन समारोह में जमकर रंग-गुलाल उड़ाया। होली मिलन समारोह में लोगों ने खूब रंग-गुलाल उडाया, जमकर झूमे। वहीं आमला विधायक डॉ. योगेश पंडाग्रे ने समर्थकों और लोगों को रंग-गुलाल लाया।

'सोहागपुर पुलिस की सफलता '

18 शिकायतों में 14मोबाईल बरामद ,करीबन दो लाख रुपये के मोबाइल वापिस किए फरियादियों को

सोहागपुर। पुलिस अधीक्षक नर्मदापुरम साईकृष्णा एस. थोटा (आईपीएस),अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्री अभिषेक राजन एवं एसडीओ पुलिस संजू चौहान सोहागपुर ने गुम मोबाइलों की घटनाओं को गंभीरता से मोबाइल पतारसी के लिए नगर निरीक्षक उषा मरावी के नेतृत्व में टीम गठित की गई थी। सोहागपुर ने ऑपरेशन माई फोन में इस वर्ष के शुरुआत से अभी तक बड़ी कामयाबी मिली है। जिसमें में गुम हुए मोबाइल फोन की शिकायत आवेदकों ने सीईआईआर पोर्टल पर शिकायतों दर्ज कराई थी। उल्लेखनीय है कि भारत सरकार के द्वारा सीईआईआर पोर्टल संचालित किया जाता है। यह एक केंद्रीकृत प्रणाली है । जिसमें पोर्टल के माध्यम से गुम एवं चोरी हुए मोबाइल फोन को ट्रैक एवं ब्लॉक करने में मदद मिलती है। सोहागपुर पुलिस ने जनवरी 2026

से आज तक 18 शिकायतें प्राप्त हुई थी। जिसमें 14 मोबाइल मोबाइल धारकों को वापस प्रदान किया जा चुके हैं। जिसकी कीमती लगभग दो लाख रुपए के थे ।इसी क्रम में सैमसंग कंपनी का टैबलेट शिकायतकर्ता रितेश रघुवंशी सोहागपुर को आज वापस किया गया । नगर निरीक्षक उषा मरावी एवं एएसआई गणेश राय ने नागरिकों से आग्रह किया है कि यदि किसी व्यक्ति का मोबाइल चोरी अथवा गुम होता है तो थाने में शिकायत अवश्य करें। इसके साथ दस्तावेज आधार कार्ड, फोन बिल, पोर्टल पर शिकायत आवेदन पत्र जरूर प्रस्तुत करें। इस अभियान में नगर निरीक्षक उषा मरावी , सहायक उप निरीक्षक गणेश राय एवं आरक्षक अजमेर सिंह परिहार की सराहनी भूमिका निभाई थी।

'किसानों से आव्हान नरवाई न जलाएं'

किसान जागरूक बने, चेतावनी नरवाई जलती पाई गई तो होगा जुर्माना, दंडात्मक कार्यवाही: सुश्री प्रियंका भल्लावी

सोहागपुर। जनपद पंचायत सभागार में अनुविभागीय अधिकारी सुश्री प्रियंका भलावी की अध्यक्ष्यता में नरवाई प्रबंधन के पर प्रशिक्षण के साथ बैठक का आयोजन किया गया। इस अवसर पर जनपद पंचायत अध्यक्ष जालमसिंह पटेल,जनपद उपाध्यक्ष राघवेंद्रसिंह पटेल, तहसीलदार आर .एस . झरबड़े आदि मंचासीन थे। कार्यक्रम को संबोधित करते अनुविभागीय अधिकारी सुश्री प्रियंका भल्लावी ने कहा कि आगामी गेहू कटाई के उपरांत जलाई जाने वाली नरवाई पर पूर्णतया प्रशासन ने रोक लगाई हुई। अतः किसान नरवाई कतई नहीं जलाएं। ग्राम स्तर पर गस्ती दल का गठन किया गया है।जो नरवाई की निगरानी करके आवश्यक कार्यवाही करेगा। इसी संदर्भ में उक्त दल 10 दिनों में नरवाई प्रबन्धन पाठशाला का आयोजन करके कृषको को जागरूक करेगा । उसके बाद म नरवाई जलती पाई जाने पर जुर्माने एवं दण्डात्मक कार्यवाही की जाएगी। वहीं ग्राम पंचायत स्तर पर दीवार लेखन , मुनादी , सोशल मीडिया व, इलेक्ट्रॉनिक एवं प्रिंट मीडिया के

माध्यम से कृषकों को जागरूक किया जाएगा।

ग्राम पंचायतों में नरवाई प्रबंधन सम्बंधित कृषि यंत्रो के लिए कस्टम हाईरिंग केन्द्रो की सूचि चस्पा की जाएगी । हमारे अनुभाग में 9 केंद्र है । जिसमें किसान नरवाई प्रचंचन यन्त्र प्राप्त कर सकेंगे ।इसी के साथ हार्वेस्टर संचालको की सूची भी चस्पा की जाएगी ।अनुभाग सोहागपुर में बिना स्ट्रा रीपर मैनेजमेंट के हार्वेस्टरी का संचालन प्रतिबन्धित रहेगा। आपने आगे कहा कि ग्राम पंचायतो में शासकीय भूमि का चयन एवं भूसा संग्रह करके निकटस्थ गौशालाओ को प्रदान किया जाएगा । उक्त भूसा आपूर्ति ग्राम पंचायतो के माध्यम से होगी आपने अंत में कहा कि ग्राम स्तर पर जनप्रतिनिधियों को नरवाई प्रबंधन एम्बेसडर बनाया जाएगा । नरवाई प्रबंधन एम्बेसडर अपने ग्राम पंचायत को ग्रीन पंचायतबनायेंगे। इस कार्यक्रम में जिला पंचायत सदस्य, जनपद सदस्य, सरपंच, उपसरपंच पंच शामिल रहेंगे।इस प्रशिक्षण सह बैठक में जनप्रतिनिधि, पार्टियों के पदाधिकारी, पटवारी, पंचायत सचिव, ग्राम रोजगार सहायक, कस्टम हाईरिंग केंद्र संचालक एवं हार्वेस्टर संचालक आदि उपास्थित थे।

Mantra of success

राजेश शर्मा

वरिष्ठ पत्रकार, मोटिवेशनल स्पीकर

देश की प्रतिष्ठित यूपीएससी - सिविल सेवा परीक्षा- 2025 में 8वीं रैंक लाकर पक्षाल सेक्रेट्री ने बाग और मध्यप्रदेश को गौरवान्वित किया

मध्यप्रदेश और धार जिले के गौरव पक्षाल सेक्रेट्री से राजेश शर्मा द्वारा लिया साक्षात्कार

आप जिस स्थिति में है वहीं से शुरूआत कीजिये - सपनों को उड़ान जरूर मिलेंगी।

जुनून- आत्मविश्वास और दृढ़ संकल्प से ओतप्रोत इस संभावनावान, प्रतिभाशाली युवा ने अपनी प्रतिभा और संभावनाओं के दर्शन करा दिए थे कि एक दिन यह प्रतिभा अपनी उजास की चमक बिखेरेंगी । देश की प्रतिष्ठित यूपीएससी - सिविल सेवा परीक्षा- 2025 के घोषित परिणामों में संपूर्ण भारत में (AIR) 8 वी रैंक लाकर पक्षाल सेक्रेट्री ने बाग और मध्यप्रदेश को गौरवान्वित किया है। पक्षाल की इस उपलब्धि से देश का दिल मध्यप्रदेश गदगद है।

'गर स्वप्न आसमां की तरह बड़े हो, तो उड़ान भी उतनी ही ऊंची होगी'

धार जिले के बाग जैसे 'छोटे से स्थान से निकली इस बड़ी प्रतिभा' ने यह जता दिया कि जहां चाह हैं वहा राह हैं। बाग की माटी में शिक्षा- दीक्षा और संस्कार ग्रहण कर यूपीएससी सिविल सर्विसेज क्रेक कर बाग और धार जिले को ही नहीं बल्कि मध्यप्रदेश को गौरवांवित किया है.. और यह भी दर्शा दिया कि 'छोटे शहरों से भी बड़ी प्रतिभाएं निकल रही हैं'। कॉलेज के दिनों से ही सिविल सर्विस एग्जाम की तैयारी शुरू कर पक्षाल को काम करने के अवसर और समाज सेवा के प्रति झुकाव ने उन्हें इस फील्ड में आने के लिए प्रेरित किया। पक्षाल ने दूसरी बार यूपीएससी एग्जाम क्रैक किया है। इससे पहले अपने पहले ही प्रयास में 478वीं रैंक हासिल की थी।

मध्यप्रदेश और धार जिले के गौरव पक्षाल सेक्रेट्री से राजेश शर्मा द्वारा लिए साक्षात्कार के अंश ...

पक्षाल ने प्रारंभिक शिक्षा धार जिले के बाग से ही की। बाग के ही सरकारी स्कूल से उन्होंने हायर सेकंडरी किया है।

प्रश्न- सिविल सर्विसेज सेवा में जाने की प्रेरणा कब मिली ?

पक्षाल सेक्रेट्री – सिविल सर्विसेज सेवा में जाने की प्रेरणा मुझे अपने नानाजी प्रकाशचंद जी जैन (एडवोकेट) और अपने पापा निलेश जैन से मिली। उन्होंने ही आईएएस बनने के लिए प्रेरित किया।

प्रश्न- सफलता की राह में आई चुनौतियां और संघर्ष से कैसे निपटा, संघर्ष की कहानी पर प्रकाश डालिए ?

पक्षाल सेक्रेट्री – जब लक्ष्य बड़ा होता हैं तो निश्चित ही संघर्ष अधिक बड़ा होता हैं। संघर्ष व चुनौतियों से विजय हासिल करने के मेरे प्रयासों में मेरे माता - पिता और परिवार ही मेरे प्रेरणा स्रोत रहे हैं।

जब लक्ष्य को पाने के लिए दृढ़ निश्चय कर लिया तो संघर्ष और चुनौतियां भी हौसलों में परिवर्तित होकर उत्साह बढाने लगती हैं।

प्रश्न- यह सफलता आपको कितने प्रयासों में मिली ?

पक्षाल सेक्रेट्री – प्रथम प्रयास में 478वीं रैंक हासिल की थी और इस दूसरे प्रयास में 8 वीं रैंक हासिल की हैं ।

प्रश्न – सफलता का श्रेय किसे देना चाहेंगे?

पक्षाल सेक्रेट्री – मेरी सफलता की इस राह में मुझसे जुड़े हर व्यक्ति ने एक महत्वपूर्ण किरदार निभाया हैं। मैं अपनी इस उपलब्धि को अपने परिवार को समर्पित करता हूँ। उन्होंने हर परिस्थिति में निरंतर मेरा साथ दिया और मुझे प्रेरित किया ।

प्रश्न – सफलता का मूल मंत्र क्या है ? यूथ को क्या मोटिवेशनल टिप्स देना चाहेंगे ?

पक्षाल सेक्रेट्री– बताते हैं कि उन्होंने यूपीएससी एग्जाम की तैयारी के लिए किसी बड़े या महंगे कोचिंग का सहारा नहीं लिया, बल्कि 'सेल्फ-स्टडी' को अपना हथियार बनाया और खुद तैयारी की। करेंट अफेयर्स की तैयारी के लिए पक्षाल ने अखबार और मंथली मैगजीन पढ़े। छोटे-छोटे नोट्स और रिवीजन उनका मूल मंत्र रहा, जिसने चीजों को याद रखने में मदद की।

प्रश्न –सिविल सर्विस एग्जाम की तैयारी कब से शुरू की ?

पक्षाल सेक्रेट्री – 2023 में आईआईटी कानपुर (IIT Kanpur) से इकोनॉमिक साइंसेज (Economic Sciences) में ग्रेजुएशन किया। कॉलेज के दिनों से ही सिविल सर्विस एग्जाम की तैयारी शुरू कर दी थी। आईआईटी से पढ़ाई के बाद सिविल सर्विसेस में जाने का पक्का इरादा कर लिया था।

- बजट ट्रैवलिंग और अर्थशास्त्र का शौक
- भारतीय अर्थव्यवस्था पर एक 'न्यूजलेटर' तैयार करना भी उनका शौक है

धार जिले से यूपीएससी – सिविल सर्विसेज में कई प्रतिभाएं निकली हैं ...

देश की प्रतिष्ठित यूपीएससी - सिविल सर्विसेज में धार जिले से कई प्रतिभाओं ने चयनित होकर धार और मध्यप्रदेश को गौरवान्वित किया है। संस्कृति सोमानी (आईएएस) ट्विंकल जैन (आईपीएस) माही शर्मा (आईपीएस) सहित कई प्रतिभाओं ने धार का नाम रोशन किया है।

संक्षिप्त समाचार

बैतूल में 3 करोड़ की राशि से बनेगा आधुनिक सर्किट हाउस

बैतूल (निप्र)। नेशनल हाईवे मार्ग पर अवस्थित होने तथा बढ़ते वीआईपी मूवमेंट को ध्यान में रखते हुए बैतूल मुख्यालय पर 3 करोड़ रुपये की लागत से आधुनिक सर्किट हाउस का निर्माण किया जाएगा। मंगलवार को विधायक श्री हेमंत खंडेलवाल ने कलेक्टर श्री नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी के साथ वर्तमान सर्किट हाउस परिसर में प्रस्तावित नवीन भवन निर्माण स्थल का अवलोकन किया। विधायक श्री खंडेलवाल ने निर्देश दिए कि नवीन सर्किट हाउस में आधुनिक सुविधाओं से युक्त कॉन्फ्रेंस हॉल एवं उत्कृष्ट श्रेणी के कमरों का निर्माण किया जाए। उन्होंने कहा कि वर्तमान सर्किट हाउस भवन ऐतिहासिक धरोहर है, इसलिए इसे रेस्ट हाउस के रूप में संरक्षित एवं उपयोग में रखा जाए। उन्होंने यहां 80 लाख रुपये की अतिरिक्त राशि से नवीन कमरे एवं डोरमेट्री निर्माण के भी निर्देश दिए। साथ ही, नए सर्किट हाउस और रेस्ट हाउस के लिए संयुक्त अत्याधुनिक किचन की व्यवस्था सुनिश्चित करने को कहा। एसडीओ पीआईयू श्री अजय सिंह तोमर ने बताया कि नवीन सर्किट हाउस/ अतिरिक्त कक्षों के निर्माण के लिए 3 करोड़ की राशि का आरंभिक बजट का प्रावधन किया गया हैं। निरीक्षण के दौरान मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत अक्षत जैन, एसडीएम अभिजीत सिंह, कार्यपालन यंत्री लोक निर्माण विभाग श्रीमती प्रीति पटेल सहित अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

94 बालिकाओं को लगाई गई एचपीवी की वैक्सीन

सीहोर (निप्र)। शासन के निर्देशानुसार स्वास्थ्य विभाग द्वारा राष्ट्रीय ह्यूमन पैपिलोमा वायरस टीकाकरण कार्यक्रम के तहत 14 से 15 वर्ष की बालिकाओं का टीकाकरण किया जा रहा है। सीएमएचओ डॉ सुधीर कुमार डेहरिया ने बताया कि सीहोर जिले की सभी स्वास्थ्य संस्थाओं में भी एचपीवी टीकाकरण कार्यक्रम के तहत बालिकाओं को एचपीवी की वैक्सीन लगाई जा रही है। उन्होंने बताया कि 02 मार्च को जिले की सभी स्वास्थ्य संस्थाओं में जिले की 94 बालिकाओं को एचपीवी की वैक्सीन लगाई गई। सीएमएचओ डॉ सुधीर डेहरिया ने बताया कि सर्वाइकल कैंसर भारत में महिलाओं में होने वाला दूसरा सबसे जानलेवा कैंसर है। इस गंभीर बीमारी की रोकथाम के उद्देश्य से भारत सरकार द्वारा यह राष्ट्रव्यापी एचपीवी (ह्यूमन पैपिलोमा वायरस) टीकाकरण अभियान प्रारंभ किया गया है। यह अभियान आगामी तीन माह तक पूरे देश में संचालित किया जाएगा। अभियान के अंतर्गत 14 वर्ष पूर्ण कर चुकी एवं 15 वर्ष से कम आयु की बालिकाएँ टीकाकरण के लिए पात्र होंगी। साथ ही, अभियान प्रारंभ होने के 90 दिनों के भीतर 15 वर्ष की होने वाली बालिकाएँ भी पात्र मानी जाएँगी। यह टीकाकरण पूर्णतः स्वैच्छिक है तथा अभिभावक की सहमति अनिवार्य होगी।

इंदौर-उज्जैन मेट्रोपोलिटन एरिया में शामिल होगा बड़नगर : मुख्यमंत्री

- नायीखेड़ी-नागदा-रतलाम मार्ग की स्वीकृति से बड़नगर के समग्र विकास के खुलेंगे द्वार - सीएम ने की व्यायाम शालाओं को प्रोत्साहन स्वरूप राशि देने की घोषणा - गौशालाओं को नरवाई प्रबंधन के लिए मिलेगी अंश राशि - बड़नगरवासियों को मिली 150 करोड़ रूपये के मार्ग की सौगात

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के कुशल नेतृत्व में भारत विश्व पटल पर नई ऊंचाइयां को छू रहा है। देश में मध्यप्रदेश का विशेष महत्व है। विकास के इस कारवां को आगे बढ़ाते हुए राज्य सरकार समाज के हर वर्ग और प्रत्येक क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य कर रही है। उज्जैन जिले का बड़नगर भी विकास में अग्रणी रहेगा। बड़नगर अब इंदौर-उज्जैन मेट्रोपोलिटन एरिया का भाग बनेगा। बड़नगर पर बाबा महाकाल सहित चंबल, शिप्रा और गंभीर नदियों का भी आशीर्वाद है।

प्रधानमंत्री श्री मोदी ने धार में देश के पहले पीएम मित्र पार्क का भूमि-पूजन किया है। टेक्सटाइल सेक्टर के इस मेगा इंडस्ट्रियल पार्क का लाभ भी बड़नगरवासियों को मिलेगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बड़नगर क्षेत्र में संचालित गौशालाओं को नरवाई प्रबंधन के लिए मशीनें लेने में सहायता के उद्देश्य से स्वेच्छानुदान से अंश राशि उपलब्ध कराने की घोषणा की।

उन्होंने कहा कि इससे नरवाई के निराकरण के साथ ही गौशालाओं को पर्याप्त भूसा उपलब्ध कराने में मदद मिलेगी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बड़नगर क्षेत्र के व्यायाम शालाओं को प्रोत्साहन स्वरूप एक-एक लाख रूपए देने की घोषणा की। मुख्यमंत्री डॉ. यादव, नायीखेड़ी-नागदा-रतलाम मार्ग की स्वीकृति प्रदान करने के लिए उनका आभार प्रकट करने मुख्यमंत्री निवास पहुंचे बड़नगर विधानसभा क्षेत्र के निवासियों को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव का बड़नगरवासियों ने साफा और गजमाला पहनाकर अभिनंदन किया।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि बाबा महाकाल के आशीर्वाद से उज्जैन और बड़नगर अब 3 प्रमुख मार्गों के माध्यम से रतलाम से जुड़ गया है। तीसरा नया 2 लेन रास्ता गंभीर डैम के पास से नागदा होकर निकलने वाला है। लगभग 150 करोड़ रूपए का नायीखेड़ी-नागदा-रतलाम मार्ग क्षेत्रवासियों के लिए बड़ी सौगात है। इससे रतलाम की दूरी 40 किलोमीटर कम हो जाएगी। नई सड़क से सिंहस्थ: 2028 के आयोजन में भी सुविधा होगी। उज्जैन में विमानतल भी बनाया जा रहा है, इसका लाभ भी बड़नगर को मिलेगा। आगामी वर्षों में रतलाम सहित राजस्थान और गुजरात से भी बड़नगर का संपर्क सुगम और सशक्त होगा। सड़कें विकास का आधार हैं, इन सड़कों से बड़नगर सहित सम्पूर्ण क्षेत्र के विकास के द्वार खुलेंगे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बताया कि सिंहस्थ : 2028 को दृष्टिगत रखते हुए यह प्रस्तावित मार्ग विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। वर्तमान में रतलाम से उज्जैन आने वाले श्रद्धालु मुख्यत: बदनावर-बड़नगर मार्ग से आवागमन करते हैं, जिसकी कुल लंबाई लगभग 115 कि.मी. है। प्रस्तावित वैकल्पिक मार्ग की कुल लंबाई लगभग 74 कि.मी. है, जो वर्तमान प्रचलित मार्ग की तुलना में लगभग 40 कि.मी. कम है। इस मार्ग के विकसित होने से यात्रा की दूरी एवं समय दोनों में उल्लेखनीय कमी आएगी तथा मुख्य मार्गों पर यातायात का दबाव भी कम होगा।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि भगवान श्रीकृष्ण के जीवन से प्रेरणा लेकर हमें मित्र की सहायता करने के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए। उन्होंने कहा कि प्रदेशवासी हमारे लिए भगवान श्री हनुमान की तरह हैं, जिन्हें केवल जनभागीदारी की शक्ति का भान कराना होता है। सरकार के कार्य अपने आप होते चले जाते हैं। अभिनंदन समारोह में बड़नगर विधायक श्री जितेंद्र पंड्या, श्री अंतर सिंह देवड़ा, श्री उमराव सिंह, श्री विजय चौधरी सहित अनेक जनप्रतिनिधि एवं बड़ी संख्या में कार्यकर्ता उपस्थित थे।

होली के शुष्क दिवस पर अवैध शराब जब्त: 315 पाव मदिरा बरामद

विदिशा (निप्र)। होली पर्व के अवसर पर घोषित शुष्क दिवस के दौरान अवैध मदिरा के धारण, परिवहन, निर्माण एवं विक्रय पर रोकथाम हेतु जिला प्रशासन द्वारा सख्त कार्रवाई की गई। कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता के निर्देशानुसार तथा जिला आबकारी अधिकारी श्री शरद पाठक के मार्गदर्शन में आबकारी विभाग की टीम ने जिले में विशेष अभियान चलाया। मंगलवार तीन मार्च को वृत्त विदिशा 'अ' के अंतर्गत मुखबिर की सूचना पर शहर के रामलीला मैदान के सामने शमशान रोड पर दबिश दी गई। कार्रवाई के दौरान विनोद बघेल पिता हुकुम सिंह (उम्र 31 वर्ष), निवासी राजपूत कॉलोनी विदिशा, के कब्जे से दो थैलों में भरी कुल 300 पाव देशी प्लेन मदिरा (कुल मात्रा 54 बल्क लीटर) बरामद की गई। आरोपी उक्त मदिरा को शुष्क दिवस पर विक्रय करने के उद्देश्य से लाया था। आरोपी के विरुद्ध मध्यप्रदेश आबकारी अधिनियम की धारा 34(2) के तहत प्रकरण कायम कर न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत किया गया, जहां से उसे न्यायिक अभिरक्षा में जेल भेज दिया गया। जब्त की गई मदिरा का बाजार मूल्य लगभग 21,000 रुपये आंका गया है। उक्त कार्रवाई में वृत्त प्रभारी संजय इवने, आबकारी उपनिरीक्षक आर.एस. धाकड़, आबकारी आरक्षक पवन गौर, राहुल राठौर, शिवलाल चिडार, प्रमोद धुर्वे, आशीष कौरव एवं प्रीति परिहार का सराहनीय योगदान रहा। इसी क्रम में एक अन्य कार्रवाई में नरेन्द्र चोकसे पिता मीठूलाल चोकसे, निवासी बरईपुरा विदिशा, को 15 पाव देशी मदिरा मसाला शराब के साथ बरईपुरा क्षेत्र में अवैध रूप से विक्रय करते हुए पकड़ा गया। आरोपी के विरुद्ध मध्यप्रदेश आबकारी अधिनियम की धारा 34(1) के अंतर्गत प्रकरण दर्ज किया गया है। आबकारी विभाग द्वारा अवैध मदिरा के विक्रय, संग्रहण एवं परिवहन के विरुद्ध यह कार्रवाई निरंतर जारी है। प्रशासन ने स्पष्ट किया है कि शुष्क दिवस पर किसी भी प्रकार की अवैध गतिविधि पाए जाने पर सख्त वैधानिक कार्रवाई की जाएगी।

सरसों भी बनी भावांतर योजना का हिस्सा, कृषि वर्ष 2026 में किसानों को मिली बड़ी सौगात

सीहोर (निप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में मध्यप्रदेश सरकार द्वारा वर्ष 2026 को कृषि वर्ष के रूप में मनाए जाने का निर्णय प्रदेश के किसानों के लिए नई उम्मीद और विश्वास लेकर आया है। सरकार लगातार किसानों की आय बढ़ाने और उनकी फसलों को उचित मूल्य दिलाने के उद्देश्य से महत्वपूर्ण फैसले ले रही है। इसी क्रम में हाल ही में प्रदेश सरकार ने सरसों की फसल को भी भावांतर भुगतान योजना में शामिल करने का निर्णय लेकर किसानों को बड़ी राहत प्रदान की है। इससे पहले सोयाबीन फसल पर भावांतर योजना का लाभ दिलाकर सरकार ने किसानों के हित संरक्षण की अपनी प्रतिबद्धता को साबित किया था, वहीं अब सरसों उत्पादक किसानों को भी इस योजना से जोड़ा जाना कृषि क्षेत्र के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है। प्रदेश सरकार के इस निर्णय से खासतौर पर रबी सीजन में सरसों की खेती करने वाले किसानों में उत्साह और संतोष का वातावरण देखा जा रहा है। किसानों का कहना है कि बाजार में कीमतों के उतार-चढ़ाव के कारण उन्हें अक्सर आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता था, लेकिन भावांतर योजना के माध्यम से अब उन्हें न्यूनतम मूल्य की सुरक्षा मिल सकेगी। सीहोर जिले के ग्राम मगरखेड़ा निवासी सरसों उत्पादक किसान श्री भानूप्रताप मेवाड़ा ने मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि प्रदेश सरकार किसानों की वास्तविक समस्याओं को समझते हुए लगातार निर्णय ले रही है। उन्होंने बताया कि सरसों को भावांतर योजना में शामिल किया जाना किसानों को उचित दाम दिलाने वाला फैसला है, जिससे खेती को मजबूती मिलेगी और किसानों का आत्मविश्वास भी बढ़ेगा। किसानों का मानना है कि वर्ष 2026 को कृषि वर्ष घोषित करना केवल एक औपचारिक घोषणा नहीं बल्कि कृषि को केंद्र में रखकर विकास की नई दिशा तय करने का प्रयास है। सिंचाई, फसल संरक्षण, समर्थन मूल्य और बाजार सुरक्षा जैसे विषयों पर सरकार की सक्रियता से खेती लाभकारी बनने की ओर अग्रसर है। किसान श्री भानूप्रताप मेवाड़ा ने कहा कि प्रदेश सरकार खेती को घाटे का सौदा नहीं बल्कि सम्मानजनक और लाभकारी व्यवसाय बनाने की दिशा में लगातार कार्य कर रही है।

बाल देखरेख एवं संरक्षण में हितधारकों की भूमिका पर कार्यशाला सम्पन्न

बैतूल (निप्र)। बाल संरक्षण व्यवस्था को अधिक प्रभावी एवं समन्वित बनाने के उद्देश्य से 28 फरवरी को पुलिस कंट्रोल रूम सभाकक्ष में अंतर्गत हितधारकों की भूमिका विषयक कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में पुलिस अधीक्षक श्री वीरेन्द्र कुमार जैन मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। कार्यशाला में श्री कृपा शंकर चौबे सदस्य किशोर न्याय बोर्ड भोपाल एवं सदस्य राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग घर पोर्टल द्वारा मास्टर टैनर के रूप में प्रशिक्षण प्रदान किया। उन्होंने बाल संरक्षण तंत्र की कार्यप्रणाली, विभिन्न विभागों के मध्य समन्वय तथा संवेदनशील दृष्टिकोण के महत्व पर विस्तार से जानकारी दी। प्रशिक्षण के दौरान जे.जे. एक्ट एवं पॉक्सो एक्ट के प्रावधानों की जानकारी दी गई। साथ ही पॉक्सो प्रकरणों में 'सपोर्ट पर्सन'की भूमिका, पीड़ित बच्चों को मानसिक एवं कानूनी सहायता उपलब्ध कराने की प्रक्रिया तथा प्रकरणों के समयबद्ध निराकरण पर विशेष जोर दिया गया। कार्यशाला में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्रीमती कमला जोशी, महिला एवं बाल विकास विभाग के जिला कार्यक्रम अधिकारी श्री गौतम अधिकारी, उपपुलिस अधीक्षक बैतूल श्री सुनिल लाटा, बाल कल्याण समिति बैतूल के अध्यक्ष श्री अभिषेक जैन, किशोर न्याय बोर्ड के अशासकीय सदस्य, पुलिस विभाग से सभी थानों से बाल कल्याण पुलिस अधिकारी, प्रशासक वन स्टॉप सेंटर बैतूल, समस्त परियोजना अधिकारी महिला एवं बाल विकास, जिला स्वास्थ्य अधिकारी, श्रम निरीक्षक, जिला विधि सेवा सहायता अधिकारी, सपोर्ट पर्सन एवं जिला बाल संरक्षण इकाई बैतूल के सभी अधिकारी, कर्मचारी उपस्थित थे। कार्यशाला के माध्यम से सभी संबंधित विभागों के बीच बेहतर समन्वय स्थापित कर बच्चों के अधिकारों की प्रभावी सुरक्षा एवं संरक्षण सुनिश्चित करने का संकल्प लिया गया।

राइट क्लिक

क्या राज्यसभा जाना सियासी मोक्ष से पहले 'गंगा स्नान' की तरह है?

अजय बोकिल

लेखक सुबह सवेरे के कार्यकारी प्रधान संपादक हैं।
संपर्क-
9893699939
ajaybokil@gmail.com

क्या राज्यसभा जाना भारत में राजनेताओं के लिए राजनीतिक मोक्ष से पहले 'गंगा स्नान' की तरह है? यह सवाल इसलिए उठ रहा है कि इधर लगभग 20 साल से बिहार के मुख्यमंत्री रहे नीतीश कुमार राज्यसभा जा अथवा भिजवाए जा रहे हैं तो उधर महाराष्ट्र के वयोवृद्ध नेता शरद पवार फिर से राज्यसभा (यानी राज्यों की परिषद) जाने के लिए तैयार बैठे हैं। राज्यसभा के लिए नामांकन भरने से पहले नीतीश ने अपने (?) सोशल मीडिया पोस्ट में कहा कि उनकी (अंतिम) दिल्ली इच्छा अब उच्च सदन जाने की है, बाकी सत्ता सुख वो भोग ही चुके हैं। जबकि शरद पवार जो अब बगैर सहारे के चल भी नहीं पाते, देश के ऊपरी सदन में कानून निर्माण में अपनी भूमिका निभाते रहना चाहते हैं। जहां तक नीतीश कुमार की बात है तो भाजपा उन्हें बिहार से बाहर करने की तजवीज तो बरसों से करती रही है, लेकिन लगता है दांव अब लगा है। नीतीश के भाजपा के दबाव में बिहार की सत्ता छोड़ने के पीछे कारण यह प्रचारित किया जाता रहा है और जो काफी हद तक सही भी है, कि उनका मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य ठीक नहीं है, लिहाजा उनके लिए राज्यसभा से बेहतर कोई आश्रयस्थल नहीं है।

नीतीश कुमार को बिहार से क्यों हटाया जा रहा है या फिर वो स्वयं राजनीतिक वानप्रस्थ अंगीकार कर रहे हैं, इन सवालों को अलग रखें तो भी प्रश्न यह बचता है कि इस तरह राज्यसभा जाने का व्यामोह पालने के पीछे नेताओं का मकसद क्या है? जनता की सेवा, नीति नियंता के रूप में अहम भूमिका निभानाय या फिर सुरक्षित पनाहगाह अटकाना? क्योंकि राज्यसभा के लिए अब ज्यादातर नाम जिन पैमानों और तकाजों पर तय होते हैं, उसका आधार केवल तुष्टिकरण, संतुष्टिकरण और समायोजन ज्यादा दिखाई पड़ता है।

गौरतलब है कि भारतीय लोकतंत्र में द्वि सदनीय व्यवस्था बनाने के पीछे संविधान निर्माताओं का पवित्र उद्देश्य यही था कि केवल निर्वाचित प्रतिनिधियों को ही अमर्यादित अधिकार न दिए जाएं, राज्यसभा के रूप में उन पर अपेक्षाकृत प्रगल्भ और समग्रता में सोचने वाले प्रतिनिधियों का अंकुश रहे। केवल चुनावी राजनीति के बजाय वो गुण दोषों के आधार पर राष्ट्र और समाजहित में ज्यादा सोंचे। इनमें वो लोग भी हों, जो चुनाव भले न जीत सकते हों, लेकिन अपने विषयों के प्रतिष्ठित विद्वान हों। लेकिन अब राज्यसभा केवल वृद्धों और चुनाव जीतने में अक्षम नेताओं को संसद में भेजने, अपनों को उपकृत करने, सत्ता के जोड़-तोड़ का गणित बिठाने, जातीय और क्षेत्रीय समीकरण साधने और राजनीतिक रूप से उपेक्षित अथवा पराजित नेताओं के पुनर्वास का केन्द्र ज्यादा बनती जा रही है। गौरतलब है कि राज्यसभा की वर्तमान में कुल सदस्य संख्या 245 है। इनमें से 233 सदस्य देश के विभिन्न राज्यों की विधानसभाओंके विधायक चुनकर भेजते हैं। इन सदस्यों की संख्या विधानसभा में दलवार निर्वाचित सदस्यों की संख्या के हिसाब से तय होती है। 12 सदस्य राष्ट्रपति द्वारा नामजद होते हैं। मोटे तौर पर नामजद प्रतिनिधियों को केन्द्र में सत्तारूढ़ दल का प्रसाद माना जाता है। यूं लोकसभा का महत्व राज्यसभा से ज्यादा इसलिए है, क्योंकि वह जनता से सीधे शक्ति पाता है। लेकिन राज्य सभा के पास कुछ विशेष शक्तियां भी हैं। मसलन संसद सामान्य परिस्थितियों में राज्य सूची में रखे गए मामले पर कानून नहीं बना सकती है। लेकिन यदि राज्य सभा उपस्थित और मतदान करने वाले सदस्यों के कम से कम दो-तिहाई बहुमत से यह कहते हुए एक प्रस्ताव पारित करती है कि कोई मुद्दा 'राष्ट्रीय हित में आवश्यक या समीचीन' है कि संसद को राज्य सूची में सूचीबद्ध मामले पर एक कानून बनाना चाहिए।

लेकिन यहां मुद्दा राज्यसभा के लिए लोगों के चयन का है। नीतीश कुमार को राज्यसभा इस अघोषित बिना पर भेजा जा रहा है कि वो अब सीएम जैसे अहम पद की जिम्मेदारी वहन करने में सक्षम नहीं हैं। बुढ़ापा उनके आभामंडल पर हावी हो रहा है। पिछले विस चुनाव के बाद 10 वीं बार सीएम पद की शपथ लेते समय उनका गड़बड़ाना, भूल जाना और सार्वजनिक रूप से ऐसा आचरण जो शालीनता और सभ्यता के दायरे में नहीं आता आदि की वजह से नीतीश को बिहार से हटाया जा रहा है। और उनके जाने से राजगद्दी भाजपा को मिलेगी, यह तय है। यूं सार्वजनिक रूप से नीतीश ने अपने राज्यसभागमन को अपनी दिली तमन्ना बताया है। लेकिन अब तक अपने कई पट्ठों को राज्यसभा भेजने वाले नीतीश का खुद राज्यसभा जाने की मासूम तमन्ना मर्सिडीज छोड़ मारूति 800 में बैठने की आकांक्षा जैसी लगती है। यह उनकी राजनीतिक असहायता का भी संकेत है। हो सकता है कि अब राज्यसभा ही उनका अंतिम पड़ाव हो। वैसे भी नीतीश सत्ता और भाजपा के मकड़जाल में अब ऐसे उलझ गए हैं कि इस चक्रव्यूह से सुरक्षित निकलने का तरीका यही है कि वो राज्यसभा जाकर विश्राम करें। वो राज्यसभा में जाकर भी क्या करेंगे, इसकी कल्पना की जा सकती है। हालांकि कुछ लोगों का मानना है कि नीतीश कुमार की इससे बेहतर विदाई हो सकती थी। इन हालात में कैसे होती, इसका जवाब किसी के पास नहीं है। एक मजे की बात और है। नीतीश की इस 'विदाई' पर केन्द्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने बिहार के विकास और सुशासन में नीतीश के योगदान की खुलेमन से तारीफ की। जबकि केन्द्र सरकार के नीति आयोग के आंकड़े बताते हैं कि विकास के सूचकांकों (2024) पर आज भी बिहार देश के राज्यों में सबसे निचली पायदान पर है। जबकि नीतीश के साथ साथ ज्यादातर समय भाजपा ही सत्ता में साझीदार रही है। आयोग ने केवल एक मामले में जरूर बिहार की तारीफ की है, और वो है गुणवत्तापूर्ण व्यय के मामले में बिहार का अच्छा स्कोर।

उधर शरद पवार 86 साल की उम्र में विपक्षी पार्टियों की मदद से तीसरी बार राज्यसभा जाने को बेताब हैं। वो अभी भी विपक्ष की राजनीति करते रहना चाहते हैं और नेतृत्व की छड़ी किसी दूसरे को सौंपने के बारे में सोचना भी नहीं चाहते। हालांकि पवार 12 सालों से राज्यसभा में हैं, वहां उन्होंने महाराष्ट्र अथवा राष्ट्रहित में क्या किया, यह सवाल न ही पूछा जाए तो अच्छा है।

यूं भी राज्यसभा जाने के इच्छुकों की संख्या कम नहीं है। इनमें बड़ी संख्या उन नेताओं की है, जिसे आम बोलचाल में हरिभजन की उम्र कहते हैं। मसलन 93 साल के एच.डी.देवेगौड़ा इसी साल राज्यसभा से रिटायर होने वाले हैं। वो अब शायद फिर राज्यसभा नहीं जाएंगे। जाते तो एक और पूर्व राज्यसभा सदस्य राम जेठमलानी रिकॉर्ड तोड़ते, जो 96 साल की उम्र तक भाजपा के टिकट पर राज्यसभा के सदस्य रहे। उनके बाद मणिपुर के रिशांग किशिंग का नंबर हैं, जिन्होंने 94 साल की उम्र में खुद ही राज्यसभा से रिटायरमेंट लेकर देश पर रहम किया। ऐसे में कुछ लोग मजाक में राज्यसभा को 'राजनीतिक वृद्धाश्रम' कहने लगे हैं और यह काफी हद तक सच भी है। उपलब्ध आंकड़ों देखें तो जुलाई 2024 तक राज्यसभा के 70 सदस्यों की औसत आयु 61 से 70 के बीच, 36 सदस्यों की उम्र 71 से 80 के बीच और 7 सदस्य ऐसे थे, जिनकी उमर 80 के ऊपर थी। इन सबकी कुल संख्या सदस्यों का लगभग 40 फीसदी होती है। अब सवाल यह कि राजनेताओं का राज्यसभा जाने का मोह आखिर क्यों नहीं छूटता? क्योंकि यह सियासी हसरतों को पूरा करने का शर्तिया शॉर्टकट है इसलिए। इसका पहला कारण तो यह कि राज्यसभा में 6 साल (अगर पूर्ण काल के लिए जाएं तो) राजनीतिक सुरक्षा की सौ फीसदी गारंटी है। बाकी सुख-सुविधाएं और पेंशन लोकसभा सांसदों के समान ही मिलती हैं, सियासी जलवा बना भी रहता है, लेकिन सियासी टेंशन न्यूनतम होता है। सत्ता में भी भागीदारी मिल जाती है। लोकसभा सांसद को फिर भी चुनाव में अपना रिपोर्ट कार्ड देना पड़ता है। लेकिन राज्यसभा में अन्य योग्यताएं ज्यादा मायने रखती हैं। अगर आप वकील आदि हैं तो राजनेताओं को उनकी जरूरत पड़ती ही है। राज्यसभा जाकर वो अपनी पेशे के साथ-साथ पार्ट टाइम राजनीति भी करते रहते हैं। इसे चाहें तो पार्ट टाइम जन सेवा और पार्ट टाइम आराम भी कह सकते हैं।

प्रदेश में गेहूं किसानों के लिए खुशखबरी...

गेहूं पर 40, उड़द पर 600 रूपये बोनस देगी सरकार

सीएम ने गेहूं खरीदी के पंजीयन के लिए 10 मार्च तक तारीख बढ़ाई

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि राज्य सरकार किसान कल्याण के लिए समर्पित भाव से काम कर रही है। मुख्यमंत्री ने भारतीय किसान संघ के प्रतिनिधियों के साथ चर्चा के बाद किसानों के हित में कई महत्वपूर्ण फैसलों की घोषणा की है।

40 रू. प्रति क्विंटल गेहूं पर मिलेगा बोनस- सीएम ने कहा कि इस साल प्रदेश में गेहूं खरीदी पर किसानों को 40 रू. प्रति क्विंटल बोनस दिया जाएगा। इसके साथ ही गेहूं खरीदी के लिए पंजीयन की अंतिम तिथि 7 मार्च से बढ़ाकर 10 मार्च कर दी गई है, ताकि अधिक से अधिक किसान पंजीयन कर सकें।

उड़द पर 600 प्रति क्विंटल बोनस- मुख्यमंत्री ने उड़द की खेती को प्रोत्साहन देने के लिए भी घोषणा की। उन्होंने कहा कि उड़द खरीदी पर किसानों को 600 प्रति क्विंटल बोनस दिया जाएगा। सरकार चाहती है कि किसान उड़द की खेती बढ़ाएं, ताकि उन्हें बोनस का लाभ मिल सके और अगली फसल की तैयारी भी बेहतर तरीके से हो सके।

डॉ. यादव ने यह भी कहा कि किसानों

की सुविधा के लिए सिंचाई के लिए दिन के समय बिजली उपलब्ध कराई जाएगी। इससे किसानों को रात में सिंचाई के दौरान होने वाली परेशानियों और दुर्घटनाओं के जोखिम से राहत मिलेगी।

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार किसानों की आय बढ़ाने और खेती को अधिक लाभकारी बनाने के लिए लगातार निर्णय ले रही है और आगे भी किसान हित में कदम उठाए जाते रहेंगे। सीएम ने गेहूं खरीदी पर 40 रुपए प्रति क्विंटल बोनस और उड़द खरीदी पर 600 रुपए प्रति क्विंटल बोनस देने की घोषणा की है।

पीएम किसान सम्मान निधि से सालाना 12 हजार की सहायता- केंद्र सरकार प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि के तहत किसानों को सालाना 6 हजार रुपए देती है। मध्य प्रदेश सरकार की ओर से भी 6 हजार रुपए दिए जाते हैं। इस तरह पात्र किसानों को कुल 12 हजार रुपए सालाना सीधे खाते में मिलते हैं।

सब्सिडी, बीमा और सस्ते ऋण की सुविधा

इसके अलावा किसानों को खाद पर सब्सिडी, कृषि उपकरणों पर अनुदान, ड्रिप और स्प्रिंकलर सिंचाई पर सब्सिडी, प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के तहत फसल नुकसान पर मुआवजा और किसान क्रेडिट कार्ड के जरिए कम ब्याज पर ऋण जैसी सुविधाएं भी दी जाती हैं।

एमएसपी पर खरीदी- कई फसलों के तय हैं समर्थन मूल्य

सरकार किसानों की फसलों की खरीद न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) पर करती है। वर्तमान में गेहूं का एमएसपी करीब 2585 रुपए प्रति क्विंटल, धान (सामान्य) 2369 रुपए, सोयाबीन 5328 रुपए, उड़द 7400 रुपए, मूंग 8558 रुपए, अरहर 8000 रुपए, चना 5875 रुपए, मसूर 7000 रुपए और सरसों 6200 रुपए प्रति क्विंटल है। प्रदेश में मुख्य रूप से गेहूं, धान, चना, मसूर और सरसों की सरकारी खरीदी की जाती है।

एमएसपी के अलावा राज्य सरकार कई बार फसलों पर बोनस भी देती है। अब सरकार ने गेहूं खरीदी पर 40 रुपए प्रति क्विंटल बोनस और उड़द खरीदी पर 600 रुपए प्रति क्विंटल बोनस देने की घोषणा की है।

भावांतर भुगतान योजना से कीमत का अंतर भरपाई

इसके अलावा भावांतर भुगतान योजना भी लागू है। इस योजना के तहत यदि किसान की फसल मंडी में एमएसपी से कम कीमत पर बिकती है तो सरकार उस अंतर की राशि सीधे किसान के खाते में जमा करती है। यह योजना मुख्य रूप से सोयाबीन और कुछ तिलहन फसलों पर लागू की जाती रही है।

भतीजे-भतीजी को ताऊ ने पीट-पीटकर मार डाला!

10वीं का पेपर देने जा रहे थे दोनों, आखिरी सांस तक मारी लाठियां, आरोपी का घर जलाया

आष्टा (नप्र)। आष्टा के धर्मपुरी में एक शख्स ने अपने छोटे भाई के दो बच्चों की हत्या कर दी। वारदात की वजह पारिवारिक जमीन को लेकर विवाद बताया जा रहा है। घटना से गुस्साए परिजन ने पोस्टमॉर्टम रूम के बाहर कॉन्स्टेबल को पीट दिया।

मामला सिद्दीकगंज थाना इलाके में शुक्रवार सुबह का है। मृतकों के नाम शीतल (20) और कुलदीप (19) बताए गए हैं। आरोप उनके बड़े पिता यानी ताऊ हरिसिंह मालवीय (55) और उसके बेटे हेमंत मालवीय (28) पर है। हत्या का केस दर्ज कर दोनों को राउंडअप किया गया है। दोपहर बाद हरिसिंह के मकान में किसी ने आग लगा दी।

वन भूमि को लेकर चल रहा था विवाद- पुलिस के मुताबिक, हरिसिंह मालवीय और जगदीश मालवीय सगे भाई हैं। उनके बीच वन भूमि पर कब्जे को लेकर कई साल से विवाद चल रहा है। 20 अक्टूबर 2025 को हरिसिंह के बेटे रितेश (23) की सड़क दुर्घटना में मौत हो गई थी। इसके बाद रंजिश और बढ़ गई।

हरिसिंह ने जगदीश की पत्नी सीमाबाई के साथ गाली-गलौज करते हुए जान से मारने की धमकी भी दी थी। इस पर हरिसिंह के खिलाफ केस भी दर्ज किया गया था, जो कोर्ट में विचाराधीन है।

शुक्रवार सुबह शीतल और कुलदीप 10वीं का पेपर देने जा रहे थे। इसी दौरान हरिसिंह और हेमंत ने उन पर लाठी-डंडों से हमला कर दिया। पड़ोसियों ने बीचबचाव किया तो दोनों मौके से भाग निकले। बाद में उन्हें पकड़ लिया गया। परिजन शीतल और कुलदीप को लेकर अस्पताल पहुंचे, जहां डॉक्टर ने उन्हें मृत घोषित कर दिया।

पुलिस की निगरानी में अंतिम संस्कार

बच्चों की हत्या से गुस्साए परिजन ने पोस्टमॉर्टम रूम के बाहर जमकर हंगामा किया। कॉन्स्टेबल से मारपीट की। साथ मौजूद पुलिसकर्मियों ने बीच-बचाव किया। हंगामे की जानकारी मिलते ही आष्टा थाना प्रभारी गिरीश दुबे, पार्वती थाना प्रभारी हरिसिंह परमार फोर्स लेकर पहुंचे।

काफी देर तक समझाइश के बाद मामला शांत कराया जा सका। दोनों शवों का पुलिस की निगरानी में अंतिम संस्कार किया गया।

रातभर लाश के पास बैठा रहा ; बोला- अब पत्नी के प्रेमी को मारने जा रहा हूं

बच्चों के सामने पत्नी को पीट-पीटकर मार डाला

दतिया (नप्र)। मध्य प्रदेश के दतिया जिले में गुरुवार रात एक पति ने अपनी पत्नी की लाठियों से पीट-पीटकर हत्या कर दी। मां को पिटता देख बच्चे पड़ोस में भाग गए। सुबह जब वे घर लौटे तो उनके पिता लाश के पास डंडा लेकर बैठा था। घटना सिविल लाइंस थाना इलाके की है।

जानकारी के मुताबिक, मृतका का नाम आशा आदिवासी है, जो सेंवढ़ा रोड पर एक आदिवासी डेरे में रहती थी। दंपति मजदूरी करके अपने परिवार का पेट पालते थे। आरोपी कालीचरण आदिवासी ने अफेयर के शक में यह वारदात की है।

मृतका के बेटे ने बताया कि गुरुवार रात उसके माता-पिता शराब पी रहे थे। इसी बीच बहस हो गई। बहस इतनी बढ़ गई कि आरोपी ने गुस्से में आकर

अपनी पत्नी पर लाठियों से हमला कर दिया। हमले में महिला गंभीर रूप से घायल हो गई।

इस दौरान, माता-पिता के बीच झगड़ा बढ़ता देख दोनों भाई पड़ोस में सोने चले गए। जब वे सुबह घर लौटे तो उन्हें अपनी मां की डेडबॉडी मिली। पिता हाथ में डंडा लिए वहीं बैठा था। फिर आरोपी ने बच्चों से कहा कि वह पुलिस स्टेशन जा रहा है।

डेडबॉडी को पोस्टमॉर्टम के लिए भेजा- घटनास्थल से भागने के बाद बच्चों ने पड़ोस में हत्या की जानकारी दी। पड़ोसियों ने सिविल लाइंस पुलिस को सूचना दी। सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची। उन्होंने डेडबॉडी को कब्जे में लेकर पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया। पोस्टमॉर्टम के बाद बॉडी परिवार को सौंप दी जाएगी।

प्रेमी को भी मारने जा रहा था आरोपी- इस मामले में एएसपी सुनील कुमार शिवहरे ने बताया कि आरोपी को बस से पकड़ा गया। पूछताछ में आरोपी ने बताया कि उसकी पत्नी का प्रेमी उत्तर प्रदेश के चिरगांव कस्बे के नयाखेड़ा गांव का रहने वाला है।

ग्वालियर में पिला दिया मरी हुई छिपकली वाला पानी

पीएम आवास की पानी की टंकी में मरी हुई छिपकलियां मिलीं, दहशत में 1300 परिवार

ग्वालियर (नप्र)। इंदौर के भागीरथपुरा में दूषित पानी पीने से कई लोगों की मौतों के बीच ग्वालियर में भी पीने के पानी में बड़ी लापरवाही सामने आई है। मानपुर क्षेत्र में प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत बने फ्लैटों की पानी की टंकी में मरी हुई पांच छिपकलियां मिलीं हैं। टंकी से करीब 1300 फ्लैटों में रहने वाले 5 हजार लोगों को पानी की सप्लाई की जाती है।

पानी की टंकी में मरी छिपकली मिलने से रहवासी भड़क गए हैं। नगर निगम पर गंभीर लापरवाही का आरोप लगा रहे हैं। लोगों का कहना है कि टंकी की नियमित सफाई नहीं हुई। ढक्कन ठीक से बंद न रहने से छिपकली गिरकर मरीं। क्या नगर निगम के अफसर भागीरथपुरा बनाना चाहते हैं।

टंकी का ढक्कन खोलने पर मरी छिपकलियां मिलीं- स्थानीय लोगों का कहना है कि फेस-वन में ब्लॉक ई-52 की पानी की टंकी से आने वाले पानी की क्वॉलिटी पर शक हो रहा था। पानी में बदबू और गंदगी महसूस होने के बाद कुछ लोगों ने टंकी की जांच की। टंकी का ढक्कन खोला तो अंदर मरी हुई छिपकलियां पड़ी हुई थीं।

इसके बाद लोगों ने टंकी से उन्हें बाहर निकाला। पूरे घटनाक्रम का वीडियो भी बना लिया। यह वीडियो अब सोशल मीडिया पर भी सामने आया है। टंकी में छिपकलियां मिलने की खबर फैलते ही परिसर में दहशत का माहौल बन गया। लोगों को डर है कि कई दिनों से यह पानी उनके घरों में सप्लाई हो रहा था। संभव है कि वे अनजाने में दूषित पानी पी चुके हों।

छिपकली मिलने के बाद रहवासी टंकी के पानी से परहेज कर रहे हैं और कई लोग आरओ का पानी मंगा रहे हैं। कॉलोनी के अनिक राभास नीलकमल मुदगल ने मीडिया को बताया कि गुरुवार को पानी की टंकी देखने के लिए छत पर चढ़े थे। उन्हें टंकी में मरी हुई छिपकलियां मिलीं, जिन्हें वे किसी तरह बाहर

निकाले। घटना का वीडियो भी बनाया।

अनिक राभास नीलकमल मुदगल ने बताया कि कॉलोनी की हालत बहुत खराब है। कोई सुनता नहीं है। उन्होंने सभी अधिकारियों को अर्जी दी है, लेकिन लोग उनकी नहीं सुन रहे हैं। कोई स्टाफ नहीं आता, न ही काफी सफाई कर्मचारी हैं। महीनों तक कचरा नहीं उठाया जाता।

डर से आरओ का पानी मंगाने लगे रहवासी

रहवासियों का कहना है कि अधिकांश परिवारों के घरों में आरओ या अन्य फिल्टर सिस्टम नहीं है। वे सीधे टंकी से आने वाले पानी का उपयोग पीने और खाना बनाने के लिए करते हैं। लोगों में स्वास्थ्य को लेकर चिंता और नाराजगी दोनों बढ़ गई हैं। कई परिवारों ने फिलहाल टंकी का पानी पीना बंद कर दिया है। बाहर से कैन या आरओ का पानी मंगाने लगे हैं।

2 साल से नहीं हुई नियमित सफाई

फ्लैटों में रहने वाले लोगों का आरोप है कि पिछले दो साल से वे यहां रह रहे हैं। छत पर बनी पानी की टंकी की नियमित सफाई नगर निगम नहीं करा रहा है। कई बार उन्होंने शिकायत भी दर्ज कराई, लेकिन जिम्मेदार अधिकारियों ने इसे गंभीरता से नहीं लिया। कुछ रहवासियों का कहना है कि टंकी के ढक्कन की स्थिति भी ठीक नहीं है, जिससे बाहर से कीड़े-मकोड़े या अन्य जीव अंदर गिर सकते हैं। उनका आरोप है कि अगर समय पर टंकी की सफाई और रखरखाव किया जाता तो ऐसी स्थिति पैदा ही नहीं होती।

अधिकारियों से मुलाकात के बाद भी नहीं हुई कार्रवाई

बताया जा रहा है कि हाल ही में कॉलोनी के कुछ प्रतिनिधियों ने इस समस्या को लेकर नगर निगम के अधिकारियों से मुलाकात भी की थी। उस समय अधिकारियों ने टंकियों की सफाई और व्यवस्था सुधारने का आश्वासन दिया था, लेकिन जमीनी स्तर पर कोई ठोस कार्रवाई नहीं हुई।

ठेका खत्म होने के बाद भी नहीं निकाला नया टेंडर

मामले को लेकर नगर निगम आयुक्त संघ प्रिया ने कहा कि यह घटना दुर्भाग्यपूर्ण है। उन्होंने बताया कि इंदौर में हुई घटना के बाद ग्वालियर में भी टंकियों की सफाई कराई गई थी और उन्हें ढकने की व्यवस्था की गई थी। जिस ठेकेदार को यह काम दिया गया था, उसका ठेका समाप्त हो चुका है। जल्द ही रहवासियों से चर्चा कर पानी की सप्लाई और टंकियों की देखरेख के लिए स्थायी व्यवस्था बनाई जाएगी।

बड़ा तालाब का सीमांकन शुरू, बेहटा में विरोध

लाउखेड़ी-बोरवन भी पहुंची टीमें ; एफटीएल को लेकर नोंक-झोंक

भोपाल (नप्र)। पांच दिन के ब्रेक के बाद भोपाल के बड़ा तालाब किनारे फिर से सीमांकन शुरू हुआ। बैरागढ़ तहसील की टीम लाउखेड़ी, बोरवन और बेहटा पहुंची। बेहटा में एफटीएल के पाइंट और सीमांकन को लेकर लोगों ने टीम से नोंकझोंक की। वहीं, अशब्द भी कहे। चार घंटे चली कार्रवाई में 50 मीटर के दायरे में 100 से ज्यादा अतिक्रमण मिले। शुक्रवार को भी टीम मैदान में उतरेगी।

आखिरी कार्रवाई 28 फरवरी को की थी। हलालपुरा के आसपास तालाब किनारे एक गार्डन की बाउंड्रीवॉल के साथ गोदाम भी तोड़ दिया था। इसके बाद होली के चलते कार्रवाई धीमी पड़ी, जिसने गुरुवार को फिर रफ्तार पकड़ी। जिला प्रशासन, नगर निगम की संयुक्त टीम ने ग्राम लाउखेड़ी, बोरवन बैरागढ़ और बेहटा क्षेत्र में सीमांकन किया। यहां तालाब के 50 मीटर के दायरे का चिंहित किया गया।

बूढ़ागांव और बेहटा में मिली झुग्गियां

सीमांकन के दौरान बोरवन गांव की बूढ़ागांव झुग्गी बस्ती और बेहटा की झुग्गी बस्ती में सर्वे में अतिक्रमण मिला। यहां तालाब के 50 मीटर के दायरे में करीब 100 झुग्गियां आ रही हैं। इन झुग्गियों को चिन्हित करने के लिए टीम ने मौके पर लाल निशान लगाए। जिला प्रशासन और नगर निगम की टीम आगे भी अन्य क्षेत्रों में सीमांकन की कार्रवाई जारी रखेगी। इससे तालाब के आसपास के अतिक्रमण और निर्माण की स्थिति स्पष्ट हो सकेगी।

अच्छे घर बने हैं, लेकिन निगम बर्बाद कर रहा

राजेंद्र शर्मा ने बताया कि यहां प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत बिल्डिंग बनी है। अच्छे घर भी बने हैं, लेकिन निगम उन्हें बर्बाद कर रहा है। कोई अधिकारी या कर्मचारी नहीं सुनता। विकास तोमर ने बताया कि पिछले महीने उन्होंने नगर निगम और ग्वालियर कलेक्टर को अर्जी दी थी। इसके बाद सिर्फ दो टैंकों की सफाई हुई, जबकि 45 से ज्यादा टैंक अभी भी गंदे पड़े हैं। यहां के लोग उन्हीं गंदे टैंकों से आने वाला पानी इस्तेमाल करते हैं, जिससे वे बीमार भी पड़ रहे हैं।